खिलाफ वोट करती नजर आयी। तो फिर रविन्द्र यादव को यादव होने या फिर यादव वोटों पर घमंड क्यों नहीं होगा। कई बार वे कह चुके हैं कि हमारा 80000 यादव वोटर है।

गौरतलब है कि झाझा के भाजपा विधायक डॉ0 रविन्द्र यादव का भतिजा संजय यादव झाझा नगर पंचायत का उपाध्यक्ष हैं जो वर्तमान कोरोना महामारी का नियंत्रण को लेकर छिड़काव का प्रबंध कर रहे थे। वहीं झाझा न0प0 वार्ड न0 13 निवासी निरंजन पासवान झाझा प्रखंड जदयू मीडिया सेल के संयोजक हैं। जदयू मीडिया सेल के संयोजक होने के नाते निरंजन जदयू और दामोदर रावत का प्रचार-प्रसार संबंधित पोस्ट अपने सोशल मीडिया एकाउंट पर हमेशा करते रहे हैं। 2 अप्रैल को छिड़काव के दौरान कुछ तो हुआ इसी दौरान रात्रि 8 बजे के करीब विधायक आवास के समीप निरंजन पासवान के साथ बेरहमी से मार-पीट किया गया जिसका सीसीटीवी फुटेज भी वायरल है। इसमें निरंजन पासवान का बदन पर का गंजी फटा हुआ है और कई लोग निरंजन को पकड़ कर ले जा रहे हैं। इस फुटेज में भाजपा विधायक रविन्द्र यादव के दबंग भतीजे गुड्डू यादव भी दिखाई दे रहे हैं। गुड्डू यादव का आपराधिक इतिहास रहा है। झाझा थाने में इसके खिलाफ 13 संगीन मामले दर्ज है। निरंजन के साथ हुए मारपीट के बाद दोनो पक्ष झाझा थाने पहुँचे। निरंजन पासवान पक्ष का नेतृत्व पूर्व मंत्री और वर्तमान जदयू जिलाध्यक्ष दामोदर रावत कर रहे थे तो अपने भतीजे के पक्ष का नेतृत्व वर्तमान भाजपा विधायक डॉ रविन्द्र यादव। दोनो धुर विरोधी और गठबंधन के नेता घंटे भर झाझा थाने में डटे रहे। दोनों तरफ से एफआईआर किया गया। पूर्व मंत्री और जदयू जिलाध्यक्ष अपने कार्यकर्त्ता निरंजन पासवान के पक्ष में जिलाधिकारी से लेकर आरक्षी अधीक्षक और मुख्यॅमंत्री तक को लिख चुके हैं जिसमें विधायक के भतीजे के उपर हुए कई आरोप थाना में दर्ज है का जिक्र है तो वहीं भाजपा विधायक डॉ0 रविन्द्र यादव अपने दबंग भतीजे के पक्ष में मीडिया में प्रेस विज्ञप्ति डाल रहे हैं। गौरतलव है कि निरंजन पासवान पिता रामाधार पासवान द्वारा थाने में दिये गये एफआइआर में लिखा गया है कि रात्रि 8 बजे जब मैं दवा लाने गये थे तो गुड्डू यादव उर्फ राजीव यादव संजय यादव पिता स्व0 अरविन्द यादव, नितेश माथुरी सितेश माथुरी पिता भूषण माथुरी समेत अन्य सभी ने मिलकर जाति सूचक शब्दों का प्रयोग करते हुए मुंह पर थुक दिया तथा नरेटी दबाकर मारा-पीटा। इस मामले में केश संख्यां झाझा थाना में 103/20 दर्ज है जिसमें धारा 307 समेत हरिजन एक्ट जैसे संगीन धाराएं लगाई गई है तो वहीं नगर परिषद् उपाध्यक्ष संजय यादव ने झाझा थाना केश संख्या 104/20 में यह आरोप लगाया है कि कोरोना महामारी से बचाव हेतू न0प0 कर्मी राजकुमार व मो0 वसीम आदी छिड़काव करने पीपराडीह में गये थे तभी मुन्ना पासवान उर्फ निरंजन पासवान तथा दो अज्ञात शराब के नशें के हालात में गाली-गलौज करते हुए काम बंद करा दिया और सरकारी कार्य में बाधा डाला। शाम में पुन: मेरे चाचा विधायक जी के आवास के सामने से गाली-गलौज करते हुए आ रहा था। उसने मुझे तथा विपीन साव जो न0प0 अध्यक्ष के पति हैं को जान मारने की धमकी देते हुए गाली-गलौज किया। इसी दरम्यान इसे पकड़ कर पुलिस के हवाले कर दिया। एफआईआर में न0प0 द्वारा काम करने के एवज में 3000 रू0 रंगदारी का भी आरोप लगाया गया

दामोदर रावत षड्यंत्र कर रहे हैं : रविन्द्र

✯ सर मामला क्या है?

कुछ नहीं जो बदमाशी करेगा मार खाएगा ही। हमरे घर के आस-पास 100 परिवार है जिससे हमारा पारिवारिक संबंध है। जिसको रोज हम सहयोग करते रहते हैं। आपके घर पर यदि कोई गाली-गलौज और धमकी देगा तो क्या आपका शुभचितक पड़ोसी चुप रहेगा। हमरे घर के बगल में हमरे साथ बदमाशी करेगा तो लात-जुता खाएगा ही। इ लोग तो दामोदर रावत का लठैत है। इ दामोदर रावत का पेट्रोल पंप का कर्मचारी है। दामोदर रावत हमेशा ही षड्यंत्र रचते रहता है। एक पासवान जाति को थानाप्रभारी से मिलीभगत करके हमरे परिवार के विरूद्ध खड़ा कर हमारे परिवार को बदनाम कर रहा है।

✯ आखिर इस मामले में आपके गठबंधन के जदयू जिलाध्यक्ष का विरोध क्यो?

कोई गठबंधन नहीं जो गलत है वो गलत है। मंजू वर्मा को नीतिश कुमार पार्टी से निकाला कि नहीं। हम तो पालन कर रहे हैं नीतिश कुमार के संदेश को जन-जन तक पहुँचा रहे हैं। दामोदर रावत हमरे से भारी मतों से हारने के बाद से ही बौखलाए हुए हैं। नीतिश कुमार का धौस देकर कुछ भी सही गलत करवाते रहते हैं।

✯ आप इतने बड़े नेता के परिवार से हैं आखिर आपके परिवार के लोगों पर अपराध का इतना मामला दर्ज क्यों है?

क्या दर्ज है चोरी-छिनरपन का आप ही बता दीजिए। सुनना है तो सुनिए। मेरा भतीजा पतंजली का काम करता है और वह शुद्व व्यवसायी है। इनपर मात्र तीन मुकदमा चल रहा है वाकी सब न्यायालय से दोष मुक्त हो गया है या फिर थाने से असत्य करार दिया जा चुका है। रही मेरी बात तो मेरे उपर आज तक एक सनहा तक दर्ज नहीं है। जबकि दामोदर रावत पर जियाउद्दीन अंसारी का घर-जमीन हड़पने का आरोप है। पेट्रोल पंप हड़प लिए हैं।

✯ क्या लग रहा है इस बार झाझा विधानसभा क्षेत्र से भाजपा का उम्मीदवार होगा या जदयू का?

ई क्या पुछ रहे हैं आप। हम सीटिंग कंडिडेट हैं। पूर्व में ही यह घोषणा हो चुकी है। हम तीन बार विधायक रह चुके हैं। हमारे पिताजी विधायक बनने के बाद आजीवन विधायक रहे हैं। 1990 में हम राजद से धोखा से 250 वोटों से हार गये थे। शिवनंदन झा को 16000 वोटों से हराये थे हम। दामोदर का औकात नहीं है सीट हड़पने का।

है।

झाझा थानाध्यक्ष सिधेश्वर पासवान बताते हैं कि कानून का राज है यहाँ एक ही व्यक्ति का राज चलेगा ऐसा कैसे हो सकता है। गुड्डू यादव पर तो पूर्व से कई मामले दर्ज हैं। ऐसा नहीं है कि संजय यादव पर मामला दर्ज नहीं है। एक मामले में तो चार्जशीट भी समर्पित नहीं हुआ है। वैसे एफआईआर तो कोई भी कुछ भी कर सकता है। अनुसंधान चल रहा है। कार्रवाई भी होगी। हमपर भी जातिपक्ष को मदद करने का आरोप लग सकता है। इस संबंध में जब पीड़ित निरंजन पासवान से बात की गई तो वे मामला पूरी तरह से राजनीति से प्रेरित बताते हैं। निरंजन बताते हैं कि मैं प्रखंड जदयू मीडिया सेल का झाझा प्रखंड संयोजक हूँ और मंत्री जी के पेट्रोल पंप पर भी स्टॉक का देखरेख करता हूँ। मैं जदयू और मंत्री दामोदर रावत के पक्ष में सोशल मीडिया में पोस्ट भी करता रहा हूँ। हालांकि हम पूर्व में गुड्डू यादव आदि के साथ में ही रहते थे। पवन राम को हर बार वार्ड पार्षद बनाने में मेरा अहम भूमिका रहा है। निरंजन बताते हैं कि झाझा में कभी गठबंधन रहा ही नहीं है। यहाँ कभी बीजेपी रहा ही नहीं यहाँ तो हमेशा जदयू का विधायक रहा है। रविन्द्र यादव कभी गठबंधन धर्म का

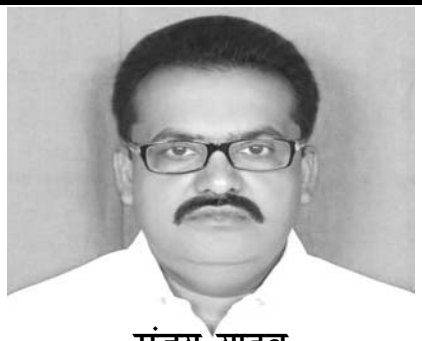

संजय यादव
झाझा नगर उपाध्यक्ष

पालन थोड़े ही करते हैं। इनलोगों ने कभी पूर्व जदयू नगर अध्यक्ष साकेत बंका के साथ भी मारपीट किया। राजकुमार साह को विधायक का बेटा शिवराज यादव सोहजना चौक पर मारा। फिर हमें 20 आदमी मिलकर घेरकर मारा। हम वार्ड पार्षद प्रतिनिधि राहुल कुमार के साथ दवा लाने गये थे। हम बोले थे कि अकेला-अकेली आ जाओ इस पर गुड्डू यादव बोला कि तोरा बेटा छोड़ेगें तो तुम केश कर देगा, तुमको तो मार ही देंगे। तबतक थानाध्यक्ष पहुँच गये और हमे लेकर थाना चले आये। थानाध्यक्ष के सामने गुड्डू यादव बोला कि बच गया इसको तो हम गोली मार देते। वहीं न0प0 झाझा के सफाईकर्मी अब्दुल रसीद बताते हैं कि हमलोग जब वार्ड न0 13 में छिड़काव करने गये थे तो राहुल आदि लोग हमलोगों को गाली-गलौज करते हुए भगा दिया। फिर बाद में हम 20 पैकेट ब्लीचींग पउडर, चूना हम उसे ले जाकर राहूल को दिया। वहीं मो0 वसीम मुमताज ने बताया कि शाम में जब फोंगीग मशीन से राहुल के अनुसार ही हम छिड़काव कर रहे थे तभी तीन-चार लोग शराब के नशे में लाठी-डंडा लेकर हमपर टूट पड़ा। हम न0प0 उपाध्यक्ष संजय जी को यह बात बताया। वहीं नगर परिषद् उपाध्यक्ष संजय यादव बताते हैं कि निरंजन पासवान, राहुल कुमार आदि लोग पूर्व मंत्री दामोदर रावत का लठैत है। निरंजन वगैरह शाम में शराब के नशे में मेरे घर के पास भी गाली-गलौज कर रहा था। आप ग्रामीणों से भी पूछ सकते है। हमलोग तो जान बचा लिये। विधायक जी ही थाना प्रभारी को फोन कर बुलाये और फिर उसे थाना ले जाया गया। थाना में उसका जांच होना चाहिए था कि वह शराब के नशे में था कि नहीं। इस दरम्यान पूर्व मंत्री दामोदर रावत करीब 8.30 बजे से 11.30 तक थाने में रहे और फिर निरंजन पासवान को लेकर जमुई चले गये। ●

ओलावृष्टि से बर्बाद हुए फसलों से किसानों में रोष

● **डॉ० कुंज बिहारी**

मार्च महीने की वर्षा ने किसानों पर आर्थिक स्थिति पर धावा बोल दिया जबकि पूरा देश वैश्विक महामारी से जूझ रहा एक तरफ से प्रकृति का दंश किसानों की फसलों को नहीं छोड़ा किसान मेहनत लगन और परिश्रम कर अच्छी उपज की बाट जोहता है, पर बेईमान मौसम इस बार किसानों को रूठा दिया है। मार्च के महीने बारिश नहीं होती क्योंकि इस समय रंगों की बारिश होती है,लेकिन इसके जगह पर मूसलाधार बारिश हो रही थी खेत, गली, तलाब और सड़कें पानी से भर गए थे। बेमौसम बारिश ने किसानों के होली की खुशी के पर्व को रंग में भंग डालने देने का काम किया। बीते महीने में वर्षा और ओलावृष्टि से सीजन की फसलें जैसे गेहूं, चना, सरसों को जमीन पर सुलाद्यइस वर्षा की मार जिले ही नहीं बल्कि बिहार प्रदेश के कई जिलों में पड़ी। किसानों के लिए सरकार द्वारा चलाए जा रहे हैं कि भी जमुई जिले के साथ सौतेलापन व्यवहार किया। वही खैरा प्रखंड के कैंडीह पंचायत के बल्लोपुर के निवासी जयप्रकाश यादव का कहना है कि 2

एकड़ में गेहूं की बुवाई की गई थी जो असामयिक वर्षा के कारण वर्षा की नमी गेहूं और सरसों की गुणवत्ता को खराब कर दी। वही गोपालपुर गांव के बटेदार किसान महेश राम कहते हैं कि गेहूं और दलहन फसलों की अपेक्षा से कम अन्न प्राप्त हुआ। इस प्रकार देते हैं कि किसान फसल लगाकर कुछ महीने तक फसलों की निगरानी करता है और अच्छी फसल लग जाता है,तो फसल देखकर किसान फूले नहीं समाता है और अन्न को बेचकर रुपए को घर मकान बनाने, शादी ब्याह और बच्चे की पढ़ाई के खर्च के लिए सोचता है। लेकिन प्रकृति के मारने किसानों को अरमानो पर पानी फेर दिया। मौजूदा वक्त को बदलते मौसम कोष्लोबल वार्निंग के विपरीत बदलते रुख का असर पड़ रहा है, इसी कारण आज हमारे यहां तु भी बेमौसम होते जा रहे हैं। कुल मिलाकर देखते हैं तो इस बार बारिश किसानों को पूरी तरह से कमर तोड़कर रख दिया। स्थानीय किसानों का कहना है कि असामयिक वर्षा और ओलावृष्टि के कारण प्रभावित फसल पर मिलनेवाले अनुदान को भी बिहार सरकार जमुई जिले के किसानों को अछूता में रखा गया है, जिससे जिले भर के किसानों में काफी रोष है। ●

सड़क लुटेरा गिरोह गिरफ्तार

● डॉ० कुंज बिहारी

एक बार फिर जमुई के खैरा पुलिस की सक्रियता देखने को मिली जिसमें रोड लूट में शामिल सरगना समेत चार अपराधी पकड़े गये। बताया जाता है कि मात्र एक संदेश में ही खैरा पुलिस ने कुल चार अपराधियों को हथियार के साथ रेड मार कर पकड़ा है। जहाँ अभी सभी तरफ कोरोना महामारी के कारण अपराध में काफी गिरावट देखने को मिल रही है तो वहीं इस अपराध में संलिप्त कार्य के लिए अपराधी को अपराध के बाद में पकड़ कर पुलिस कामयावी का पुल बांध रही है।

गौरतलव है कि जमुई जिला के खैरा थाना क्षेत्र के जितझिगोय गॉव के अमन कुमार सिंह उर्फ छोटू सिंह पिता राजेश कुमार सिंह खैरा बाजार से अपने गांव के तरफ जा रहे थे तो रास्ते में उसका पीछा एक उजला अपाचे मोटरसाईकिल से चार अपराधियों ने किया। इन चारों के पास हथियार था। इसमें से एक अपराधी को अमन ने पहचान लिया था। बताया जाता है कि अपराधियों के चंगुल से छुटने के बाद अमन ने अपना मोटरसाईकिल छोड़ अपने गांव भाग गया। इस दरम्यान उसे चोटें भी आई थी। इसके बाद वह करीब 30-40 ग्रामिणों के साथ रात्रि में ही अपना इलाज कराने खैरा प्रखंड अस्पताल पहुँचा और फिर खैरा थाना को शिकायत की। इसका कांड संख्यां खैरा थाना 109/2020 दर्ज है। खैरा थाना प्रभारी सीपी यादव और जमुई एसडीपीओ ने तत्परता दिखाते हुए कुल चार रोड लुटेरों को गिरफ्तार कर एक अपराधिक संगठन को खत्म करने में कामयाबी हासिल किया है। बताया जाता है कि खैरा से लेकर बटिया जंगल तक में यह संगठन कई लूट को अंजाम दे चुका था। इस संगठन का सरगना नयन कुमार सिंह पिता प्रधुम्न सिंह ग्राम सिंगारपुर को पहले गिरफ्तार किया गया। पुलिस सूत्रों की माने तो नयन कुमार सिंह के निशानदेही पर पुलिस ने चार अन्य अपराधियों तक पहुँचने में कामयाब रही और रोड लुटेरो का एक गिरोह को पकड़ कर जेल के सलाखों में पहुंचा कर एक अध्याय को समाप्त कर दिया। गिरफ्तार अपराधियों में नयन कुमार सिंह के अलावे मानपुर के छोटू कुमार, रायपुरा निवासी सोनू वर्मा, लक्ष्मीपुर के नवकाडीह निवासी सुरेन्द्र मंडल और बांका जिला के शंभूगंज निवासी धीरज कुमार सिंह शामिल है। खैरा थानाध्यक्ष की माने तो इन रोड लुटेरों की तलाश कई महिनों से पुलिस कर रही थी। इन अपराधियों के गिरफ्तारी के बाद रोड लूट में कमी आने की संभावना जताई जा रही है। इन अपराधियों के पास से चार हथियार समेंत एक लूट का मोटरसाईकिल को भी बरामद किया गया है। इन अपराधियों को आईपीसी की धारा 392 के तहत जेल भेज दिया गया है। गौरतलव है कि इससे पूर्व भी जमुई पुलिस बटिया घाटी लूट कांड का उदभेदन करने तथा इसमें शामिल अपराधियों को गिरफ्तार कर बटिया घाटी में होने वाली लूट पर विराम लगाने का दावा करती रही है। जमुई जिले के वटिया घाटी रोड लूट के लिए सबसे ज्यादा सुर्खियों में रहा है। पर आये दिन यहाँ हमेशा लूट की शिकायत आते रहती है। इस उदभेदन के बाद वटिया घाटी लूट कांड में विराम लग जाये। हालांकि हमारे तहकिकात में जो सामने आ रहा है उसमें बटिया घाटी लूट कांड का ज्यादातर अंजाम स्थानीय अपराधियों द्वारा दिया जाता है। यदि बटिया घाटी लूट कोंड पर पुलिस विराम लगाना चाहती है तो स्थानीय अपराधियों को पकड़ना होगा। ●

अभी कलम उठाइये

आपके सामने हो रहे भ्रष्टाचार एवं अपराध की खबर की समीक्षा करें और सरकार सहित पुलिस-प्रशासन तक उसको पहुंचाने के लिए केवल सच पत्रिका के साथ जुड़े। खबर की जानकारी इस नम्बर पर दें

सम्पर्क करें:- 9431073769/9955077308

ई-मेल:- editor.kstimes@rediffmail.com पर भेजें।

पेट्रोलियम मंत्री से गुजारिश

बरौनी रिफाइनरी में बने कोविड अस्पताल

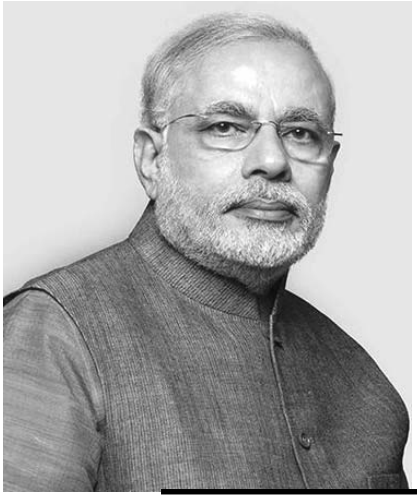

● राजेश राज

पिछले दिनों बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से 100 वेंटीलेटर दिए जाने की मांग रखी, लेकिन क्या ऐसा नही लगता कि बिहार की भौगोलिक और सामाजिक परिस्थिति में सौ वेंटिलेटर ऊंट के मुंह में जीरा का फोरन साबित होंगे । बिहार के 38 जिलों के सभी सदर अस्पतालों में अगर 10-10 वेंटिलेटर की व्यवस्था भी की जाए तो 380 वेंटिलेटर कम से कम होने चाहिए। साथ ही बिहार के तमाम मेडिकल कॉलेज और पटना के बड़े अस्पतालों को भी जांच किट और वेंटिलेटर की दरकार है। बिहार में ग्रामीण इलाकों में न कायदे से आइसोलेशन सेंटर बन रहे है, ना कोरोंटाइन किया जा रहा है। साधारण प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र की तो बात छोड़िए, रेफरल अस्पताल और सदर अस्पताल की हालत नाजुक है । पिछले साल मुजफ्फरपुर में चमकी बुखार में बिहार सरकार के स्वास्थ्य विभाग की व्यवस्था देश देख चुका है। एसकेएमसीएच मुजफ्फरपुर में सैकड़ों बच्चे काल के गाल में समाते रहे और हम कुछ नही कर पाए। चमकी बुखार सिर्फ मुजफ्फरपुर की समस्या है, लेकिन कोरोना एक वैश्विक महामारी है, जिसमें बिहार सरकार की प्लानिंग नगण्य दिखती है। एक मुजफ्फरपुर को संभाल पाना जब इतना कठिन रहा तो फिर बिहार के 38 जिलों के बाशिंदों की रक्षा किसके सहारे होगी? अब सवाल बड़ा मौजू है कि आखिर प्लानिंग इतनी देर से क्यों ?

क्या ऐसा नहीं लगता कि नीतीश जी ने प्रधानमंत्री जी से वेंटिलेटर समेत अन्य सुविधाएं मांगने में बहुत देर कर दी और सवाल यह भी उठता है कि अगर वेंटीलेटर पर्याप्त संख्या में मिल भी जाए तो उसे संचालित करने के लिए विशेषज्ञ डॉक्टरों की टीम जिले स्तर पर बिहार में मौजूद है क्या। क्या ऐसा नहीं लगता कि इसके लिए एक गंभीर योजना पहले होनी चाहिए थी। नीतीश जी पेशे से इंजीनियर हैं । भारत सरकार के कई महकमों की जिम्मेदारी संभाल चुके हैं । बिहार सरकार में 5 बार मुख्यमंत्री रहे हैं । 15 साल से राज्य के वजीरे आला हैं । शासन का लंबा तजुर्बा है उनके पास। फिर प्लानिंग करने में इतनी देर कैसे हो गई मुख्यमंत्री जी ? भारत सरकार से कोआर्डिनेशन करके एक महीने पहले इन तमाम चीजों की जरूरत को समझ जाना चाहिए था । और क्या सिर्फ भारत सरकार के भरोसे ही बिहार सरकार जनता की तकदीर लिखना चाहती है ? बिहार को अपनी व्यवस्था अलग से नहीं चलानी चाहिए क्या? केरल, ओडिशा,यूपी और बंगाल से भी थोड़ा सीखने की जरूरत है। नवीन बाबू क्या सिर्फ केंद्र के भरोसे ही अपनी सियासत चमकाते हैं ? बिहार के ही कई चर्चित नौकरशाहों ने नवीन बाबू के पूरे तंत्र की कमान संभाल रखी है। बिहार के ब्यूरोक्रेट दिल्ली समेत देश भर में आकर बढ़िया काम करते हैं ,जबकि बिहार विकास में फिसड्डी क्यों हो जाते हैं ? क्या इसके लिए सियासी उहापोह जिम्मेदार तो नही है।

नीतीश जी को एनडीए गठबंधन में

सीटों की छीना झपटी करनी होती है तो झटपट दबाब बनाकर 17 सीटें झटक लेते हैं। लेकिन बिहार में कोरोना से लड़ने के लिए उपकरण मांगने में इतनी देर लग गयी? बिहार आने वाले मजदूरों को नीतीश जी बिहार की सीमा में नहीं घुसने देने का एलान करते हैं। ये बयान कोरोना की भयावहता के मद्देनजर ठीक हो सकते हैं लेकिन मानवीय दृष्टिकोण से बयान हैरानी पैदा करते हैं। जिस दुल्हन को मायके में सम्मान नहीं मिलेगा ,उसे भला ससुराल वाले अपनी सर आंखों पर बिठाएंगे क्या ? राज्य के राजा को दिल्ली के मुख्यमंत्री से बातचीत करके तमाम मजदूरों के खाने-पीने की व्यवस्था और दिल्ली में ही उन्हें रोकने की योजना बनानी थी। हालांकि बिहार सूचना केंद्र ने खाने पीने की व्यवस्था बाद में दिल्ली में कई स्थानों पर कर दी। लेकिन तीन दिनों तक बिहार यूपी जाने के नाम पर, जो बबेला खड़ा हुआ। उससे कहीं न कहीं बिहार की छवि खराब हुई है। अब सवाल ये भी उठता है कि आखिर बिहार के लिए बस खुलने की अफवाह किसने उड़ाई ? बुद्धि और साहस में पूरी दुनिया भर में अपना लोहा मनवाने वाले बिहारियों का लोग इस प्रकरण में उपहास उड़ा रहे हैं। मधेपुरा,सहरसा,सुपौल समेत बिहार के दर्जनो जिले ऐसे हैं,जहां आईसीयू और वेंटिलेटर नही हैं। कोसी,सीमांचल,रोहतास ,मिथिलांचल के नेपाल से सटे क्षेत्रों और चंपारण के अंतिम छोर पर बसे वाशिंदों के मन मे भारी भय का माहौल है। इन इलाकों से पटना की दूरी 400 से 500 किलोमीटर के आसपास होगी। अगर उपरोक्त इलाकों में कोरोना का प्रकोप बढ़ता है तो पटना आते आते मरीज की सेहत बिगड़ने के आसार ज्यादा होंगे और खुदा न खास्ता मरीज रास्ते मे दम तोड़ देते हैं,तो फिर बीमारी के फैलने का अनुपात कई गुणा बढ़ सकता है। ग्रामीण स्तर पर जागरूकता का भी बिहार में नितांत अभाव खटकता है और स्वास्थ्य व्यवस्था लगभग चरमराई हुई है। कोरोना से बचाव के लिए जागरूकता के लिए ठोस पहल नही हो पा रही है। कई जिलों से शाम में हाट बाजार में भारी भीड़ की सूचना आती रहती है,जो बिहार में लॉकडाउन की पोल खोल रहा है। वेंटिलेटर और आईसीयू की चिंता पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। लेकिन उससे भी ज्यादा जरूरी है, तमाम निजी नर्सिंग होम को कोरोना मरीज के इलाज सुनिश्चित करने के निर्देश देना। भले ही उसका भुगतान बिहार सरकार को क्यों न करना पड़े। इस मामले में ओडिशा सरकार से बिहार सीख सकता है। ओडिशा ने राज्य के कई बड़े निजी अस्पतालों को टेक ओवर किया है, जिसे

सरकारी सहायता के जरिए संचालित किया जा रहा है। ओडिशा सरकार इस प्रयोग को अब छोटे शहरों तक ले जा रही है ताकि ग्रामीण कोरोना पीड़ितों को भी बेहतरीन सुविधा मुहैया कराई जा सके। कोलकाता में भी कलकत्ता मेडिकल कॉलेज समेत कई अस्पतालों का अधिग्रहण कोरोना अस्पताल के लिए किया गया है । साथ ही कोलकाता के कई स्टेडियम आइसोलेशन सेंटर में तब्दील किए गए हैं। पटना में भी मोइनुल हक स्टेडियम, एन कॉलेज, बीएन कॉलेज, श्रीकृष्ण मेमोरियल हॉल, ज्ञान भवन और बापू सभागार समेत कई बड़े स्थानों को चिन्हित कर आइसोलेशन सेंटर बनाया जा सकता है और आईजीआईएमएस, पीएमसीएच, नालंदा मेडिकल कॉलेज समेत तमाम निजी अस्पतालों को कोरोना अस्पताल में तब्दील कर सकते हैं। बिहार में कई ऐसे साधन संपन्न जिले हैं ,जिन्हें नोडल जिला चिन्हित कर आसपास के 5 जिलों के लिए इलाज की मुकम्मल व्यवस्था की जा सकती है। ऐसा करना बिहार सरकार के लिए चुनौतीपूर्ण है लेकिन बहुत मुश्किल नहीं है। बेगूसराय उत्तर बिहार की औद्योगिक राजधानी है ,जहां पर रिफाइनरी अस्पताल, एचएफसी अस्पताल, रेलवे अस्पताल, एनटीपीसी अस्पताल और सदर अस्पताल समेत कई सरकारी अस्पताल मौजूद हैं, जहां वेंटीलेटर और आईसीयू की सैकड़ों की संख्या में व्यवस्था करके उत्तर बिहार के मरीजों के लिए एक महत्वपूर्ण सेंटर बनाया जा सकता है। बेगूसराय में कई ऐसे निजी नर्सिंग होम हैं, जहां आईसीयू वेंटीलेटर की सुविधा मौजूद है। बिहार सरकार चाहे तो इन निजी नर्सिंग होम या अस्पतालों की सुविधा लेकर अगल-बगल के 15 जिले के लोगों की जान बचाई जा सकती है। बेगूसराय के अग्रसेन मातृ सेवा सदन ने आइसोलेशन वार्ड के लिए अस्पताल की सुविधा जनता के लिए प्रदान कर दी है।

पेट्रोलियम मंत्री धर्मेंद्र प्रधान अगर चाहें तो बेगूसराय के बरौनी रिफाइनरी को सीएसआर फण्ड से 200 बेड के कोविद अस्पताल बनाने के निर्देश दे सकते हैं। राज्य और केंद्र दोनो मिलकर ओडिशा में ये प्रयोग बखूबी कर रहे हैं। बिहार की स्वास्थ्य व्यवस्था की हालत देखकर ऐसे प्रयोग की सख्त जरूरत है,जो न सिर्फ बेगूसराय के लिए बल्कि सम्पूर्ण उत्तर बिहार की जीवन रेखा साबित हो सकते हैं। जमुई, शेखपुरा, लखीसराय, समस्तीपुर, खगड़िया, सहरसा, मधेपुरा, सुपौल, अररिया, कटिहार तक के मरीज सामान्य दिनों में बेहतर इलाज के लिए बेगूसराय आते रहे हैं। अगर उपरोक्त अस्पतालों को एक्टिवेट करा लिया जाए तो इन जिलों के मरीजो को जिंदगी मिल सकती है। लेकिन बिहार सरकार को पुरुषार्थ दिखाना होगा। सत्ता और विपक्ष की दीवार को गिराना होगा,तभी बिहार बचेगा। जब बिहार बचेगा ,तभी न सत्ता और विपक्ष की सियासत होगी। बिहार नहीं बचा तो राजा और प्रजा दोनों की राजनीति कैसे चलेगी? मानना होगा कि सत्ता अगर शरीर है तो विपक्ष सदन और राज्य की आत्मा होती है। इसलिए कोरोना महामारी में सबको साथ आकर बिहार को उबारना होगा। आने वाला समय बिहार के लिए बेहद कठिन और चुनौतीपूर्ण हो सकती है ,जिसकी गूंज देर से सुनाई पड़ने के आसार हैं। अगर समय के साथ चौकसी बरती गई तो कोरोना से बिहार आसानी से उबर भी सकता है। सामाजिक कार्य में अभिरुचि लेने वाले लोगों और सामाजिक संगठनों का भरपूर साथ सरकार को बिहार में मिलता रहा है। बस जरूरत है उसे सहेजने की। ●

(लेखक डीडी न्यूज दिल्ली में पॉलिटिकल जर्नलिस्ट हैं।)

गुलजार रहने वाला प्रकृति का सौन्दर्यमयी घटा पर छा रही वीरानगी

ककोलत पर लगा कोरोना का ग्रहण

● **मिथिलेश कुमार/अमित कुमार सिंह**

विश्व में कोरोना वायरस का कहर मानव के मानवीय गुणों का कुंद करता जा रहा है विश्व के विकासशील देशों में इसका खौफ इस कदर हावी होता जा रहा है कि वर्तमान परिवेश में सर्वशक्तिमान समझने वाले मानव पर कोरोना का भय इस कदर व्याप्त है कि न चाहते हुये भी लॉक डाउन का पालन करने पर विवश होकर अपने घरों में दुबके हुये है। आकड़ों के अनुसार विश्व में करीब 15 लाख लोग कोरोना वायरस से संक्रमित हो चुके हैं। और करीब एक लाख लोगों की मौत भी हो चुकी हैं। पुरे विश्व के सैकड़ों देशों में प्रवास कर रहे विभिन्न देशों के नागरिक अपने स्वदेश का रूख अपना रहे हैं। लॉक डाउन एवं कोरोना के बढ़ते प्रभाव के कारण विश्व के विभिन्न देशों का सम्पर्क टुट गया है। वायु मार्ग के द्वारा आवागमन पर प्रतिबंध लग चुका है। कोरोना का जनक कहे जाने वाले चीन ने पुरे विश्व समुदाय को संक्रमित कर दिया है।देश के विभिन्न राज्यों में कोरोना के बढ़ते मामले जहॉ सरकार की नींद उड़ा दी है वही देश के नागरिकों का चैन छीन लिया है। चीन ने बुहान में कोरोना वायरस के कारण लगाये गये लॉक डाउन को 76 दिनों के बाद हटाया है तब जाकर वहॉ की स्थिति सामान्य हुई है। अभी भी वहॉ के नागरिकों में कोरोना वायरस का भय व्याप्त है। देश में कोरोना के बढ़ते प्रभाव के बाद प्रधानमंत्री ने पुरे देश में कोरोना को लेकर आपातकाल घोषित किया है। और 21 दिनों के लिये लॉक डाउन का आदेश जारी किया। परन्तु कोरोना वायरस के लगातार बढ़ रहे मामले के कारण दुसरे चरण में भी

लॉक डाउन को लेकर अवधि विस्तार करने की संभावना हो गयी है। झारखंड को बिहार से जोड़ने वाली दक्षिण सीमा पर स्थित नवादा जिला का ककोलत जल प्रपात पर कोरोना वायरस का ग्रहण लग चुका है। हमेशा गुलजार रहने वाला ककोलत की वादियां सुनी हो गयी है। वर्तमान समय में यहॉ वीरानगी छायी हुई है। बिहार का एक मात्र ककोलत जल प्रपात पर ग्रहण लग चुका है।

बहरहाल यहॉ आने वाले सैलानी लॉक डाउन का पालन कर अपने घरों में कैद हो गये है। इलाके में सन्नाटा पसरा हुआ है। गर्मी के मौसम प्रवेश करते ही सैलानियों का आगमन प्रांरभ हो जाता है। परन्तु इस वर्ष कोरोना का प्रभाव के कारण यहॉ सैलानियों का आना बंद हो गया है। 14 अप्रैल को लॉक डाउन की अवधि समाप्त हो है। परन्तु अवधि विस्तार की संभावना भी प्रबल है। ककोलत में 14 अप्रैल से ही विसुआ मेला प्रारंभ होता है। बिहार सरकार ने ककोलत के विकास के लिये कई विकास योजनाओं की स्वीकृति प्रदान की है तथा विकास के कार्य प्रारंभ किये जा चुके है। साथ ही साथ ककोलत महोत्सव की तैयारी की संभावना भी बन रही थी। परन्तु कोरोना वायरस के कारण विसुआ मेला पर ग्रहण लग चुका है।यहॉ पौराणिक मान्यताओं एवं परम्पराओं के अनुसार प्रतिवर्श बैशाखी के दिन ककोलत

में तीन दिवसीय मेला का आयोजन किया जाता है। हालांकि अब तक मेले को अधिकारिक दर्जा प्राप्त नही हुआ है।बाबजुद मेले में हजारों की संख्या में सैलानी मेले में पहुँच कर ककोलत जल प्रपात के शीतल जल में स्नान करने का आनंद उठाते है। परन्तु मौजुदा समय में प्रशासन के द्वारा मेला आयोजन पर प्रतिबंध लगाया जा सकता है। ककोलत के विकास के लिये लगातार प्रयास कर रहे ककोलत विकास परिषद् की भुमिका काफी सरहानीय रही है। ककोलत में वर्ष 1998 में पहली वार पॉच दिवसीय विसुआ मेला का आयोजन किया गया था। उस समय से लगातार प्रति वर्श परिशद के द्वारा ककोलत के विकास के लिये सरकार से मांग होती रही है। धीरे धीरे सैलानियों का आना बढ़ता गया साथ ही साथ स्थानीय स्तर पर प्रपात के पास पहुँचने के लिये मार्ग को सुगम बनाने का प्रयास भी जारी रहा। लंबे अर्से से उपेक्षित ककोलत के विकास का द्वार बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने खोलते हुये करोड़ो रूपये की स्वीकृति प्रदान कर दी। दो वर्ष पुर्व मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने नवादा जिले में कई योजनाओं का उद्घाटन एवं शिलन्यास एक साथ करते हुये ककोलत पहुँच कर प्रकृति के अनमोल उपहार एवं प्रपात के स्वर्णिम घटा का जायजा लिया। अपने आगमन के बाद ही उन्होनें ककोलत के विकास के लिये संबधित विभाग को आदेश जारी करते हुये इसे बिहार पर्यटन से जोड़ने की भी बात किया।मुख्यमंत्री ने ककोलत के विकास के लिये काफी दिनों के बाद लंबी लकीर खींच दिया है। जिससे आने वाले दिनों में ककोलत विश्व के मानचित्र पर अपना अलग पहचान बनायेगा।

☞ **इक्को टुरिज्म के माध्यम से होगा ककोलत का विकास :–** बिहार सरकार ने ककोलत को इक्कों टुरिज्म के माध्यम से इसे विकास की श्रेणी में रखा है। राज्य सरकार ककोलत को अन्य पर्यटक स्थलों की तरह इसका विकास करेगी जिसके लिये कई कार्ययोजनाएं तैयार की गयी है। इक्कों टुरिज्म विकसित होने के बाद ककोलत क्षेत्र में पर्यावरण को दुषित करने वाले इंधन से चलने वाले वाहनों के प्रवेश पर प्रतिबंध रहेगा।बैटरी से चलने वाले वाहन ही ककोलत के मुख्य द्वार तक पहुँच सकेगें। ककोलत का मुख्यद्वार को वर्तमान में पार्किंग स्थल के पास लाया जायेगा। तथा पार्किग को अस्थायी हैलीपैड के समीप किया जायेगा। ककोलत क्षेत्र में स्थायी दुकानों को पार्किग के समीप करने की भी योजना बनाई गयी है आस पास के इलाकों में पर्यटन विकास की योजनाये प्रांरभ हो चुकी है। वर्तमान में सीढ़ीयों का निर्माण कराया जा चुका है। तथा इससे सटे एक्सलेटर बनाने का कार्य भी किया जाना है। इसके लिये करीब दो करोड़ की राशि की स्वीकृति प्रदान की गयी है। एक्सलेटर बनाने का कार्य अभी प्रारंभ नही किया गया है। ककोलत के सौन्दर्यीकरण प्रोजक्ट का कार्य वन–विभाग के जिला एजेंसी के द्वारा की जा रही है। वन–विभाग के अधिकारियों के अनुसार ककोलत के विकास के लिये सरकार ने तीन करोड़ 34 लाख रूपये की राशि विमुक्त कर दिया है। एवं विकास कार्य प्रारंभ हो चुका है।

☞ **ककोलत की पौराणिक मान्यता :–** किवदंती मान्यता है कि ककोलत जल प्रपात के शीतल जल में स्नान करने से सर्प योनि से मुक्ति मिलती है सर्प योनि से मुक्ति को लेकर भगवान नारायण ने भी ककोलत में स्नान किया था। स्थानीय दंत कथाओं एवं पौराणिक मान्यताओं तथा ककोलत के एतिहासिक जानकारी के अनुसार त्रेता युग में दंडकारण्य वन यही से प्रांरभ होने का जिक्र किया गया है। साथ ही साथ वन प्रक्षेत्र में तपस्वी सप्तऋषि मुनि का आश्रम रजौली के पहाड़ी क्षेत्र में तथा पांडवो के अज्ञातवास स्थली की बात भी कही जाती है। रजौली में आज भी सप्तऋषि पहाड़ी प्रमाणिक है। आज भी वहॉ प्रतिवर्ष वार्षिक मेले का आयोजन किया जाता है। श्रद्वालु एवं सैलानी मान्यताओं के अनुसार मन्नत भी मांगते है और परम्पराओं के अनुकूल पूर्जा अर्चना भी करते है।

☞ **विकास कार्य पूर्ण होने पर बदलेगी ककोलत की सूरत :–** वर्तमान समय में ककोलत मे हो रहे विकास कार्यो के पूर्ण होने के बाद ककोलत की तस्वीर बदल जायेगी। बिहार सरकार अपने राजकीय पर्यटन स्थलों में ककोलत को सूचिबद्व करने के उपरांत राजगीर महोत्सव, तपोवन महोत्सव,नालंदा महोत्सव, पावापुरी महोत्सव के तर्ज पर ककोलत महोत्सव अपने स्तर से करायेगी। पर्यटन को बढ़ावा देने के लिये सरकार का संकल्पित है। तथा इसकी अपार संभावनायें भी बन रही है। यहॉ आने वाले सैलानियों के लिये विशेश सुविधाओं का ख्याल भी रखा गया है। सुरक्षा, यातायात, रात्रि विश्राम सहित अन्य सुविधाओं से लैश ककोलत आने वाले दिनों में विश्व विख्यात होगा। तथा देश के विभिन्न भागों में स्थित जल प्रपातों में अपना स्थान अवश्य बनायेगा। वर्तमान समय में कोरोना को लेकर ककोलत वीरान हो गया है। सैलानियों से हमेशा गुलजार रहने वाला ककोलत जल प्रपात वैश्विक आपदा के कारण प्रकृति के घटा में ग्रहण लग रहा है। सामाजिक दुरियों एवं प्रतिबंधों के कारण सैलानियों के मन की कसक तथा प्रपात का आनंद लेने की कल्पना तब तक साकार नही होगी जब तक कि कोरोना वायरस का प्रभाव और लोगों के मन में व्याप्त भय दुर नही हो जाता है। परन्तु यह तय है कि आने वाले दिनों में ककोलत की बादियॉ सैलानियों के आगमन से गुलजार होगा। एवं लोग अपने मन की कसक को पुरा करेगें।●

कोरोना संकट के बीच बिहार में पहली शादी

● धर्मेन्द्र सिंह

दूल्हा दुल्हन वरमाला की जगह मास्क लगाए हुए तथा सैनिटाइजर लगे हाथों से एक-दूसरे का हाथ थामे हुए एक यादगार शादी के गवाह बने। नवादा जिले के हिसुआ बाजार काली स्थान की रहने वाली श्वेता कुमारी की शादी शेखपुरा जिले के बरबीघा थाना के झंडा चौक के हनुमान गली निवासी गौरव कुमार से तय हुई थी। शादी की तिथि कोरोना वायरस के संक्रमण को रोकने के लिए लागू प्रथम चरण के लॉकडाउन की अंतिम तिथि यानी 14 अप्रैल के बाद 15

अप्रैल को रखी गई, लेकिन लॉकडाउन की अवधि बढ़ने से दोनों पक्ष परेशानी में आ गए। इस दौरान दोनों परिवारों ने लॉकडाउन का पालन करने और विवाह भी संपन्न कराने को राजी हुए। वर पक्ष ने इसके लिए शेखपुरा जिला प्रशासन को आवेदन देकर पास जारी करने का अनुरोध किया। इसके बाद अनुमंडल कायार्लय से गौरव को पास मिल गया। पास में वाहन और स्वयं तथा सहयोगी को सैनिटाइज करने तथा आने-जाने के दौरान कहीं नहीं रूकने की शर्त भी लगाई गई। कार से दूल्हे को लेकर दो लोगों के साथ बारात शेखपुरा से नवादा आई। जहां पहले से तैयार बैठी दुल्हन के घर पर पांच लोगों एवं एक पंडित की मौजूदगी में मास्क लगाकर शादी की रस्में हुईं। इस दौरान दूल्हा-दुल्हन एक दूसरे को सैनिटाइजर से संक्रमण मुक्त करते रहे। शादी के उपरांत वधू की विदाई भी हो गई। ●

तबलीकी मरकज से आये 13 लोगों की जांच रिपोर्ट में निकला निगेटिव

● धर्मेन्द्र सिंह

दिल्ली के तबलीगी मरकज निजामुद्दीन से आए 13 लोगों की जांच रिपोर्ट निगेटिव आया है। आरएमआरआइए पटना से दिनांक-03.04.2020 व 03.04.2020 को जारी किए गए रिपोर्ट में जिलेवासी व स्वास्थ्य विभाग के लिए राहत भरी खबर है। अब तक जिले में कोरोना वायरस के 41 संदिग्धों का सैंपल लेकर जांच के लिए पटना भेजा गया। इसमें 38 के रिपोर्ट निगेटिव है, शेष तीन लोगों का रिपोर्ट आना बाकी है। इन 41 में दिल्ली के तब्लीगी मरकज निजामुद्दीन से किशगनंज से पहुंचे 13 लोगों की जमात की जांच रिपोर्ट निगेटिव आने से जिला प्रशासन ने राहत की सांस ली है। यह जानकारी देते हुए सिविल सर्जन डॉ. एसके सिंह ने बताया कि तब्लीगी जमात का जांच रिपोर्ट निगेटिव आया है, बावजूद इन सबों 14 दिनों तक क्वारंटाइन कर स्वास्थ्य कर्मियों की निगरानी में रखा गया है।सबों की स्वास्थ्य जांच कर प्रतिदिन फॉलोअप कि जा रहा है। तबलीगी जमात में शामिल हुए लोगों में कोरोना वायरस के संक्रमण से दुनिया भर में मची खलबली को लेकर जिला प्रशासन भी पूरी तरह एहतियात बरत रहा है। जिला प्रशासन और स्वास्थ्य विभाग की टीम लगातार निगरानी रख रही है। मेडिकल टीम के द्वारा प्रतिदिन स्वास्थ्य जांच कर फॉलोअप किया जा रहा है। कोरोना वायरस से

संक्रमण का सिम्टम नहीं पाया गया है और अब तक सभी स्वस्थ्य बताए जा रहे हैं। एक अप्रैल को एमजीएम मेडिकल कॉलेज किशनगंज में सबों का सैंपल लेकर आएमआरआइ पटना भेजा गया। बताते चलें कि किशगनंज पहुंचे तब्लीगी जमात में इंडोनेशिया के 10, मलेशिया के 01 व 02 भारतीय हैं, इन सभी लोगो की आयु 23 से 53 वर्ष की है। जमात को को-ऑर्डिनेट करने वालों में 01 चेन्नई के व दूसरे उड़ीसा का रहने वाला है। उड़ीसा निवासी खालिद ने बताया कि ये सभी लोग किशनंगज घूमने के खयाल से आए थे। फरवरी के पहले सप्ताह में दिल्ली पहुंचे सभी 11 विदेशी उड़ीसा के जासपुर जिले में 28 फरवरी से 01 मार्च तक यानी दिवसीय इज्तमा में शामिल हुए। फिर 02 मार्च को उड़ीसा से चलकर 03 मार्च को तब्लीगी मरकज निजामुद्दीन में शिरकत करने पहुंचे। तबलीगी मरकज से 21 मार्च को किशनगंज के लिए अवध असम एक्सप्रेस से रवाना हुए। 22 मार्च को किशगनंज पहुंचे इन सभी लोगों को प्रशासन द्वारा क्वारंटाइन किया गया। हालांकि बीच में जिला प्रशासन से धार्मिक कार्यक्रम के इजाजत भी मांगी गई थी लेकिन अनुमति नहीं दी गई, जिसके बाद मस्जिद में नमाज अदा करने के अलावा अन्य किसी भी प्रकार की गतिविधियों से परहेज किया गया। इंडोनेशिया व मलेशिया निवासी सभी 11 लोगों का 19-24 अप्रैल के बीच अलग-अलग तिथियों में नई दिल्ली से वतन वापसी की फ्लाइट है। लिहाजा सभी लोग 16 अप्रैल तक वापस दिल्ली लौटने की तैयारी में थे लेकिन किशनगंज आने के बाद लॉकडाउन से निश्चित समय सीमा में वापसी संभव हो पाएगा या नहीं, इस पर संशय है। ●

उम्र की राह में रास्ते बदल जाते हैं, वक्त की आंधियों में इंसान बदल जाते हैं

● धर्मेन्द्र सिंह

पुलिस महानिदेशक बिहार, गुप्तेश्वर पाण्डेय के नक्से कदम पर चलकर आज किशनगंज पुलिस राज्य हीं नहीं, बल्कि हिन्दुस्तान की विपरीत परिस्थितियों में ''हम होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब'' के नारे लगाकर डीजीपी बिहार के रास्तों पर हम सफर की भूमिकाओं में है। जहाँ पुलिस कप्तान कुमार आशिष की शख्सियत और उनके मातहतों की टीमें लाकडाऊंन में जनसेवा को अपना लक्ष्य बनाकर भूखे-नंगे, लाचार-बेबस बीमारों की बैशाखियां बनकर सेवा करने में जुटी है। कभी कभी लोग पिछले बिहार पुलिस और आज के बिहार पुलिस और उनकी कारगुजारियों को देखकर महसूस कर भावविह्वल हो उठते हैं। जब पुलिस कप्तान खुद से दवा खरीदकर उन तक पहुंचाने की व्यवस्था करते हैं। यहां यह कोई दिखावे की बातें नहीं है, बल्कि कैंसर रोगी को पटना महावीर कैंसर संस्थान से दवा मंगाकर उसके घर पहुंचाने की है। बीते दिन भारत नेपाल की सीमाओं से सटे गरभनडंगा गांव के लाचार कमल किशोर अग्रवाल पिता भक्ति अग्रवाल को किशनगंज पुलिस कप्तान कुमार आशीष ने बजरंगबली की भूमिका में दवाऐं खरीदकर उन तक पहुंचाई। जहाँ थानाध्यक्ष बहादुरगंज सुमन कुमार सिंह जब दवा लेकर पुलिस कप्तान के आदेश पर उनके घर पहुंचे तो उस समय का वर्णन शब्दों में किया जाना संभव नहीं लगता है। यह तो समय है जब गरभनडंगा के स्व. बनियां बाबू की यहाँ तूती बोलती थी। जिनके दो पुत्र नंदी और भक्ति अग्रवाल, जहाँ आज किशनगंज पुलिस ने अपनी सेवाऐं पहुंचाई थी। जिनके दरवाजे पर हाथी बंधे होते थे, आज वह दवा के वगैर असहाय पड़ा था। जिसकी सहायता किशनगंज में किशनगंज पुलिस लगी थी। आज भी गरभनडंगा में अंग्रेजी शासनकाल का लकड़ी से बना थाना इसका मूक गवाह है। सच तो ये भी है कि थाना इसी लकड़ी के भवन से संचालित होता है, जबकि नया भवन भी बिना हस्तांतरित किये यहाँ बना हुआ है। ऐसे कई ऐसे ज्वलंत और मौजूद उदाहरण हैं-जहाँ बहादुरगंज थानाध्यक्ष सुमन कुमार सिंह अपने सहयोगियों के बल बूते आपसी सहयोग से आज भी इनके पुलिस बल की जीप जिधर से निकलती हैं, वहां के अंधे-लाचार, विकलांग और निर्धन वेवाओं को एक भोजन के सामानों से भरा झोला उन्हें जरुर दिया जाता है। जिस पुलिस थाने ने दो दिन पहले मुफ्त एम्बुलेंस की सेवा लोगों को अर्पित कर बिहार हीं नहीं पूरे भारत में एक अनोखा उदाहरण पेश किया है। जहाँ नेपाल की तराई में बसे इस क्षेत्र के लोग ''लाल टोपी'' देखकर घरों में छुप जाते थे। आज वही लोग, वही ग्रामीण किशनगंज पुलिस जिंदाबाद कहकर उन्हें गले लगाने तक को तैयार रहते हैं। वह भी तब जब बेहतर पुलिसिंग, मानव सेवा और उदार चरित्र के किशनगंज पुलिस कप्तान कहीं विषम परिस्थितियों में सड़कों पर दिख जाते हैं तो... जिसका अनुकरण करते श्याम किशोर यादव (थानाध्यक्ष किशनगंज) रंजन कुमार (कोचाधामन पीएस) सुनील कुमार पासवान (पुलिस केंद्र प्रभारी) तरुण कुमार तरुणेश (गलगलिया थानाध्यक्ष) कुंदन कुमार (पोठिया थानाध्यक्ष) आरिज एहकाम, (दिघलबैंक) नीरज कुमार निराला (कोढ़ोबाड़ी) ईश्वरी प्रसाद (ओपी प्रभारी, अर्राबाड़ी) इकबाल हुसैन (पौआखाली एसएचओ) एवं अन्य पुलिस पदाधिकारी कोरोना संक्रमण की विपरीत परिस्थितियों में अपने अपने पुलिस पब्लिक संस्कारों का उत्कृष्ट उदाहरणों का प्रदर्शन करते देखे जाते हैं। वास्तव में किशनगंज पुलिस में व्याप्त लोक सेवाओं का चरित्र वर्णन लिखकर नहीं, देखकर किया जा

1971 के युद्ध की याद दिलाता अभी का लॉक डाउन

● धर्मेन्द्र सिंह

वर्ष 1971 की बात है जब भारत-पाकिस्तान युद्ध चल रहा था और युद्ध का मैदान किशनगंज शहर से महज 30 किमी दूर तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान, जो अब बांग्लादेश है, में बना था। शहर के इतने नजदीक युद्ध होने से किशनगंज में सेना की टुकड़ियां कैम्प किये हुए थी। युद्ध को लेकर कई तरह की आशंकाएं यहां लोगों में रहती थीं। उन दिनों एकमात्र रेडियो ही ताजा सूचना प्रसारण का माध्यम था। अंधेरा होते ही अचानक जब घों..घों..घों की कर्कश आवाज के साथ सायरन बज उठता था तो घरों में रहने वाले लोग हड़बड़ा कर स्विच बोर्ड की तरफ भागते थे और एक-एक कर सारे जलते बल्ब ऑफ कर दिए जाते थे। यदि किसी के घर में लालटेन या ढ़िबरी भी जलती थी तो उसे भी बुझा दिया जाता था। इतनी देर में बिजली विभाग के कर्मचारी या आसपास के लोग स्ट्रीट लाइट भी ऑफ कर देते थे। यानी पूरे शहर में ब्लैकआउट हो जाता था। इस दौरान घरों में सब बंद हो जाते थे। उत्सुकतावश खिड़की या दरवाजे से बाहर झांकने वाले बच्चों को घर के बुजुर्ग परिस्थिति जन्य गुस्से से दो-चार थप्पड़ रसीद कर घर के भीतर धकेल देते थे। खटाखट..खटाखट की आवाज के साथ खिड़की और दरवाजे बंद हो जाते थे। सड़क में वीरानी और घरों में जैसे मुर्दनी छा जाती थी। यह बातें किशनगंज माड़वाड़ी कॉलेज के प्रोफेसर डॉ. सजल प्रसाद ने कही। श्री प्रसाद आगे बताते है कि उस वक्त मेरा उम्र आठ साल थी और मैं कक्षा तीन में पढ़ता था। मेरे घर से कोई 100 मीटर की दूरी पर गोसवारा भवन/मनोरंजन क्लब भवन की छत पर उस युद्ध के समय सायरन लगाया गया था। शहर के दूसरे हिस्से में भी सायरन लगाए गए थे। साँझ के बाद अंधेरे की चादर पसरती और अक्सर सायरन बज जाता और लोग सारी बत्तियां बुझाने में लग जाते। "यह ब्लैकआउट क्या होता है ?"-जिज्ञासावश मैंने अपने दादाजी से पूछा था। "दुश्मन देश पाकिस्तान के किसी बम-वर्षक विमान के जब हमारे क्षेत्र के आसमान में उड़ने की खबर मिलती है तो जमीन पर घरों व सड़कों की बत्तियां गुल कर ब्लैकआउट किया जाता है।"-दादा जी ने समझाया था।" परंतु, ब्लैकआउट क्यों किया जाता है"-दादाजी की बात समाप्त होते ही मैंने दूसरा प्रश्न दाग दिया था। "ब्लैकआउट इसलिए किया जाता है कि दुश्मन देश के हवाई जहाज को नीचे आबादी होने का अनुमान न लग सके और पायलट बम नहीं गिरा सके!"-दादा जी का जवाब सुनकर मैंने ठंडी सांस ली थी। उसके बाद से ही सायरन जब भी बजता, मैं भाग-भागकर सभी कमरों की लाइट बुझा देता था। यहां तक कि माँ से जलता चूल्हा भी बुझाने को कहता था। ऐसा कई महीनों तक चला था। डॉ. सजल प्रसाद आगे बताते हैं कि यह प्रसंग इसलिए याद आ गया कि इन दिनों कोविड-19 वायरस के कारण कोरोना महामारी फैलने की आशंका बलवती होती जा रही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र दास दामोदर मोदी ने पूरे देश में 21 दिनों का लॉकडाउन घोषित किया है। इस लॉकडाउन में दिन के 11 बजे के बाद तो शहर में कर्फ्यू जैसा ही दृश्य हो जाता है। लोग डरे-सहमे दीखते हैं। अदृश्य दुश्मन कोरोना के वार से बचने-बचाने की कवायद में डॉक्टर, नर्स, पारा मेडिकल स्टाफ, सफाईकर्मी, डीएम, एसपी सहित जिला प्रशासन के अधिकारी-कर्मचारी व पुलिस महकमे के जवान तथा एनजीओ के स्वयंसेवी लोगों को लगातार जागरूक कर रहे हैं। परंतु, यह खतरा अभी बरकरार है। लोग घरों में बंद रहने को मजबूर हैं। निराशा के बादल मंडरा रहे हैं।ऐसे में प्रधानमंत्री मोदी जी का 130 करोड़ देशवासियों से रविवार को रात के 9 बजे 9 मिनट तक मोमबत्ती, दीया, टॉर्च, मोबाइल की फ्लैशलाइट जला कर सामूहिकता के स्तर पर आत्मविश्वास जगाने का आह्वान स्वागतयोग्य है। यह आह्वान सामूहिक रूप से कोरोना-युद्ध में विजयी बनकर निकलने की प्रेरणा देता है। ●

डॉ० सजल प्रसाद

थानाध्यक्ष व मेजर श्रमिकों की पीड़ा सुन हुए भावुक

● धर्मेन्द्र सिंह

लॉकडाउन के बावजूद प्रवासी श्रमिकों का घर लौटने का सिलसिला जारी है। दिनाँक-15.04.2020 की देर रात को आगरा से लगभग दो दर्जन श्रमिकों की टोली ट्रक से किशनगंज पहुंचे। बंगाल के ग्वालपोखर निवासी श्रमिकों की टोली के पहुंचते ही रात्रि गश्ती कर रही टाउन पुलिस भी मौके पर पहुंची। सदर थानाध्यक्ष श्याम किशोर यादव व मेजर सुनील कुमार ने श्रमिकों से पूछताछ कर पूरी जानकारी ली और उनकी पीड़ा सुन भावुक हो गए। जहां लॉकडाउन के उल्लंघन करने वालों पर पुलिस सख्ती बरत रही है वहीं पुलिस का दिल इन जरूरतमंदों के लिए पसीज गया। बस स्टैंड पर जुटे श्रमिकों की परिस्थिति से अवगत होकर थानाध्यक्ष के निर्देश पर फौरन भूख से बेहाल लोगों के लिए भोजन और पानी का इंतजाम किया। इस दौरान शारीरिक दूरी का खयाल रखते हुए पुलिस अधिकारियों ने स्वयं भोजन कराया। सख्त मिजाज अधिकारियों के मानवीय चेहरे को देख लोगों के आंखों में खुशी के आंसू उमड़ पड़े। इस दौरान पुलिस अधिकारियों ने सभी से अपील भी की, कि यात्रा के समय या जहां भी रुकें या बैठें वहां एक-दूसरे से दूरी बनाकर रहें। इस संबंध में थानाध्यक्ष श्याम किशोर यादव ने बताया कि साबुन से हाथ धुलवाकर खाना खिलाने के पश्चात स्वास्थ्य विभाग की टीम के द्वारा सबों का चेकअप किया गया। स्वास्थ्य जांच के पश्चात सभी श्रमिकों को पैदल गंतव्य की ओर जाने की अनुमति दी गई। बताते चलें कि जिला पुलिस कप्तान कुमार आशीष के निर्देश पर लॉकडाउन के बाद से ही पुलिस के द्वारा अभियान चलाकर जरूरतमंदों की सहायता की जा रही है। नतीजतन संकट की इस घड़ी में किशनगंज पुलिस लगातार मानवीय चेहरा पेश कर रही है। इसी का नतीजा है कि केंद्रीय मंत्री से लेकर डीजीपी तक पुलिस की कार्यप्रणाली की तारीफ कर चुके हैं। ●

डीएम ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के द्वारा किया पदाधिकारियों के साथ बैठक

● धर्मेन्द्र सिंह

किशनगंज जिलाधिकारी डॉ. आदित्य प्रकाश ने दिनांक-09.04.2020 को वीडियो कांफ्रेंसिग के जरिए सभी बीडीओ, पीएचसी प्रभारी व प्रखंड आपूर्ति पदाधकारियों के साथ बैठक की। बैठक में खाद्यान्न वितरण से लेकर दूसरे राज्यों व विदेशों से आने वालों की मॉनीटरिग करने और लॉकडाउन के अनुपालन को लेकर उन्होंने आवश्यक निर्देश दिया। इस दौरान उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि आज से यानी दिनांक.10.04.2020 से जिन पीडीएस डीलरों तक खाद्यान्न पहुंच चुका है वे वितरण का काम शुरू करें। साथ ही उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि खाद्यान्न वितरण के दौरान लॉकडाउन का अनुपालन खासकर शारीरिक दूरी बनाए रखना संबंधित डीलर की जवाबदेही होगी। सोशल डिस्टेंस के अनुपालन का शिकायत मिलने पर संबंधित डीलर का लाइसेंस रद कर दिया जाएगा। इसके साथ प्रखंडों में क्वांरटाइन सेंटर में रखे गए व्यक्तियों की सघन मॉनीटरिग करने का निर्देश भी बीडीओ को दिया गया। साथ ही जिलाधिकारी ने फरवरी माह में नेपाल में आयोजित तबलीगी इज्तमा से लौटने वाले लोगों की सूची बनाकर उनका चिकित्सकीय जांचोपरांत मॉनीटरिग करने का निर्देश दिया गया। पोठिया व ठाकुरगंज बीडीओ को नियमित रूप से चाय बगानों व फैक्ट्रियां की जांच करने को कहा गया। जिलाधिकारी आदित्य प्रकाश के निर्देश के आलोक में प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना के अंतर्गत जिले के पूर्विकता प्राप्त लाभुको एवं अंत्योदय लाभुको को अप्रैल का नियमित मासिक खाद्यान्न के साथ-साथ पांच किलोग्राम चावल प्रति लाभुक नि:शुल्क वितरण का निर्देश दिया गया। इसके लिए राज्य खाद्य निगम द्वारा किशनगंज जिले के कार्यरत 576 डीलरों में से 126 डीलरों को डोर स्टेप डिलीवरी के माध्यम से खाद्यान्न उपलब्ध कराने की जानकारी दी गई। इस खाद्यान्न का वितरण पीओएस मशीन के माध्यम से किया जाना है। इसके बाद जिलाधिकारी ने विडियों कांफ्रेंसिग के माध्यम से जिले के सभी प्रखंड विकास पदाधिकारियों एवं प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारियों से कोरोना वायरस से संक्रमण के रोकथाम, बाहर से आए हुए व्यक्तियों की मॉनीटरिग, लॉकडाउन का अनुपालन एवं सोशल डिस्टेसिग को लेकर समीक्षा की गई। जिसमें जिलाधिकारी के द्वारा सभी प्रखंड विकास पदाधिकारी को प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के अंतर्गत वितरित किए जाने वाले खाद्यान्न के वितरण हेतु सभी डीलरों के मॉनीटरिग का निर्देश दिया गया। जिलाधिकारी ने स्पष्ट रूप से कहा कि जिन सार्वजनिक वितरण प्रणाली के दुकानदारों के द्वारा शारीरिक दूरी का अनुपालन नही कराया जाएगा, उनके विरुद्ध कार्रवाई करते हुए लाइसेंस रद करने का प्रस्ताव भेजना सुनिश्चित करें।हर हाल में जन वितरण प्रणाली की दुकानों, बैंकों एवं अन्य प्रतिष्ठानों पर शारीरिक दूरी बनाए रखने का अनुपालन किया जाना सुनिश्चित करें। डीएम ने अनुमंडल पदाधिकारी को निर्देश दिया कि वैसे 11398 आवेदन, जिनका नाम ड्राफ्ट सूची में नहीं है या गलत आवेदन भर कर जमा किया गया है, इसकी समीक्षा कर रिपोर्ट दें। सर्वे के आधार पर अपात्र पाए गए आवेदन में बहादुरगंज में 665, दिघलबैंक में 3968, किशनगंज में 41, कोचाधामन में 5736, पोठिया में 4137, टेढ़ागाछ में 1700, ठाकुरगंज में 217 के जांच का निर्देश सभी बीडीओ को दिया गया। जीविका दीदियों के द्वारा बनाए गए लगभग 9000 मास्क का वितरण सभी प्रखंडों में कराए जाने व पीएचसी में दोबारा मॉक ड्रिल कराने का निर्देश दिया गया।

अल्पसंख्यक छात्रावास आइसोलेशन सेंटर के रूप में तैयार रहे, इसके लिए सभी बीडीओ को निर्देशित करते हुए डीएम ने कहा कि प्रखंडों में स्थापित मनरेगा के प्रोग्राम पदाधिकारी की प्रतिनियुक्ति अल्पसंख्यक छात्रावास में सुनिश्चित करें। ●

अभी कलम उठाइये

आपके सामने हो रहे भ्रष्टाचार एवं अपराध की खबर की समीक्षा करें और सरकार सहित पुलिस-प्रशासन तक उसको पहुंचाने के लिए केवल सच पत्रिका के साथ जुड़े। खबर की जानकारी इस नम्बर पर दें

सम्पर्क करें:- 9431073769/9955077308

ई-मेल:- editor.kstimes@rediffmail.com पर भेजें।

पुलिस गिरफ्त में आया अंतर्राज्यीय गिरोह का सरगना

● धर्मेन्द्र सिंह

किशनगंज पुलिस की घेराबंदी में हथियार के साथ अंतरराज्यीय गिरोह का सरगना धरा गया। पुलिस कप्तान कुमार आशीष के निर्देश पर गठित टीम ने गुप्त सूचना पर छापेमारी कर विभिन्न कांडों में फरार चल रहे अपराधी मुक्का उर्फ नूर इस्लाम को एक देशी कट्टा और चार जिदा कारतूस के साथ गिरफ्तार किया। मुक्का के विरुद्ध किशनगंज, अररिया सहित बंगाल के कई थानों में एक दर्जन से अधिक मामले दर्ज है। दिनांक-14.04.2020 को एसडीपीओ जावेद अनवर अंसारी के नेतृत्व में गठित टीम ने मो. मुक्का को एमजीएम रोड स्थित कमलदह बड़ी पुल के निकट बिहार सीमा में प्रवेश करते हुए धर दबोचा।बताया जाता है कि उस वक्त वह किसी आपराधिक घटना को अंजाम देने के लिए किशनगंज आया था। पुलिस कप्तान कुमार आशीष ने प्रेसवार्ता में जानकारी देते हुए बताया कि अपराधी मो. मुक्का लूट की घटना को अंजाम देने के बाद पीड़ित को गोली मारकर घायल कर देता था और अपने साथियों को संरक्षण भी प्रदान करता था। पुलिस कप्तान श्री कुमार ने बताया कि बंगाल के इस्लामपुर थाना क्षेत्र के रामपुर रूहिया निवासी मुक्का पिता चुक्का उर्फ शेर मोहम्मद ने गत सात जनवरी को अपने साथियों के साथ मिलकर अररिया से सिलीगुड़ी जा रहे मुर्गा लदे पिकअप वैन चालक को बहादुरगंज थाना क्षेत्र में गोली मारकर लूट की घटना को अंजाम दिया था। इस मामले की जांच कर रही पुलिस ने 48 घंटे के भीतर घटना में शामिल मो. इजहार को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था। जबकि आरोपित शम्स आलम को अवैध हथियार और गोली के साथ गिरफ्तार कर जेल भेजा गया है। वहीं जोकीहाट, अररिया निवासी मो. शफीक उर्फ गुड्डू को किशनगंज पुलिस ने फारबिसगंज पुलिस की सहायता से गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है लेकिन घटना के बाद से ही मुक्का लगातार फरार चल रहा था। छापेमारी दल में एसडीपीओ अनवर जावेद, सदर थानाध्यक्ष श्याम किशोर यादव, बहादुरगंज थानाध्यक्ष सुमन कुमार सिंह एवं एएसआई संजय कुमार यादव मौजूद थे। ●

पुलिस कप्तान ने कार्यरत्त जवानो में बांटा सेनिटाइजर, मास्क एवं अन्य जरूरी समान

● धर्मेन्द्र सिंह

किशनगंज कोरोना वायरस के संक्रमण से बचाव के लिए पुलिस कप्तान कुमार आशीष ने पुलिस केंद्र में तैनात कर्मियों व जिले में ड्यूटी पर तैनात पुलिस पदाधिकारी एवं पुलिसकर्मियों के बीच मास्क, सेनिटाइजर, गलब्स और लाइफबॉय साबुन का वितरण किया। साथ ही सभी पदाधिकारी एवं कर्मियों को कोरोना वायरस से बचने के लिए सावधानियां बरतने के लिए विशेष दिशा निर्देश दिए। श्री कुमार ने कहा कि सभी पुलिसकर्मी लगातार हाथों को साबुन से धोते रहें और सैनिटाइजर का उपयोग कर साफ करते रहें। उन्होंने पुलिस कर्मियों को सोशल डिस्टेंस के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि पुलिसकर्मी जनता के साथ-साथ आपस में भी एक दूसरे के साथ सोसल डिस्टेंस बनाकर काम करें। यदि किसी पुलिसकर्मी को बुखार या गले में खरास की शिकायत मिले तो वह फौरन अपने अधिकारियों को अवगत कराएं और अपना मेडिकल चेकअप अवश्य कराएं। वहीं पुलिस लाइन के निरीक्षण के दौरान पुलिस कप्तान कुमार आशीष ने कर्मियों को साफ-सफाई पर विशेष ध्यान देने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि निर्देशों का अक्षरशः पालन कर वैश्विक महामारी से बचा जा सकता है। ●

केन्द्रीय मंत्री ने ट्वीट कर पुलिस कप्तान के कार्यों की सराहना की

थानाध्यक्ष सुमन ने किया बिहार पुलिस का सर बुलंद

● धर्मेन्द्र सिंह

किशनगंज एक दारोगा की बदौलत बिहार पुलिस का सर बुलंद हो गया है। किशनगंज जिला अंतर्गत बहादुरगंज थानाध्यक्ष सुमन कुमार सिंह द्वारा लॉकडाउन के दौरान गरीबों के बीच राहत सामग्री बांटना केन्द्रीय मंत्री राम विलास पासवान को इतना भाया की उन्होंने ट्वीट कर किशनगंज पुलिस की तारीफ के कसीदे गढ़ दिए दिनांक-08.04.2020 को श्री पासवान ने अपने अधिकारिक ट्विटर हेंडल से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और आईपीएस एसोसिएशन को टैग करते हुए लॉकडाउन के दौरान किशनगंज पुलिस द्वारा गरीबों को पहुंचाई जा रही मदद से देश को अवगत कराया।

ज्ञातव्य है कि किशनगंज पुलिस कप्तान कुमार आशीष रचनात्मक कार्यों के लिए सुविख्यात रहें हैं। वे बेहतर पुलिसिंग के लिए नित्य नये प्रयोगों के लिए जाने जाते हैं। जबकि उन्हीं के मातहत कार्यरत एक दारोगा भी जहां जाता है वहां पुलिस, वर्दी और थाना का मानी-मतलब ही बदल कर रख देता है। संप्रति किशनगंज जिला अंतर्गत बहादुरगंज थानाध्यक्ष सुमन कुमार सिंह को लोग दारोगा कम दोस्त के रूप में ज्यादा चाहते हैं। उन्होंने अपने छोटे से कार्यकाल में ही

कोरोना वायरस के दुष्प्रभाव से बचने के लिए लॉकडाउन का पालन करना सभी लोगों का कर्तव्य है।सरकार द्वारा इस दिशा में हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं। जिससे कि इंसान अपने इच्छा शक्ति और सर्तकता के बदौलत कोरोना के खिलाफ अपना जंग जीत सके। इसके लिए माइकिग कर लोगों को हिदायत दी जा रही है। ऐसी विकट स्थित को ध्यान में रखते हुए जब लोगों विशेष जरुरत हो तभी अपने घर से बाहर निकले और कोशिश करें कि बिना किसी काम के घर से बाहर नही निकले।शहरी क्षेत्र में सब्जी खरीदने के लिए लोग सुबह 08 बजे से बाजार पहुंचने लगते हैं। इसके अलावा विभिन्न बैंकों और सीएसपी के बाहर भी लोगों का जमावड़ा लग जाता है। हालांकि जिला प्रशासन और पुलिस प्रशासन द्वारा इन सभी स्थानों पर भीड़ नियंत्रित करने के लिए सभी जरुरी उपाय किए जा रहे हैं।इस समय अधिकतर लोग जनधन खाता में पहुंचने वाले पांच सौ रुपये की निकासी के लिए बैंक पहुंच रहे हैं। यहां तो पुलिस समझा बुझाने के साथ जरुरत पड़ने पर बल पूर्वक लोगों के बीच शारीरिक दूरी का पालन करवा रहे हैं। प्रशासन का यह कदम लोगों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए उठाया गया है। इस वजह से डे मार्केट सब्जी बाजार को भी रुईधासा मैंदान में शिफ्ट कर दिया गया है। जहां सब्जी खरीदने वाले लोग स्वयं ही शारीरिक दूरी का पालन करते नजर आते हैं, लेकिन कई लोग जल्दबाजी की होड़ में इस दूरी का पालन करने से चूक जाते हैं। लेकिन इन लोगों को भी समझा बुझा कर शारीरिक दूरी का पालन करने के लिए प्रेरित किया जाता है। अब लोग स्वयं भी जागरुक होकर कोशिश करने लगे हैं कि बैंक और सब्जी बाजार जाएंगे तो शारीरिक दूरी का पालन करेंगे।

बहादुरगंज थाना को इंसाफ का मंदिर बना दिया है।वैश्विक संकट कोरोना से जब दुनिया भर के गरीब व मध्यम वर्ग के लोग खाद्य सामग्री के लिए लालायित हैं तब श्री सिंह ने अपने कप्तान श्री कुमार आशीष के कुशल निर्देशन में खाद्य सामग्रियों का कीट घर-घर मुहैया कराने में जुटे हैं। उन्होंने "केवल सच के प्रतिनिधि धर्मेन्द्र सिंह" को बताया कि जब तक लॉकडाउन रहेगा तब तक बहादुरगंज पुलिस गरीबों को राहत सामग्री मुफ्त मुहैया कराती रहेगी। सनद रहे कि श्री सिंह जब मधेपुरा पुलिस में कार्यरत थे तब भी क्षेत्र की विधि व्यवस्था को बहाल करने के लिए अपनी पत्नी को ऑपरेशन थिएटर में छोड़ आए थे। उस वक्त भी उनकी खासी चर्चा हुई थी। बहरहाल वैश्विक संकट की इस घड़ी में बहादुरगंज थानाध्यक्ष का काम देश के लिए नजीर बन चुका है।केंद्रीय मंत्री राम विलास पासवान के ट्वीट से किशनगंज सहित बिहार पुलिस का सर बुलंद हुआ है। ●

निजी शिक्षण संस्थानों की स्थिति बेहद दयनीय

● **श्रीधर पाण्डेय**

सर्व विदित हैं कि कोरोना वायरस का प्रकोप से पूरी दुनिया त्राहिमाम कर रही हैं। देश सहित विश्व भर के अधिकांश आबादी लॉक डाउन से जूझ रही हैं। सारे रोजगार ठप हैं, सरकार जरूरत मंद तक भोजन की व्यवस्था पहुंचाने के लिए प्रयासरत हैं साथ ही साथ समाजसेवियों के माध्यम से भी एक बड़ी मानवता की मिशाल पेश की जा रही हैं। हरेक तरह के कार्यो में लगे लोग इस विपरीत परिस्थिति में बुरे दौर से गुजर रहे हैं। लेकिन हम बात करेंगे निजी शिक्षण संस्थान कि जहाँ भी इस लॉक डाउन का असर व्यापक पड़ा हैं। राज्य सरकार की शिक्षा पद्धति से असंतुष्ट हुए लोग निजी शिक्षण संस्थान में ही अपने बच्चे का दाखिला कराना पसंद करते हैं ताकि उनके बच्चे का भविष्य बेहतर हो जाए। शहर की बड़ी बड़ी चमकती मॉल जैसी इमारतें वाले स्कूल देखने मे तो बहुत ही खूबसूरत होने के साथ साथ देश के नामी शिक्षकों को अपने स्कूल में चयन करते है ताकि उनके स्कूल का नाम और बच्चे का भविष्य उज्जवल हो। लेकिन आज लॉक डाउन की स्थिति में उनकी स्थिति बेहद ही दयनीय होती जा रही हैं,लोन लेकर बनाए गए स्कूल एवं ईएमआई पर चलते बस सबके नजर में भले ही स्कूल की गरिमा बढ़ा रहा हो लेकिन उसके लिए एक बड़ी कीमत चुकानी पड़ती हैं। बड़े बड़े स्कूल में लाखों लाख टीचर की सैलरी देना आसान बात नहीं हैं। प्राइवेट निजी शिक्षण संस्थान इस समय बेहद ही गम्भीर स्थिति से जूझ रहे हैं,अप्रैल माह तक का भी स्कूल फी अभी तक जमा नहीं हैं वैसे में वह शिक्षक एवं बस ड्राइवर एवं खलासी के साथ साथ स्कूल स्टाफ की पेमेंट करने में किस तरह सक्षम होंगे इसपर सरकार की गहन चिन्ता करने की आवश्यकता हैं। निजी शिक्षण संस्थान के शिक्षक,स्टाफ,बस ड्राइवर एवं खालसी की स्थिति भी उतनी मजबूत नहीं हैं कि लॉक डाउन में सभी अपने आवश्यक वस्तुओं की पूर्ति आसानी से कर ले,न ही निजी शिक्षण संस्थान के प्रबंधक की इतनी हैसियत की लाखों लाख की सैलरी वह इनलोगो तक पहुंचा सके। इसके बावजूद भी शिक्षक बच्चें के भविष्य के प्रति जागरूक होते हुए अपना शिक्षा धर्म निभा रहे हैं,घर पर ही बच्चों के लिए ऑनलाइन क्लासेज शुरू कर दिए हैं ताकि विपरीत परिस्थितियों के बावजूद भी बच्चे के भविष्य पर कोई असर न पड़े। ●

कोरोना का कहर

ना जाने तु कैसा है,
कोरोना नामक कंस।
ना जाने तु है कैसा,
सारा जीवन थम सा गया है,
सबको लगता है ऐसा,
छिरा हो जैसे विश्वयुद्ध।
लगने लगा है अब ऐसा,
आपसे ही खुद लड़े जा रहे,
पता नही दुश्मन है कैसा।

इसने सबको अलग किया,
रिश्ते-नाते सब दूर हुए,
अपने-आप तक सिमटने को,
सारी दुनिया मजबूर हुए।
अपने-अपनो से मिल नही सकते,
स्वयं से लड़ने को बेबस और लाचार हुए।
जिनको ना कोई बिमारी थी,
वो सुन-सुनकर बीमार हुए।
परंतु उम्मीद है, हौसला है,
हम लड़ेगें हँसके और जितेंगे।
अपनी भक्ति के सक्ती और संस्कारो से,
विश्वविजेता बनेंगे हम अपने व्यवहारों से।
क्योकिं यही वो धरती है,
जहां कंस भी हारा, रावण भी हारा।
तू भी हारेगा दुश्मन दानव,
हम जितेंगे, अटल विश्वास है ऐसा।

(प्रस्तुति :- पूजा भूषण झा)

अभी कलम उठाइये

आपके सामने हो रहे भ्रष्टाचार एवं अपराध की खबर की समीक्षा करें और सरकार सहित पुलिस-प्रशासन तक उसको पहुंचाने के लिए केवल सच पत्रिका के साथ जुड़े। खबर की जानकारी इस नम्बर पर दें

सम्पर्क करें:- 9431073769/9955077308

ई-मेल:- editor.kstimes@rediffmail.com पर भेजें।

गया के आइसोलेशन वार्ड में गर्भवती से हुआ बलात्कार, तो जहानाबाद में एम्बुलेंस के अभाव में दुधमुहे बच्चे की हुई मौत

माँ की चीत्कार से सुशासन हुआ शर्मसार

गया और जहानाबाद की स्वास्थ्य व्यवस्था ने खोली राज्य में लॉक डाउन की पोल

● **अमित कुमार/नवीन कुमार रौशन**

बिहार की सरकार चाहे जितनी भी सुशासन की दम्भ भरती रहे, इस राज्य की प्रशासनिक कुव्यवस्थाएं समय-समय पर राज्य में सुशासन की पोल खोल ही देती हैं।चाहे मुज्जफरपुर बालिका गृह का मामला हो या फिर वारिश की पानी मे राज्य की राजधानी पटना का डूब जाना।ये घटनाएं सुशासन बाबू के सुशासन को आईना दिखाने को काफी है।किसी भी राज्य की जनता के लिए उनके राज्य की मूलभूत सुविधाएं बहुत मायने रखते है। रोजी-रोजगार, विधि-व्यवस्था, चिकित्सा-व्यवस्था, आवास-व्यवस्था आदि किसी भी राज्य की जनता की मूल जरूरते हैं। सुशासन बाबू के राज्य में ये सारी मूलभूत व्यवस्थाएं तार-तार है। स्वास्थ्य जैसी जनकल्याणकारी व्यवस्थाएं तो सुशासन की सरकार को अक्सर मुँह चिढ़ा देती है।कभी चमकी और इंफेलाइटिस के रूप में तो कभी महान गणितज्ञ डॉ वशिष्ठ नारायण जैसे विभूतियों को स्टेचर और एम्बुलेंस तक कि सुविधा उपलब्ध नही करा सकने के रूप में। राजनीतिक रूप से सजग और सबल मगध क्षेत्र में घटित,इसी तरह की घटनाओं ने एक बार फिर से राज्यसरकार की स्वास्थ्य व्यवस्था ने सुशासन की पोल खोल कर रख दी है।चिकित्सा के आभाव में दूध मुहे की मौत से आहत जहानाबाद के सड़को पर एक माँ की हृदय विदारक चीख ने सुशासन बाबू के सुशासन को एक बार फिर से शर्मसार कर दिया।यही नही मानवता तो

तब और शर्मसार हो गई,जब इस परिवार को अपने बच्चे की लाश को घर ले जाने के लिए जहानाबाद अस्पताल प्रशासन एक शव वाहन तक उपलब्ध नही करा सकी।वो तो भला हो उस सामाजिक कार्यकर्ता डॉ एस के सुनील और भजपा नेत्री इंदु कश्यप का जिन्होंने समय पर पहुंच कर अपनी गाड़ी उपलब्ध करा जहानाबाद की मान रख ली।दूसरी तरफ गया के मगध मेडिकल कॉलेज अस्पताल में ईलाज कराने आये पीड़िता के साथ दुष्कर्म और जयप्रकाश नारायण अस्पताल और प्रभावती अस्पताल में ईलाज के लिए फर्श पर तड़पती महिलाएं।सुशासन सरकार के बेहतरीन स्वास्थ्य व्यवस्था पर प्रश्नचिन्ह खड़ा करने को काफी है।

ज्ञात हो कि सुशासन सरकार की पूरे राज्य में लॉकडाउन की बेहतरीन तैयारी की दावो की हवा उस समय निकल गई जब,अरवल जिले के कुर्था प्रखण्ड के शाहोपुर निवासी गिरजेश चन्द्रवँशी अपने 3 वर्षीय बेटे रिशु कुमार का स्थानीय अस्पताल में ईलाज करवाने के बाद

वेहतर ईलाज के लिए,किसी-किसी तरह टेम्पू से जहानाबाद सदर अस्पताल लेकर आया।लेकिन स्थानीय चिकित्सकों ने ईलाज के तुरंत बाद उसे पटना रेफर कर दिया ।लेकिन एम्बुलेंस की व्यवस्था घंटो तक नही कराई गई,जिससे तेज बुखार और सांस लेने में तकलीफ का इलाज कराने आये दूध मुहे ने दम तोड़ दिया।यह जहानाबाद सदर अस्पताल के लिए कोई नई बात नही है।यहाँ के अस्पतालों में अक्सर यही होता है।अपनी जबाबदेही से बचने के लिए यहां के चिकित्सक पटना रेफर कर अपनी कर्तव्यों का इतिश्री समझते हैं।जबकि नियमानुसार एम्बुलेंस मिलने तक बच्चे की चिकित्सा करते रहना धरती के इन देवताओं का फर्ज बनता है।लेकिन ऐसा नही हुआ और सुशासन सरकार की चिकित्सीय व्यवस्था का गिरजेश चन्द्रवँशी का 3 वर्षीय पुत्र बलि चढ़ गया।यही नही सुशासन सरकार की चेहरा को यहां के अस्पताल कर्मचारियों ने उस समय और दागदार कर दिया जब अपने

जिलाधिकारी ने की त्वरित कार्यवाई

स्वास्थ्य प्रबंधक को किया निलंबित

नवीन कुमार
जिलाधिकारी, जहानाबाद

जहानाबाद के जिलाधिकारी नवीन कुमार ने मामले को संज्ञान में आते ही घटना की जांच एडीएम अरविंद कुमार मंडल से करायी तथा जांच के आधार पर सिविल सर्जन डॉ विजय कुमार सिन्हा सहित तमाम दोषियों से स्पष्टीकरण प्राप्त कर त्वरित कार्यवाई करते हुए अस्पताल प्रबन्धक कुणाल भारती को निलंबित कर दिया।साथ ही साथ ड्यूटी में तैनात दो चिकित्सक और चार एएनएम के विरुद्ध विभागीय कार्यवाई की अनुशंसा कर दी।डीएम नवीन कुमार ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि इस मामले में ड्यूटी पर तैनात दोनों चिकित्सक, पारा मेडिकल स्टाफ और डीपीएम को दोषी पाया गया है।चिकित्सक जब बच्चा आया उसे आकस्मिक सुविधाएं जो उपलब्ध उनके द्वारा कराना चाहिए था वह नही कराया।एएनएम जिनके द्वारा ऑक्सीजन आदि की सुविधाएं उपलब्ध करानी चाहिए थी वह नही करायी गई।चुकि ऐसे मामलों में समय बहुत कम होता है,अस्पताल प्रबन्धक द्वारा अविलम्ब एम्बुलेंस सुविधा उपलब्ध कराना चाहिए था वह नही कराया जा सका।ऐसे में जिन पर हमारे स्तर से कार्यवाई होनी चाहिये वह किया गया है।डीपीएम को निलंबित करते हुए एक माह के सूचना पर बर्खास्त करने की कार्यवाही की जाएगी।चिकित्सक सहित अन्य कर्मियों पर कार्यवाई के लिए विभाग को अनुसंशा की गई है।अस्पताल परिसर में एम्बुलेंस होते हुए भी एम्बुलेंस उपलब्ध नही कराई गई।इसके लिए एम्बुलेंस सुपरवाईजर पर भी कार्यवाई की जाएगी।

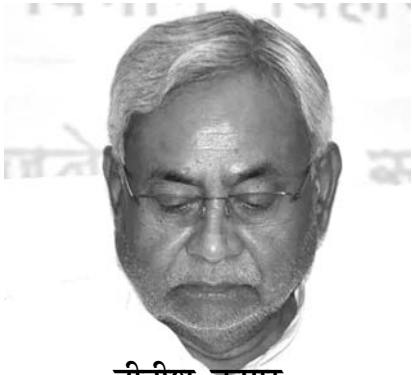

नीतीश कुमार
मुख्यमंत्री, बिहार

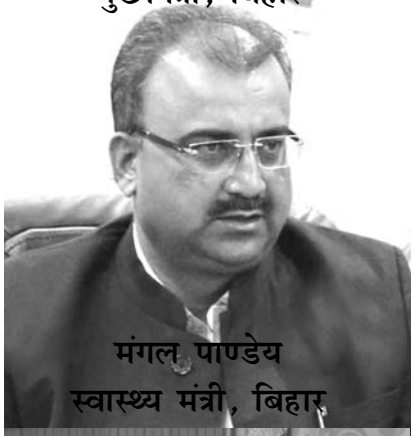

मंगल पाण्डेय
स्वास्थ्य मंत्री, बिहार

संजय कुमार
प्रधान सचिव, स्वास्थ्य विभाग, बिहार सरकार

डीएम की समीक्षा बैठक में सीएस करते रहे बेहतरीन स्वास्थ्य के दावे

दूसरी ओर अस्पताल में फर्श पर घंटों तड़पती रही महिला

14 अप्रैल को एक ओर जहाँ गया जिले के सिविल सर्जन बृजेश कुमार सिंह, जिलाधिकारी के द्वारा आहूत लॉक डाउन की स्थितियों सम्बन्धित समीक्षा बैठक में जिले में बेहतरीन चिकित्सा व्यवस्था के दावे कर रहे थे,वही दूसरी ओर जिला मुख्यालय स्थित प्रभावती अस्पताल में ईलाज के आस में जिले के डुमरिया प्रखण्ड के कोल्हुवार पंचायत के मटहा गांव निवासी अरुण दास की गर्भवती पत्नी उर्मिला देवी लगभग 4.20 घण्टे तक फर्श पर तड़पती रही वहीं डेल्हा निवासी दिव्यांग अजय की गर्भवती पत्नी जिसका बच्चा गर्भ में ही मृत हो गया था।एक यूनिट ब्लड ओटो में ही चढ़ावता हुआ अस्पताल पहुँचा चिकित्सको द्वारा अधिक रक्तत्सव हो जाने की बात कही गई।परिजनों ने चिकित्सकों द्वारा मांग किये गए रक्त की भी व्यवस्था की बात कही लेकिन चिकित्सकों ने एक न सुनी ।चिकित्सकों की रवैये से परेशान जब वह वेहतर इलाज के लिए अपने मरीज की बाहर ले जाने लगा तो दो-दो एम्बुलेंस अस्पताल परिसर में लगे होने के वावजूद पीड़ित को मुहैया नही कराया गया। यह नही की शहर के दूसरे अस्पतालों की स्थिति इस से इतर थी।जयप्रकाश नारायण अस्पताल की स्थिति तो इससे भी बदत्तर थी।वहाँ के कर्मी तो चोरी और सीनाजोरी भी करने पर आमादा थे।जनता के टैक्सो के पैसों पर पलने वाले यहां के कर्मी यहाँ ईलाज के लिए आई जनता को ही कीड़े-मकोड़े की संज्ञा दे रहे थे।विशुनपुर की अंजू देवी की माने,तो 13 अप्रैल को रात्रि में पेट दर्द की शिकायत पर अपनी सास को ईलाज ले लिए जेपीएन अस्पताल में आधी रात को आई लेकिन इनकी समुचित इलाज करने के बजाय वहाँ बैठी नर्स अनमने मन से बिना पर्ची बनाये दवा दी और कहती रहीं की सब केवल कीड़ा-मकोड़ा आकर भर जाता है।सुबह दर्द अधिक बढ़ने पर ईलाज के आभाव में उनकी सास की मृत्यु हो गई।अस्पताल कर्मियों ने अपनी गलती छुपाने के लिए सुबह में आनन-फानन में मामले को रफा दफा करने के उद्देश्य से पर्ची बनाया। चिकित्सकों और कर्मचारियों को जल्द कागज बनाने सम्बन्धी बातों को लेकर परिजन और अस्पताल कर्मियों में कहा-सुनी भी हुई। इसकी सूचना परिजनों ने कोतवाली थाने को दी।कोतवाली पुलिस द्वारा परिजनों को काफी समझाने बुझाने के बाद मामले को शांत कराया गया और शव को पुलिस को सौप दी गई।मानवता को शर्मसार कर देने वाले इस घटना के वावजूद

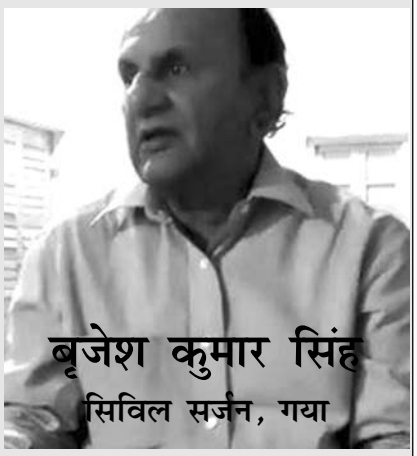

बृजेश कुमार सिंह
सिविल सर्जन, गया

जिले के चिकित्सा प्रमुख द्वारा जिले के प्रशासनिक कप्तान को बेहतर चिकित्सा व्यवस्था की जानकारी देना ऑख में धूल झोंकने के समान है।दूसरी ओर प्रभावती अस्पताल में गर्भवती उर्मिला देवी की दर्द से तड़प और उनके परिजनों द्वारा सरकारी पर्ची लेकर इधर से उधर व्यग्रता से घूमना और हर आते जाते भले-मानुष की ओर मदद की भीख मांगती हुई बस एक ही रट लगाए रखना कि ष्कोई एकरा बचा ल बाबू न तो तड़पते तड़पते जान चल जतई। वहाँ हर उपस्थित मानवों के मानवता को झकझोर रही थी।और लोगों ने उसकी मदद का प्रयास भी किया। लेकिन इसका भी कोई असर नही पड़ रहा था तो बस चिकित्सकों पर। चिकित्सको ने खून की कमी बताते हुए इलाज नही की।जब परिजनों ने खून देने की बात कही तब इलाज करने से मना करते हुए पटना रेफर कर दिया।बाद में एम्बुलेंस के लिए भी घण्टों इंतजार करना पड़ा।

अभिषेक सिंह
जिलाधिकारी, गया

कुछ बात है कि हस्ति बनती गई तुम्हारी...

समाज में घटित घटनाओं का वीडियो बनाना और उसे सोशल मीडिया पर वायरल कर देना ही कुछ लोग अपनी सामाजिक दायित्व समझते हैं।लेकिन उनमें से ही कुछ खास विरले होते हैं, जो ऐसी घटनाओं में अपनी अलग भूमिका निहित कर,समाज मे अपनी अलग पहचान बना जाते हैं।इनके द्वारा सामाजिक क्षेत्रों में एक-एक कर किये गए कार्यो और उन कार्यो के बदौलत बनाई गई पहचान ही, ऐसे लोगों को समाज से लेकर सरकारों तक सम्मान दिलाने की कार्य करती है। उस दिन भी कुछ ऐसा ही हुआ।जहानाबाद के सड़को पर अपने लॉकडाउन के बीच दूध मुँहे बच्चे को बिलखती हुई लेकर जाती माँ की वीडियो तो बहुतों ने बनाया,लेकिन आगे बढ़ कर उसके दर्द को कम करने की जहमत किसी ने भी नही उठाई।आगे आया तो राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित जिला का वही दम्पत्ति जिसका सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्र में अपनी एक अलग पहचान है।शायद इस दम्पति ने अपने ऐसे ही कृत्यो से अपनी अलग पहचान बनाई है,और सरकारी संस्थाओं से लेकर,कई गैर सरकारी संस्थाओं तक से अभी तक अनेकों सम्मान भी प्राप्त किया है। ज्योति नामक संस्था के संचालक डॉ सुनील कुमार सुनील और बिहार भाजपा की जानी-मानी नेत्री इंदु कश्यप ने न केवल पीड़ित परिवार और बच्चे के शव को 30 किलोमीटर दूर उसके घर पहुचवाया बल्कि अगले दिन साहोपुर पहुँच पीड़ित परिजनों को आर्थिक मदद और राहत सामग्री भी उपलब्ध कराया।इंदु कश्यप ने घटना पर दुखद प्रकट करते हुए तथा सांत्वना देते हुए कहा कि दोषियों को किसी भी स्थिति में बख्शा नही जाएगा।आप यकीन रखिये नीतीश-मोदी जी की सरकार में न तो किसी निर्दोष को फंसाया जाता है न ही बख्शा जाता है।इनके साथ भाजपा के जिला मंत्री प्रमोद कुमार के अलावे बिट्टू किंग भी थे।जेडीयू के पूर्व जिलाध्यक्ष जयप्रकाश चन्द्रवँशी ने भी पीड़ित परिवार से मुलाकात कर हर सम्भव सहायता का भरोसा दिलाया, लेकिन घटना के लगभग 1 सप्ताह बीत जाने के बाद भी सांसद सहित सरकार का कोई भी प्रतिनिधि पीड़ितों की सुध लेने नही आया।

मृत दूध मुहे बच्चे की लाश अपने गाँव शाहोपुर ले जाने के लिए शव वाहन की माँग करने पर वहां खड़े एम्बुलेंस के ड्राईवरो ने 4000 से 5000 हजार रुपये माँगने लगे और वहाँ उपस्थित अस्पताल कर्मी मूकदर्शक हो गए।तब पैसे के आभाव में गोद में बच्चे को लेकर चीत्कार करती हुई माँ, लगभग 30 किलोमीटर दूर अपने घर के लिए पैदल ही चल दी। माँ की ममता का चीत्कार ऐसा की किसी का भी दिल दहल जाये परन्तु ऐसे घटनाओं को अक्सर देखने वालों अस्पताल कर्मियों का दिल नही पिघला। यह संजोग ही कहा जायेगा कि अभी वह अस्पताल से कुछ कदम ही दूर निकला होगा कि जिले के जाने माने सामाजिक कार्यकर्ता और बिहार की जानी-मानी भाजपा नेत्री जो राज्य में राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित शायद एकलौते दम्पति भी हैं।डॉ सुनील कुमार सुनील और इंदु कश्यप लॉक डाउन में गरीब परिवारों के बीच कहीं से राहत सामग्री वितरित कर राजाबाजार स्थित अपने आवास जा रहे थे।तभी पीड़ित परिवार की चीत्कार ने उन्हें सहसा अपनी ओर आकर्षित कर लिया।गाड़ी रोक सुनील दम्पति ने घटना की जानकारी प्राप्त की।माँ की चीत्कार से इंदु कश्यप का ममत्व भी जागृत हो गया। भावुक दम्पति नेअपनी गाड़ी से पीड़ित परिवार को घर पहुँचवाया यही नही बाद में पीड़ित के गांव भी गए। इनके इस कृत्य ने जहानाबाद जिले और मानवता की लाज रख ली। दूसरी ओर मगध प्रमंडल तथा गया जिले का मुख्यालय गया, स्थित शहर में अवस्थित मगध मेडिकल कॉलेज अस्पताल तथा प्रभावती और जयप्रकाश नारायण अस्पताल ने सरकार की लॉक डाउन की तैयारी और स्वास्थ्य सेवा की पोल उस समय खोल कर रख दी। जब रौशनगंज थाना क्षेत्र की एक महिला के मृत्यु के बाद उसके परिजनों ने एम.एम. सी.एच के कर्मियों पर दुष्कर्म की शिकायत मीडिया और पुलिस में की।यही नही राज्य की चिकित्सा व्यवस्था की गाथा हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता के समान है।14 अप्रैल को लॉक डाउन के कारण येनकेन प्रकारे न जिले के डुमरिया प्रखण्ड के कोल्हुवार पंचायत के मटहा गाँव निवासी अरुण दास की गर्भवती पत्नी उर्मिला देवी और धनियां बगीचा की एक पीड़ित रेखा देवी चिकित्सीय सहायता के लिए प्रभावती अस्पताल में घन्टो जमीन पर तड़पती रही।लेकिन संवेदनहीन चिकित्सा कर्मियों के कान पर जु तक नही रेंगें।हाँ अलबत्ता दूसरी ओर जिलाधिकारी अभिषेक सिंह की समीक्षा बैठक में जिले के सिविल सर्जन डॉ ब्रजेश कुमार सिंह लॉकडाउन में जिले में बेहतरीन चिकित्सा व्यवस्था की दावे करते रहे।इस बैठक में डीडीसी किशोरी चौधरी,सहायक समाहर्ता के.एम अशोक अगर आयुक्त सावन कुमार सहित कई विभागों के पदाधिकारी उपस्थित थे।13 अप्रैल के रात में आई विशुनपुरा निवासी अंजू देवी की सास की भी अहले सुबह इलाज में लापारवाही के कारण मौत हो गई। ये हाल राज्य के उन जिलों की हैं जहाँ के विधायक सरकार में मंत्री के रूप में मंत्रिमण्डल की शोभा बढ़ाते हैं। ●

तबलीगी जमात ने किया भारत को तबाह

● संजय कुमार सिन्हा

केन्द्र सरकार की शुरुआती गलती ने भारत में कोरोना को आने का मौका दे दिया, अगर सरकार विदेशों से आने वाले लोगों पर सख्ती दिखाती तो चिटियाँ कलाईयाँ गर्ल कनिका कपूर सहित अनेक लोगों का ऐयरपोर्ट पर निकास आसान नहीं हो पाता और कोरोना भारत में प्रवेश ही नहीं कर पाता था। जो कि पुरे विश्व के लिए एक उदाहरण और हमारे ऋषि मुनी, चरक पंतजलि धनवंतरि का औषधीय गुणों से भरा हुआ देश होने का एक बार पून: गौरव दूनियाँ के देशों को देखने व समझने को मिलती। भारत को कही न कही वीआईपी संस्कार धक्का देता रहा है। दूसरा पक्ष एक और है कि भारत में सरकार किसी की भी हो पर कुछ खास संप्रदाय के लिए यहाँ विशेष नियम व छूट रहती है। ऐसे इस अलबेले देश में संप्रदाय से अलग आर्थिक व जाति के हिसाब से भी लोंगों को छूट प्रदान की जाती रही है। हम अब बात करें तब्लीकी जमात की तो उसमे हजारों की संख्या में आये हुये देश के बाहर के जमाती वो कैसे भारत में पर्यटक वीजा पर आ गये? उन सभी ने यहाँ आकर अपने धार्मिक जलसा मे शरीक हुये। भारत सरकार देखती रह गई। मजे की बात है कि ये जमाती जलशा कोई गाँव या छोटे शहर में नहीं की थी। ये भारत की राजधानी दिल्ली के लुटीयन जोन से मात्र ढ़ाई किलो मीटर दूर स्थित निजामुद्दीन औलिया में। यहाँ से मात्र दो ढ़ाई किलो मीटर स्थित भारत सरकार की महत्पूर्ण बीएसएफ, सीआरपीएफ, आईटीबीपी, सीआईएसएफ, सीबीआई जैसे महत्पूर्ण संस्थान के मुख्यालय मौजूद हैं। जो कि भारत सरकार के गृह मंत्रालय की रीड है और भारत देश भी इसी के भरोसे चलती हैं। आप थोड़ा सोचिये क्या इस तब्लीकी मुख्यालय को समझाने देश के सुरक्षा सलाहकार श्री अजित डोभाल को जाना पड़ता है वो भी मध्य रात्री में? ये एक छोटा या मझौला विषय नहीं है? यह एक गंभीर विषय है? किसी भी धर्म के अगुआ हो मुल्ला हो या पंडीत, पादरी हो या दलाई। इन्हें सिर्फ पुलिस थाने का थानेदार फोन कर के इनकी सभी जानकारी ले सकता हैं। इससे ज्यादा की जरुरत नहीं पड़नी चाहिये थी।अगर पुलिस थाने दूर रहने के कारण पड़ भी जाती है तो एक सीनियर हवलदार अपने एक सहयोगी सिपाही जो कि एक छह फुट का डंडा लेकर जाये और इनकी ऐसी - तैसी कर दे सकता है। किसी बड़े पुलिस अधिकारी के साथ जाने की कोई जरुरत नहीं है, क्यों?? क्योंकि कोई धार्मिक अगुआ जो अपने समाज देश में अपने संप्रदाय के लोंगों को संस्कार, अच्छी बातें सीखाने का निशुल्क ठेका लिये हुये होते है। हम सभी धर्म के लोंग उसे उसी नातें समान्न देते हैं। ऐसे लोंग भला देश के दुश्मन थोड़े ही हो सकते हैं? लेकिन बात कुछ देश हित नहीं लग रही थी तभी तो मिस्टर डोभाल को मरकजे जमात के दरवाजे जाना पड़ा? मजे की बात देखिये, लिबरल देश भारत उसने अभी 20 दिन बाद भी मौलाना साद को गुलाब के साथ गिरफ्तार नहीं कर सका। ये देश में एक मजाक नहीं है?? अब हमें समझना होगा मजाक क्यों हो सकता है? ऐस-ऐसे कितने इनसे बड़ा इस देश में भगौरा व बदमाश गिरफ्तारी से बाहर है? तो मौलाना साद तो फिर भी एक ऐसे संस्था के रहनुमा है जो समाज के भटके हुए लोंगों को राह दिखाती हैं? लेकिन नहीं अभी देश और दूनिया पर संकट आई हुई है। इसलिये मौलाना साद को पकड़ना तुरंत

कानून की धज्जियां उड़ाकर हुआ नालंदा में मरकज का आयोजन : आर.के. सिन्हा

● रणजीत कुमार सिन्हा

पूर्व राज्य सभा सांसद आर.के. सिन्हा ने नालंदा जिले में हुए मरकज आयोजन पर कड़ी निंदा करते हुए कहा कि अभी तक बिहार में कोरोना से लड़ाई अच्छी तरह लड़ी जा रही थी। जिस प्रकार, पूरे विश्व में भारत सबसे अच्छी लड़ाई लड़ रहा था, उसी प्रकार बिहार देश के सभी प्रदेशों में सर्वोच्च स्थान पर ही था। लेकिन, कोरोना से पोजिटिव मरीजों की संख्या में अचानक वृद्धि होने के कारण अब यह संख्या 83 हो गयी है, जिसमें 9 पोजिटिव मरीज तो मुंगेर जिला के एक ही परिवार में मिले हैं। लेकिन, इस बीच कल एक बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण घटना ध्यान में आयी है कि लगभग साढे छह सौ से ज्यादा जमातियों ने लॉकडाउन के दौरान नालन्दा में एक मरकज का आयोजन किया जिसमें बिहार और झारखंड के अनेक जिलों से जमाती आये। इस आयोजन के लिए न तो प्रशासन की पूर्वानुमति ली गई न ही पुलिस को या प्रशासन को इसकी सूचना दी गयी। यह बहुत ही गंभीर मामला है। माननीय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जी के गृह जिला नालन्दा में इसको आयोजित करने में सुनियोजित षडयंत्र करने की बू आ रही है। तबलीगियों के मरकज तो बिहार के हर जिलों में

है। पटना, किशनगंज, कटिहार, पूर्णिया, दरभंगा, मधुबनी, मुजफ्फरपुर आदि सभी जगहों में तो बड़ी-बड़ी सम्पतियां फैली हुई हैं। फिर नालन्दा ही क्यों चुना गया और पंडाल लगाकर और कानून-व्यवस्था की धज्जियां उड़ाकर यह काम किया गया। यह एक गंभीर मामला है। इस पर सख्त से सख्त कारवाई की जानी चाहिए और दोषियों को किसी भी सूरत में बख्शा नहीं जाना चाहिए। लेकिन, अभी भी यदि सोशल डिस्टेंसिंग का ध्यान रखा जाय और तबलीगी जमात के लोगों के भ्रमण के ठीक स्थानों का पता लगा करके, उन सबको आइसोलेशन किया जाये जिससे जमाती मिले-जुले हैं तो स्थिति पर नियंत्रण हो सकता है। उन्हें बीमारी के खतरे के बारे में भी बताया जाय और जागरूक किया जाये। कोरोना हिन्दू, मुसलमान को नहीं पहचानता, उसे तो बस संक्रमण का वाहक एक जिन्दा शरीर चाहिए। इस मामले में मैं फिल्मस्टार सलमान खान को धन्यवाद देना चाहता हूँ । उन्होंने अच्छा बयान दिया है। उनके 9 मिनट के विडियों को ज्यादा से ज्यादा प्रसारित करके लोगों को सुनाना चाहिए कि उन्होंने किस प्रकार जागरूक किया है अपने कौम को, कि वे कोई गलतफहमी में न आये और डाक्टरों और नर्सो के साथ अच्छा व्यवाहर करें और अपना ईलाज करायें। जनधन खाता में प्रधानमंत्री ने सभी गरीबों को पांच सौ रूपये महीने भेज तो दिये हैं लेकिन, इन पांच सौ रूपयों को लेने के लिए बैंको में लम्बी कतारें लगाई जा रही है जिससे कि सोशल डिस्टेंसिंग की धज्जियां उड़ रही है। कहीं ऐसा नहीं हो कि पांच सौ रूपये के चक्कर में अनेकों गरीब संक्रमित हो जायें और अपनी जान गवां बैंठे। अतः पुलिस प्रशासन, स्वयंसेवी संस्थाओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं सब का दायित्व है कि सोशल डिस्टेंसिंग का और पूर्ण लॉकडाउन का सख्ती से पालन किया जाये।

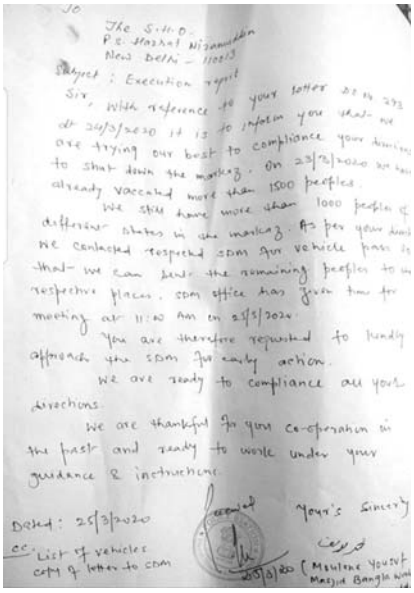

To
The S.H.O.
P.S. Hazrat Nizamuddin
New Delhi - 110013

Subject : Execution report

Sir,
With reference to your letter dt 23/3/2020 it is to inform you that we are trying our best to compliance your directions to shut down the markaz. On 23/3/2020 we have already vaccated more than 1500 peoples.
We still have more than 1000 peoples of different states in the markaz. As per your directions we contacted respected SDM for vehicle pass so that we can send the remaining peoples to their respective places. SDM office has given time for meeting at 11:00 AM on 25/3/2020.
You are therefore requested to kindly approach the SDM for early action.
We are ready to compliance all your directions.
We are thankful for your co-operation in the past and ready to work under your guidance & instructions.

Dated: 25/3/2020
Yours Sincerely
25/3/20 (Maulana Yousuf)
Masjid Bangla Wali

cc. List of vehicles
copy of letter to SDM

चाहिये था कि उसके पकड़े जाने से वो सभी असलीयत बाहर आ सकता था और वो खुले में मिडिया के सामने अपने जमाती को तुरंत अपना मेडिकल जांच करने का अनूरोध या आदेश दे सकता था। जो अभी बीस दिन से अधिक हो जाने पर भी सामने नहीं आना एक चौकाने और चिढ़ाने जैसा लगता है। इन सभी बातों से लगता है इस देश में कुछ न कुछ मेहमानबाजी छूट जरुर प्रदान की जाती है। सरकार एक घंटे के अंदर किसी जमाती या वीआईपी को पकड़ कर सामाजिक प्रताड़ना सहित जेल भेज ना चाहिये था जो हो नहीं सका। ये नाजूक मामला है। ये मानव जीवन से संबंध रखता है। आज तब्लीकी के कारण कोरोना के पैसेंट औसतन काफी बढ़ गये। आज कुछ खास बुद्विजिवि को आगे आना चाहिए था, मौलाना साद को अच्छा भला कहना चाहिये था।

इससे समाजिक गलानी ऐसे मौलानाओं को होता जो अलग अलग प्रदेशों के मंस्जिद में अभी भी लोंगों को छुपा कर रखे हुए हैं। इन्हें जब पुलिस हाथ जोड़कर उनके स्वास्थ का हवाला देते हैं और अपने

साथ ले जाने की बात करते हैं तो वैसे पुलिसवालों और स्वास्थकर्मी के साथ मारपीट करने पर उतावले हो जाते हैं। सबसे आर्शचय तब होता है जब ऐसे लोगों को उनके समाज का खुला समर्थन मिलता है। आज कोरोना का केश हजार मे ही होता जो दश हजार के पार है। क्या इन जमातियों के बच्चें बड़े बड़े कॉलेज विश्वविघालय में नहीं पढ़ते? क्या इनके बच्चें साँईस विज्ञान नहीं पढ़ते? क्या इनके मित्र किसी और संप्रदाय के नहीं होते? अगर ऐसा होते होगे तो वो बच्चें क्या शर्म से नहीं झुक जाते होगें? कितनी शर्म आती होगी जब ऐसे जमाती का फोटो बिडियों खबरें आये दिन पेपर पत्रिका टेलिविजन पर आता है कि दिल्ली के द्वारका में कुछ तब्लिकियों नें नर्स के सामने नंग धरंग खड़ा हो गए। बवाना में तब्लिकियों ने कोरीडोर में शौच कर दिया। कही और बोतल में पैशाब कर के रोड पर फेक दिया। कोराइनटाईन के लिए डीटीसी के बस से ले जाते वक्त बस में और बाहर थूक फेकते रहें। केरला में ईलाज के दौरान तब्लिकियों ने स्वास्थकर्मीयों के शरीर पर थूक दिया। इन्दौर में कोरोना चेक करने गये डाक्टर -पुलिसवालों को स्थानीय लोगों ने घेर कर जख्मी कर दिया। मुरादाबाद यूपी में जमातियों के संर्पक में आये व्यक्ति की मौत के बाद उसके दूसरे भाई जो कोरोना संक्रमित को कोरोनटाईन के लिए गये डाक्टर व पुलिस बल पर छत से महिलाओं के दूरा ईट पथ्थर से मारना शर्म नहीं महसूस कराता? वो दिन दूर नहीं जब स्वास्थकर्मी हाथ खड़ा कर देगे और साफ शब्दों में कहेगे- मै नहीं जाता किसी तब्लिकी जमाती या मरकजी को ईलाज करने। इसलिये राज्य सरकारें या केन्द्र सरकार इस ओर ध्यान दे एवं गंभीरता से चिंतन करें? और विशेष छूट एवं दमादगिरि बंद करें। जैसे ईमान्दारी से बोलेते- सबका साथ सबका विकास, उसी तरह- सबको न्याय सबको बराबर।●

बेहाल दिल्ली को सहारा पुलिस व स्वस्थकर्मी से

आरएसएस की संस्था सेवा भारती कर रही गरीबों की सेवा

● संजय कुमार सिन्हा

दिल्ली सरकार ने यूपी-बिहार के गरीब मजदूर के लिए कोई योजना नहीं बना पा रही है। आम आदमी पार्टी के मुखिया अरविंद केजरीवाल ने चुनाव के समय सबसे ज्यादा इन्हीं वर्ग से सबसे ज्यादा उम्मीद किया था, जिस पे ये वर्ग खड़े भी उतर थे और तिबारा अरविंद केजरीवाल को मुख्य मंत्री के गद्दी पर आसन भी किया। लेकिन आम आदमी पार्टी ने अपने आदमीयों के दूरा गलत प्रचार करके कि आनंद विहार बस स्टैंड से बसें यूपी व बिहार के लिए जा रही है, जिन्हें जाना है वो अपने घर जा सकते हैं। ऐसी बातें का प्रचार कर और इधर कफ्यू के स्थिति में भी डीटीसी की बसें आनंदविहार बस स्टैंड के लिए चला कर जिससे काफी संख्या में मजदूर गरीब घर जाने के लालच में आनंद विहार चले गए। वहाँ उनकी कोई मदद करने को तैयार नहीं था फिर चौबीस घंटे बाद जाकर यूपी सरकार ने कुछेक बसों से लोगों को यूपी के शहर या बिहार के बाँडर तक छोड़ा। कुछ मजदूर तो पैदल या ठेला गाड़ी से ही अपने घर जाने के लिए चल पड़े, जिनमें कुछ की भुख प्यास से मौत भी हो गई। दिल्ली में रोजहा मजदूर, मिस्त्री काम नहीं रहने की स्थिती में उन्होंने ठेले- रेड़ी भाड़े पर लेकर सब्जी बेचना शुरू कर दिया है। कुछ मध्यम वर्गीय नौकरी पेशा करने वाले अपने नौकरी के लिए चिंतित और उदास भी है। दिल्ली में एक बात खास यह है कि जो लोंग पुलिस वाले को हमेंशा से खराब व वसूली के लिए बदनाम करते थे वो आज पुलिस की दिल से इज्जत कर रहे है। कारण भी जायज है जो काम दिल्ली सरकार को करने चाहिये थे वो काम अब दिल्ली पुलिस कर रही है।जैसे गरीबों को सड़क पर खाना खीलाने की बात हो, पैंसेंट को हाँस्पीटल छोड़ना हो या जरुरत की समान मुहैया कराने हो , ये सभी काम अभी पुलिस के जिम्में है। हाँ दिल्ली सरकार के कुछ आम आदमी मुहल्ला किल्निक स्वास्थ सेवा का काम बखुबी कर रही है।

गौरतलब हो कि दूसरी तरफ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की इकाई सेवा भारती जो

सेवा भारती दिल्ली 24X7
कोरोना हेल्पलाइन- 8010066066

कभी दिल्ली से शुरु होकर पुरे देश में सेवा का काम करती है वो अभी कोरोना वाइरस ब्वअपक 19 के महामारी में दिल्ली के जरूरतमंद लोंगों के लिए अपना पूरा जोश खरोश के साथ गरीब लाचार परिवार के लिये आगे खड़ी है। दिल्ली स्थित संघ की कार्यालय झंडेवालान से रोजाना तीस हजार से अधिक लोगों के लिए पक्के हुये भोजन को पैक कर दिल्ली के विभिन्न हिस्सों में गरीबों मजदूर और असहाय लोंगों को खाना खिलाने का मुफ्त जिम्मा संभाल लिया है। जिससे कोई भी एक भूखा न रहे न सोये। दूसरी तरफ किराये या अपना खुद का मकान में रहने वाले मजदूर गरीब जिनका काम बंद हो गई है, उनके लिए भी राशन की मुफ्त वितरण का काम कर रही हैं। इस व्यवस्था में सभी नगर जो जिले के अंदर है, उन्होंनें इसकी जिम्मा संभाले हुए हैं। सेवा भारती ने इस समय देशा में गरीबों अमीरों सभी के लिए प्रतिकूल परिस्थितियों में संघ के उनके हजारों स्वयंसेवको ने इसका जिम्मा संभाल रखा है।

कोरोना वायरस को फैलने से रोकने के लिए पूरे देश में सवबाकवूद है । सरकार और समाज के सभी लोग अपनी अपनी भूमिका में एकजुट होकर इसका सामना करने में लगे हुए हैं। 'दिल्ली' में कोई भी व्यक्ति या वर्ग इस परिस्थिति में किसी भी प्रकार की सहायता चाहता हो तो 'सेवा भारती दिल्ली' के द्वारा बनाए हुए सहायता केंद्र से सम्पर्क कर सकता है ।इस न.पर चिकित्सक (डॉक्टर) व हमारे कार्यकर्ता आपको यथायोग्य परामर्श देने के लिए 24 घंटे उपलब्ध हैं।साथ ही यह केंद्र 'दिल्ली' के प्रत्येक हिस्से के अपने कार्यकर्ताओं (वालंटियर तंत्र) के माध्यम से आपको यथासम्भव सहायता प्रदान करने का प्रयत्न करेंगे। ●

रद्दी से बनाते हैं महल, खुद रहते हैं झोपड़ी में

● डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह

आज हम आपको एक ऐसे शख्स के हुनर से रु-ब-रु कराने जा रहे हैं, जिसके हुनर का हर कोई मुरीद हो जाता है। बिहार की राजधानी पटना से 28 किमी पूर्व खुसरूपुर के कुर्था गांव के हनुमान मंदिर के पास एक गरीब मजदूर रघुवीर चौधरी का 16 वर्षीय बेटा सोनू कुमार के पास ऐसी ही एक प्रतिभा है। जिसके आर्किटेक हुनर का आज हर कोई मुरीद हो चुका है। सोनू का जन्म 28 मार्च सन 2003 को एक ऐसे गरीब परिवार में हुआ, जहां हर तरफ गरीबी की दड़कती दिवारें थी, घर तो था पर छत नसीब नहीं थे। जहां अच्छे कपड़े पहनना व अच्छे पकवान खाना दूज के चांद जैसा ही था। जहां हर तरफ बेबसी थी, तंगहाली व गरीबी थी। लेकिन कहते हैं न कि कीचड़ में ही कमल खिलता है। ऐसा ही कुछ सोनू के साथ भी हुआ और धीर-धीरे कर सोनू की कला निखरती गई और महज 17 साल की उम्र में ही वो एक परिपक्व कलाकार के रुप में क्षेत्र में स्थापित होने लगे। सोनू गरीबी के कारण कला के लिए को कागज और पेंट और पेंसिल तक नहीं खरीद पाते थे। इसके बावदूद सोनू ने कला के प्रति अपने जज्वा को मरने नहीं दिया और रद्दी से ही कलाकर्म में जुट गए। सोनू के पिता रघुवरी चौधरी ने हिम्मत नहीं हारी। हर परिस्थिति का इन्होंने डटकर मुकाबला किया और न केवल सोनू का साथ दिया बल्कि हौसला अफजाई भी करते रहे। गरीबी, मजदूरी और पांव टूट जाने के बाद बेहाल होने के बाद भी पिता ही सोनू के संबल बने रहे। सोनू पढ़ाई में भले ही तेज-तर्रार नहीं है पर उसमें जो आर्किटेक का हुनर है उसे देखकर आज हर कोई

सोनू की प्रशंसा ही करता है। सोनू की सबसे बड़ी खाशियत यह है कि वह एक बार किसी मॉडल को देख व समझ लेता है तो उस मॉडल को अपने कलात्मक आर्किटेक हुनर के जरिये रद्दी से ही उसे हु-ब-हु उतार देता है। अपने घर या कबाड़ी में पड़े रद्दी समानों से ही इतना खूबसूरत बना लेता है कि देखने वाले देखते ही रह जाते हैं। सोनू आठवी क्लास से ही कागजों पर डिजाइन बनाया करता था। फिर एक दिन फतुहा के कार्टूनिस्ट अमरेन्द्र कुमार की नजर इस बच्चे पर पड़ी। फिर क्या था। सोनू की गुरु की तलाश खत्म हो गई। कार्टूनिस्ट गुरु ने धीरे-धीरे सोनू की कलात्मक प्रतिभा में रंग भरने शुरु कर दिए, गुरु तराशने से सोनू की प्रतिभा और निखर गई। अब सोनू एक परिपक्व कलाकार बन चुका है और अपने चमतकृत करने वाली प्रतिभा से लोगों को हैरत में डाल रहा है। चाहे कोई भी मिनार हो, माडल हो रद्दी को सहयोग से सोनू उसे बनाकर प्रस्तुत कर देता है। सोनू ने अब तक सैंकड़ों मॉडल बनाए हैं लेकिन दुर्भाग्य से साधनहीनता के कारण उसे सहेज नहीं पाए हैं। कभी रखने के लिए जगह कम पड़ जाती है तो कभी छत से टपकती हुई बारिश की बूंदे सोनू की बनाई कलाकृति की सूरत ही बिगाड़ देती हैं।

बहरहाल सोनू का यही सपना है कि एक दिन वह आर्किटेक की अपने इस हुनर से देश और दुनिया में एक अलग पहचान स्थापित करे। सोनू अपनें माता-पिता को वो सुख प्रदान करना चाहते है, जो हर मां-बाप अपनें बच्चों से उम्मीद करते हैं। यह और बात है कि इस वक्त सोनू गरीबी के उस चार दिवारी में जकड़ा हुआ है, जहां से निकल पाना इतना आसान भी नहीं है। सोनू कहते हैं कि मेरी इच्छा सबसे पहले पटना जंक्शन का माडल बनाने की है, इसके बाद बिहार को प्रमुख चीजों फिर देश और विदेश की महत्वपूर्ण स्थानों की। वो कहते हैं कि मेरे पास इतना धन नहीं कि मैं यह सब अपने बदौलत कर सकूं, इसलिए मैं अब इसके लिए स्पांसर की तलाश कर रहा हूं। कोई कंपनी या संस्था अगर स्पांसरशीप दे तो मैं और बेहतर तरीके से काम कर सकता हूं। ●

अमानवीय होता जा रहा मानव

● डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह

कोरोना वायरस का संक्रमण मानव सभ्यता के लिए खतरा बन चुका है। संक्रमण का दायरा बढ़ता ही जा रहा है। समूचा देश मानवीय दशष्टिकोण से गरीबों और पिछड़ों की सेवा करने में जुटा है। डाक्टर, नर्सें और स्वास्थ्य विभाग का हर वर्कर और पुलिस बल चुनौती से निपटने में लगा हुआ है। वायरस से जंग में देश को अल्प अवधि और दीर्घ अवधि वाले उपाय करने की जरूरत है। सामाजिक संगठन अपने संसाधनों का इस्तेमाल करते हुए जो भी सम्भव हो पा रहा है कर रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी हाल ही में सेवा में जुटे संगठनों के संबंध में कहा था कि इन संगठनों की तीन विशिष्टताएं हैं- मानवीय दशष्टिकोण, व्यापक पहुंच और लोगों से जुड़ाव तथा सेवा करने की मानसिकता, इसीलिए इन पर इतना विश्वास किया जाता है। भारत के सांस्कशतिक दशष्टिकोण में इहलोक और मानवीय जीवन का उसी प्रकार महत्व है जिस तरह परलोक और देवों का। मानव जीवन रहित पश्थ्वी का भी कोई महत्व नहीं है। समस्या यह है कि भारत को केवल कोरोना वायरस से ही जंग नहीं लड़नी बल्कि उसे गरीबी, बेरोजगारी अंधविश्वास से भी जंग लड़नी पड़ रही है। वैचारिक स्तर पर दूसरे विश्व युद्ध के बाद मानववादी भूगोल पर कई सिद्धांत विकसित हुए। भारत का इतिहास दया, सहनशीलता और सेवा से भरा इतिहास है। अपवाद स्वरूप संकट की घड़ी में कुछ ऐसी बातें सामने आ रही हैं जिससे भारत की छवि धूमिल हो रही है। भारत की जनसंख्या काफी अधिक है और संसाधनों का अभाव नजर आना स्वाभाविक है लेकिन हम इतनी बड़ी आबादी के साथ जानवरों जैसा व्यवहार नहीं कर सकते। उत्तर प्रदेश की योगी सरकार कोरोना वायरस से निपटने के लिए सराहनीय प्रयास कर रही है लेकिन दूसरी तरफ संवेदनहीनता से जुड़ी खबरें भी देखने को मिल रही हैं। बरेली नगर निगम के अमानवीय चेहरे का ताजा मामला उत्तर प्रदेश के बरेली से सामने आया है। निगम कर्मचारियों और फायर ब्रिगेड कर्मचारियों ने दूसरी जगहों से आए बच्चों, महिलाओं और पुरुषों को सैनिटाइज करने का नया तरीका ईजाद किया। सभी को जमीन पर बैठाकर उनको डिसइफैक्ट किया गया। उन पर बसें धोने वाले कैमिकल की बौछार की गई। जिसके बाद बहुत सारे बच्चों और लोगों ने आंखों में जलन की शिकायत की। फायर ब्रिगेड ने जिस पानी की बौछार की उसमें सोडियम हाइपोक्लोराइड जैसा कैमिकल भी मिलाया गया था। यह रसायन त्वचा और आंखों के लिए खतरनाक होता है। वीडियो वायरल होने के बाद पड़ताल की गई तो संबंधित कर्मचारियों के विरोद्ध कार्रवाई के निर्देश दिए गए हैं। हो सकता है कि यह कार्य अति सक्रियता के चलते हो गया हो लेकिन यह संवेदनहीन और अमानवीय तरीका है।

बिहार के सीतामढ़ी जिला में संक्रमण रोकने के लिए महाराष्ट्र से आए दो संदिग्धों की सूचना हैल्पलाइन पर देने के कारण एक युवक की पीट-पीट कर हत्या कर दी गई। और तो और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कोरोना से निपटने के लिए पीएम केयर्स फंड बनाने का ऐलान किया तो ठगों ने इससे मिलते-जुलते नाम से अकाउंट बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया है। इस तरह फर्जीवाड़ा करने की कोशिश की गई। मध्य प्रदेश के छत्तरपुर में लॉकडाउन के दौरान पुलिस कर्मियों को कुछ मजदूर सड़क पर मिले। उनमें से एक मजदूर के माथे पर लिख दिया गया कि 'मुझसे दूर रहना।' कई जगह पुलिस प्रशासन के रवैये पर भी सवाल उठ रहे हैं। अब जबकि अन्य राज्यों से मजदूर बिहार में अपने घरों को लौटने के लिए वहां पहुंच रहे हैं तो मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने घोषणा कर दी कि वापस आने वाले लोगों को 14 दिन के लिए एकांतवास में रहना पड़ेगा। संक्रमण रोकने के लिए उनका कदम तो सही है लेकिन बिहार सीमा पर पहुंचे मजदूरों को जानवरों के बाड़े की तरह बनाए गए जालीनुमा घरों में सामूहिक रूप से बंद कर दिया गया। इस तरह समूहों में इकट्ठा रहने से संक्रमण का खतरा काफी बढ़ गया है। अब मजदूर भूखे रखे जाने की शिकायतें कर रहे हैं। बिहार लौटने वाले मजदूरों को जानवरों की तरह ठूंस दिया गया, अगर इनमें एक को भी कोरोना पाजिटिव मिला तो क्या होगा। मजदूर अपनी ही सरकार द्वारा अपमानित महसूस कर रहे हैं। बिहार में डाक्टरों के पास एन-95 मास्क नहीं हैं, अस्पतालों में पूरी सुविधाएं नहीं। जब डाक्टरों के पास सुविधाएं नहीं तो मरीजों को क्या मिलेगा? विश्व स्वास्थ्य संगठन ने चेतावनी दे दी है कि यदि सतर्कता नहीं बरती तो भारत के गांव कोरोना का गढ़ बन जाएंगे। अब जबकि देश का हर क्षेत्र दिल खोल कर दान दे रहा है और मदद के लिए हाथ आगे आ रहे हैं तो फिर मजदूरों से अमानवीय व्यवहार की जरूरत ही नहीं है। सरकारों को प्रबंधन में कौशल दिखाना होगा। मनुष्य को तो हमेशा करुणा ने भिगोया है, परन्तु इस स्थिति में मनुष्य के लिए और मनुष्य के प्रति निष्ठुरता अपनाना अच्छा नहीं है। दूसरी ओर नास्तिकवादी द्वेषमूलक संदेश फैला रहे हैं। वे कह रहे हैं ''यह क्या चल रहा हैख्र?'' देखो कोरोना से मनुष्य डर गया है। हमें यह भी देखना होगा कि कोरोना की स्थिति में भारतीय सनातन जीवन शैली को फिर से अपनाया जाने लगा है। दुनिया के बड़े-बड़े राष्ट्राध्यक्ष नमस्ते करने लगे हैं। याद रखिये भारत को कोई बचाएगा तो वह मानव की करुणा ही बचाएगी, भारत को अगर कोई बचाएगा तो आध्यात्मिकता ही बचाएगी। इसलिए मनुष्य को अपना मानव धर्म निभाना ही होगा। ●

कोरोना से बचाव में लगे कमांडो को सैल्यूट

● **डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह**

भाई गुरुदास जी की एक अद्भुत रचना है, जिसमें इस बात का वर्णन किया गया है कि यह धरती किसके भार से पीड़ित है। धरती स्वयं पुकार करती है:- ''मैं उन पर्वतों के भार से पीड़ित नहीं हूं, जिनमें से कई तो इतने ऊंचे हैं कि लगता है आकाश को छू रहे हों। मैं अपनी गोद में बिखरी हुई वनस्पति अर्थात् वश्क्षों, पौधों और जीव-जंतुओं के भार से भी पीड़ित नहीं हूं, मैं नदियों, नालों, समुद्र के भी किसी भार से दुखी नहीं हूं, लेकिन मेरे ऊपर बोझ तो सिर्फ उनका है जो संकट काल में भी कृतघ्न हैं, छल करने वाले और विश्वासघाती हैं। जिस राष्ट्र की फिजाओं में सांस लेते हैं उसी से द्रोह करते हैं।'' आज के युग में देखा जाए तो पाप भूमि से भी भारी है। भारत में भी अपराध कम नहीं होते, चाहे वह हत्या, लूट, डकैती, बलात्कार हो या आर्थिक अपराध। कोरोना वायरस की महामारी में भी मनुष्य ने तिजारत को ही अपना धर्म बना लिया है। सैनिटाइजर्स, मास्क और अन्य वस्तुओं की कालाबाजारी हो रही है। भारत का दूसरा पहलू यह है कि भारत जैसे विशाल देश में अधिकांश लोग और संस्थाएं ऐसी हैं जिन्होंने हर संकट काल में मानव सेवा को अपना धर्म बनाया। यकीन मानिये भारत की सभ्यता और संस्कृति अगर जीवित है तो ऐसे ही लोगों के बल पर जिन्दा है। भारत एक ऐसा देश है जहां आज भी दान के महत्व को समझा जाता है। दान देने पर जो फल मानव को मिलता है, उसकी कोई तुलना नहीं की जा सकती। जिस देश में ऋषि दधीच ने राक्षस से देवों को बचाने के लिए अपने शरीर की अस्थियां दान कर दीं ताकि राक्षसों के वध के लिए उनकी अस्थियों से अस्त्र बनाए जा सकें, उस देश में मानव सेवा को सर्वोपरि माना ही जाएगा। मुम्बई पर आतंकवादी हमले के दौरान घायलों को रक्त देने के लिए इतने लोग अस्पतालों में उमड़ आए थे कि डाक्टरों को भी कहना पड़ा था कि उनके रक्त बैंकों में काफी रक्त है। उत्तराखंड की केदारनाथ आपदा के दौरान काफी विधवंस हुआ था और हजारों लोग महाप्रलय का शिकार हो गए थे तो सेना, अर्द्धसैनिक बलों के जवानों, आपदा बल और लोगों ने मिलकर सैकड़ों लोगों को सुरक्षित बाहर निकाला था। वायुसेना के पायलट को भी लोगों को सुरक्षित निकालने के दौरान हैलिकाप्टर के दुर्घटनाग्रस्त होने के कारण शहादत देनी पड़ी थी। इतिहास में ऐसे उदाहरणों की कमी नहीं कि इंसानों को बचाने के लिए इंसान ने खुद अपनी जान गंवा दी।

आज देश के डाक्टर, नर्सें, मेडिकल स्टाफ, सेना, जल सेना और वायुसेना के जवान सभी दिन-रात कोरोना वायरस से लड़ने के लिए 24 घंटे मुस्तैद हैं। अब जबकि संक्रमण के डर से आदमी आदमी के पास जाने से कतराता है, परिवार और समाज में दूरियां बढ़ चुकी हैं, लोग घरों में बंद हैं, ऐसी स्थिति में ये लोग संक्रमित क्षेत्र में बैठकर या भागदौड़ कर दूसरों की जान बचाने के लिए काम कर रहे हैं। उन्होंने समाज की सुरक्षा में खुद को ढाल बना रखा है। वास्तव में कोरोना वायरस से लड़ने वाले असली कमांडो यही हैं। प्रिंट एवं इलैक्ट्रानिक्स मीडिया के पत्रकार लोगों तक हर सटीक जानकारी पहुंचाने और समूचे देश को जागरूक बनाने के लिए दिन-रात अपनी ड्यूटी निभा रहे हैं। मीडिया भी कमांडो की तरह काम कर रहा है। हर संकट की घड़ी में पुलिस बल को हमेशा निशाना बनाया जाता है, पुलिस पर सवालों की बौछारें की जाती हैं लेकिन चंद अपवादों को छोड़ कर पुलिस के जवान जिस तरह से पीड़ितों के द्वार पर जाकर उन्हें खाद्य सामग्री बांट रहे हैं, बेघरों के पास जाकर उनके हाथ धुलवा कर उन्हें भोजन के पैकेट दे रहे हैं, वह भी सराहनीय और अनुकरणीय है। देशभर में अनेक सामाजिक और सांस्कृतिक संगठन दिहाड़ीदार मजदूरों और अन्य असहाय लोगों की सेवा करने के लिए आगे आए हैं। दिन-रात डड्यूटी कर रहे पुलिस कर्मियों को लोग अपने घरों से चाय-नाश्ता और भोजन बनाकर दे रहे हैं, उससे स्पष्ट है कि भारत में मानव सेवा की अवधारणा कितनी मजबूत है। बिहार में कोरोना के मरीजों की बढ़ती संख्या के बावजूद नीतीश कुमार द्वारा यह निर्णय लिया जाना कि मांस-मछली की दुकानें खुली रहेंगी, कितना उचित है? यह सवाल उठ रहा है कि इस निर्णय से फिर लॉकडाउन का क्या महत्व रह जाता है? मांस-मछली की दुकान खुलने से निश्चित तौर पर गंदगी फैलेगी और सोशल डिस्टेंसिंग की समस्या भी खड़ी हो जायेगी। ऐसे में कोरोना को रोक पाना और भी मुश्किल हो जायेगा। इस नाजूक घड़ी में किराना एवं मेडिकल दुकानों के अलावा मांस-मछली की दुकानों को खोलने का निर्णय किस परिस्थिति में लिया गया यह सोचने की बात है। आवागमण के परिचालन को भी बंद रखने की जरूरत है। आज सबसे बड़ी जरूरत उन लोगों को है जो परिवहन का कोई साधन नहीं मिलने के कारण अपने घरों की ओर पैदल चल निकले हैं। आज सबसे ज्यादा जरूरत उन लोगों को है जो पटरी पर जीवन जीते हैं या जो रोजाना पैसे कमाकर परिवार का पेट पालते हैं। आज आटा, दाल, चावल जो भी यथाशक्ति दें उससे कराहती मानवता की रक्षा होगी। पंजाब केसरी देशवासियों से आग्रह करता है कि इस महायज्ञीय कार्य में आगे आएं ताकि कोई भूखा नहीं सोये। जो लोग व्यक्तिगत रूप से या फिर सामाजिक संस्थाओं से जुड़कर कोरोना वायरस से लड़ाई में कंधो से कंधा मिलाकर काम कर रहे हैं, ये सभी देश के कमांडो हैं। उनके जज्बे को केवल सच पत्रिका सलाम करता है। ●

जहान के लिए अन्नदाता ने उठाया बीड़ा

● **अमित कुमार**

कोरोना संकट को लेकर देश में जारी लॉक डाउन के बीच अब जान की सुरक्षा के साथ-साथ जहान के लिए भी कवायद शुरू हो गई है। देश में विस्तारित दूसरे चरण का लॉक डाउन आज से शुरू हो गया।इस चरण में देश के प्रधानमंत्री ने जान के साथ जहान भी का मूल मंत्र दिया है। इस दिशा में लोगों का पेट भरने वाले हमारे अन्नदाता किसानों ने प्रधानमंत्री की इच्छा और उनके विश्वास को सार्थक करने के लिए फिर से खेत से अपना नाता जोड़ लिया है। संकट के इस दौर में ग्रामीण अर्थव्यवस्था में जान फूंकने के लिए इसे अहम प्रयास माना जा सकता है। यूं तो प्रधानमंत्री किसान निधि योजना के तहत केंद्र सरकार किसानों के खाते में सीधे घ्2000 भेज कर उनकी परेशानी को दूर करने की कोशिश कर रही है लेकिन किसानों को खुद के अलावा देश की भी फिक्र है ताकि वह सरकार को भी संकट की इस घड़ी में मदद कर सकें।इसी परिप्रेक्ष्य में बिहार के किसानों ने स्वावलंबन की भावना का परिचय देते हुए अपना कृषि कार्य शुरू कर दिया है । वैसे दूसरे चरण के लॉक डाउन के दौरान केंद्र सरकार ने आज कुछ ढील रूपी रियायतों की घोषणा की है जिसमें कृषि कार्य भी शामिल है। इस शुभ अवसर का लाभ उठाने को किसान तैयार हैं। अभी खेतों में गेहूं की फसल लगी हुई है ।यह पक कर तैयार है। जब कटनी का समय आया तो कोरोना संक्रमण की वजह से कटनी का कार्य रुक गया। अपनी पूंजी और कड़ी मेहनत से तैयार गेहूं के फसल के भविष्य को लेकर किसान परेशान और दुखी हो गए क्योंकि इस बार राज्य में गेहूं की अच्छी फसल हुई है। ऐसे में उम्मीद से लबरेज किसानों के लिए यह संकट दोहरी मार से कम नहीं थी। उनका तो निजी नुकसान होता ही साथ ही यह राष्ट्रीय नुकसान भी हो सकता था। बावजूद इसके उदास किसानों ने उम्मीद नहीं छोड़ी। उन्हें विश्वास था कि प्रधानमंत्री जब जान की फिकर कर रहे हैं तो जहान की भी फिक्र करेंगे, और ऐसा ही हुआ भी। उल्लेखनीय बात यह है कि खेतों में गेहूं के कटनी करते हुए भी हमारे अन्नदाता कोरोना संक्रमण से बचाव के लिए केंद्र सरकार द्वारा जारी सामाजिक दूरी बनाने के जरूरी निर्देश का पालन कर रहे।

☞ **नहीं हो रही लॉक डाउन से परेशानी :-** पटना जिले का नौजवान किसान अजय कुमार खेतों में जाने की सरकार से मिली इजाजत से काफी खुश और उत्साहित हैं। इस बार इनके खेत में गेहूं की अच्छी फसल हुई है। अपने तीन अन्य सहयोगी किसानों के साथ यह सवेरे सवेरे गेहूं की कटाई के लिए खेत पहुंच गए ताकि बीच दोपहर में धूप के तीखापन में काम करने से बचा जा सके । पूरी तन्मयता और रफ्तार से ये लोग गेहूं की कटाई कर रहे हैं। इनकी भूमिका देश के प्रति इनकी जिम्मेदारी के भाव को दर्शाता है। अजय बताते हैं कि इस बार फसल ठीक-ठाक हुआ है। लॉक डाउन को सही बताते हुए इनका कहना है कि इस वजह से खेती कार्य में इन्हें किसी तरह की कोई दिक्कत नहीं हो रही है । हां खास बात यह है कि खेत में काम करते वक्त भी इनके द्वारा सामाजिक दूरी बनाया जा रहा है ताकि कोरोना संक्रमण की कोई संभावना नहीं बने।

☞ **जान है तो जहान है :-** बिहार के भागलपुर जिले में भी इस बार गेहूं की अच्छी पैदावार हुई है । खेतों में गेहूं की पकी बालियों ने यहां के किसानों को इस बार काफी उत्साहित किया है। अब कटनी की इजाजत मिली तो स्वाभाविक है कि किसानों का उत्साह दूना हो गया है और जब उत्साह दोगुना हो तो कोरोना से जंग में जज्बात मजबूत होगा ही। इसी जज्बे के साथ यहां के किसान इस संघर्ष में सरकार के निर्देशों का पालन करते हुए उसे यह भरोसा दिला रहे हैं कि लोगों के जीवन यापन के लिए उनके अन्न के भंडार को भी लोग भरेंगे । जिले के बाबूपुर गांव के रहने वाले किसान सुशील कुमार मंडल इसी भावना और उत्साह के साथ खेत में अपना पसीना बहाकर अपनी जिम्मेवारी निभा रहे हैं। अपने खेत में निश्चिंत होकर गेहूं की कटाई कर रहे हैं ।उन्हें किसी तरह की कोई परेशानी इस कार्य में नहीं हो रही है । लॉक डाउन की वजह से उन्हें प्रशासनिक असहयोग का भी सामना नहीं करना पड़ रहा है। इसके लिए वे सरकार के प्रयास की प्रशंसा करते हैं । वे खेत में दूरी बनाकर काम करते हैं ताकि कोरोना के खिलाफ सरकार के प्रयास में कोई बाधा नहीं पहुंचे। उनका सुझाव है कि सरकार का निर्देश हम सबों की हिफाजत से ही तो जुड़ा है। इसलिए सभी को इसका पालन करना चाहिए क्योंकि जान है तभी तो जहान है।

☞ **देश की सेवा के लिए गेहूं काट रहे हैं :-** यह देश यूं ही महान नहीं कहलाता।संकट की इस घड़ी में जब देश का किसान अपनी परेशानी भूलकर देश की फिक्र करे, तो ऐसे किसान पर देशवासी क्यों न गर्व करें करें। जी हां बिहार के सीतामढ़ी जिले के रुन्नीसैदपुर प्रखंड के माधवपुर गांव के रहने वाले हमारे अन्नदाता किसान मोहम्मद अंसारी अपने खेत में गेहूं की कटाई करते हुए कहते हैं कि देश सेवा के लिए उत्साह पूर्वक काम कर रहे हैं । जाहिर सी बात है कि उनकी सोच इस संकट में किसी को भूखा नहीं रहने देने से जुड़ी हुई है। खेत में अपने सहयोगियों के साथ दूरी बनाकर वे गेहूं की कटाई कर रहे हैं। कटी हुई बाली की थ्रेसिंग और उसे बोरिया में पैकिंग करने में उनकी तत्परता यही दर्शाती है कि अनाज जल्द से जल्द मंडी में जाए ताकि आज की स्थिति में लोगों को खाद्यान्न की किल्लत का सामना नहीं करना पड़े। मोहम्मद अंसारी बताते हैं कि उन्हें। लॉक डाउन के दौरान किसी भी स्तर पर कोई कठिनाई नहीं हो रही है । वे कहते हैं कि प्रशासन उन्हें तंग नहीं करता। लेकिन वह खुद ही अपना काम करते हुए इस बात का विशेष ख्याल रखते हैं कि उनकी वजह से सरकार के दिशा निर्देश का किसी भी तरह का कोई उल्लंघन नहीं हो। ●

महाराष्ट्र पुलिस के सह पर साधु की कर दी गई हत्या

बद्दजात लोग ही करते हैं साधु-संतों की हत्या
ब्राह्मण हत्या का दोष, शायद कलयुग में नहीं लगता

● अमित कुमार

उनके गले में रुद्राक्ष की मालाएं थीं, हाथ में कमंडल। मन में कोई जाप होगा या राम का नाम। आंखों में खाकी वर्दीधारी पुलिस से अपनी जान बचाने की विनति थी, लेकिन पुलिस संतों का हाथ झटक देती है, धकेल देती है उस भीड़ को और जारी कर देती है संतों की मौत का सर्टिफिकेट। हत्या का सर्टिफिकेट जारी होते ही शुरु हो जाता है मौत का बर्बर तांडव और देखते ही देखते दो भगवाधारी वृद्ध संतों की हत्या अपनी आंखों से देखती है पुलिस और तब तक

देखती है जब तक कि शव की अपनी कोई सक्रियता नहीं बची रह जाती, जब तक देह का कोई कंपन नहीं बचता, तब तक जब देह सिर्फ लाठियों की मार पर कंपन करती हैं। जैसे पानी पर लठ गिरता है तो बौछार उड़ती है, ठीक वैसे ही निस्तेज और ठंडे शव बुलबलों की तरह छलछला कर उड़ रहे थे। हम सब चश्मदीद हैं इन हत्याओं के। हम सबने देखा है यह सब। इसलिए अब हम सब मिलकर इस घटना को शर्मनाक, भयावह और बर्बर बताने का काम करें, क्योंकि हम हत्याओं को शर्मनाक, भयावह और बर्बर ही बता सकते हैं।

यह घटना महाराष्ट्र के पालघर का है। दो वृद्ध संत, जिनका नाम कल्पवृक्ष गिरी और सुशील गिरी है। घटना के दिन जूना अखाड़ा के गिरी नाम धारण किए ये दो साधू मुंबई से गुजरात जा रहे थे। अपने किसी संत साथी की समाधि में शामिल होने के लिए। पालघर की सीमा में पहुंचते ही किसी ने अफवाह उड़ा दी कि नगर में दो चोर घुस आए हैं, और वे चोर हैं, इसलिए आओ, हम चलकर, मिलकर उनकी हत्या कर दें। एक हत्या करने के लिए एक आदमी काफी होता है, दो हत्याओं के लिए दो लोग। लेकिन यहां दो संत और एक वाहन चालक की हत्या के लिए तीन सौ से ज्यादा लोगों ने पुलिस की आंखों के सामने खुद ही फैसला कर लिया। सबसे हैरानी की बात तो यह है कि इन हत्याओं की कहीं कोई आहट नहीं है, बावजूद इसके कि पूरे देश में सन्नाटा है और चिड़ियां व कबूतर की आवाजें भी आसानी से सुनी जा सकती हैं। बात ही बात पर सरकार को कोसने वाले कम्युनिस्ट, लिबरल्स, इंटेलएक्च्युल्स को कहीं भी लोकतंत्र की हत्या नजर नहीं आ रही है, न ही इसमें कहीं उनकी आजादी और स्वतंत्रता को खतरा ही नजर आया है। क्योंकि इन लाशों में सरकार को कोसने का स्वाद नहीं, कोई सौंदर्य नहीं। न ही इन्होंने जमात की जहरीली छी और थू पर कुछ कहा और न ही ये संतों की हत्या पर कुछ कहेंगे। ऐसे मामलों में उनकी चुप्पी ही उनका तर्क है और उनकी खामोशी ही उनका पक्ष है। इसमें कोई राजनीतिक स्वाद नहीं। मीडिया की कलम की स्याही सूख

देवेन्द्र फडनवीस
पूर्व मुख्यमंत्री, महाराष्ट्र

अनिल देशमुख
सीआईडी

रणदीप सूरजेवाला
संचार प्रमुख, कांग्रेस

गई। क्योंकि यह सलेक्टिव एजेंडे में नहीं आता। यह उससे बाहर की वारदात है। इससे कुछ खास लोगों का एजेंडा सेटिस्फाई नहीं होता। इसमें रोहित वेमूला की लाश की गंध नहीं है, इसमें गौरी लंकेश की हत्या का सौंदर्य नहीं है। अगर कुछ कहेंगे, लिखेंगे तो उनका सलेक्टिव एजेंडा डैमेज होगा। इससे इंटरनेशनल फूटेज भी नहीं मिलेगा। कमाल की बात तो यह है कि जो इस भगवा के पैरोकार हैं, ऐसे दक्षिणपंथियों की वॉल और ट्वीटर पर भी यह घटना नजर नहीं आ रही। वो भी चुप्प हैं, क्योंकि कई बार चुप्पी में ही भलाई है। कहीं इमेज उजागर न हो जाए। हमारी भी, तुम्हारी भी।

गौरतलब हो कि महाराष्ट्र के पालघर जिले में जूना अखाड़े के 2 साधुओं की निर्मम हत्या किए जाने की घोर निंदा करते हुए पूर्व मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि पालघर में जिस क्रूरता के साथ मॉब लिंचिंग हुई, वह मानवता को शर्मसार करने वाली है, मैं एक उच्च स्तरीय जांच की मांग करता हूं। जल्द से जल्द सख्त कार्रवाई की जाए। वही भोपाल से बीजेपी सांसद साध्वी प्रज्ञा ने ट्वीट किया कि मैं आहत हूं। महाराष्ट्र में दो सन्यासियों की निर्मम हत्या कर दी गई, पुलिस-प्रशासन मौन था। सन्यासियों की हत्या संपूर्ण सनातनियों व देश के लिए एक चुनौती है। इस घटना की जांच हो कठोरतम दंड के साथ न्याय हो. जब-जब अखाड़े अपने उद्देश्यों से च्युत होंगे, विधर्मी प्रबल होंगे। दूसरी तरफ अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष महंत नरेंद्र गिरी ने बीते 19 अप्रैल को कड़े शब्दों में निंदा की और चेतावनी दी कि अगर हत्यारों की शीघ्र गिरफ्तारी नहीं की गई तो महाराष्ट्र सरकार के विरुद्ध आंदोलन किया जाएगा। प्रयागराज में प्रवास कर रहे अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष ने कहा कि महाराष्ट्र के पालघर जिले के एक गांव में ब्रहमलीन संत को समाधि देने जाते साधु-संतों पर पुलिस की मौजूदगी में एक धर्म विशेष के लोगों ने हमला कर दो साधुओं की कथित हत्या कर दी थी। उन्होंने बताया कि पालघर के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक से फोन पर बात कर अखाड़ा परिषद ने अपना विरोध जताया है और आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग की है। महंत गिरी ने कहा कि लॉकडाउन के बाद अखाड़ा परिषद हरिद्वार में बैठक कर आंदोलन की रणनीति बनाएगी। उन्होंने महाराष्ट्र सरकार को चेताया कि यदि सरकार ने हत्यारों के विरुद्ध कार्रवाई नहीं की तो सभी अखाड़े बैठक कर महाराष्ट्र

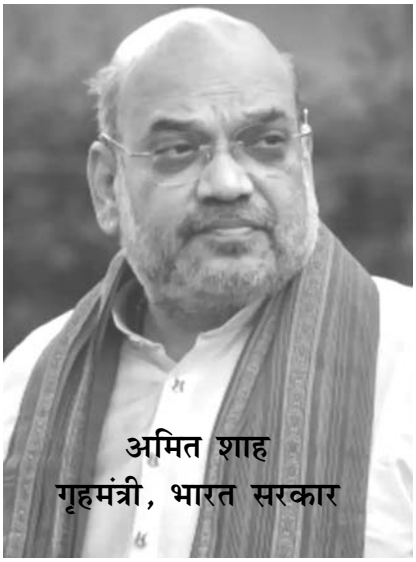
अमित शाह
गृहमंत्री, भारत सरकार

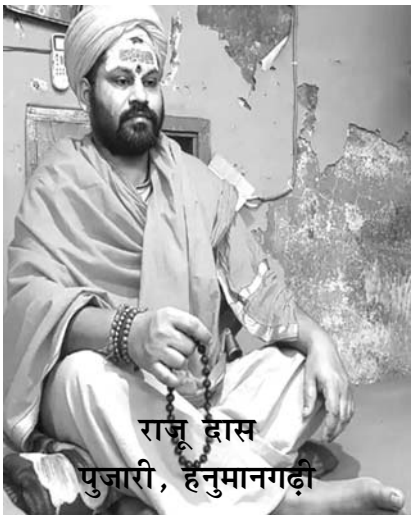
राजू दास
पुजारी, हनुमानगढ़ी

मिलिन्द परांदे
महामंत्री, विश्व हिन्दू परिषद्

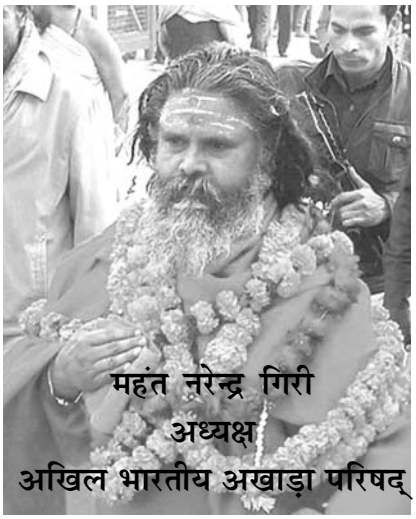
महंत नरेन्द्र गिरी
अध्यक्ष
अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद्

सरकार के विरुद्ध आंदोलन का शंखनाद करेंगे। उन्होंने भक्तों से लॉकडाउन में ब्रह्मलीन हुए किसी साधु को समाधि देने जाते समय सीमित संख्या में ही जाने की अपील की है। सनद् रहे कि यह दुखद घटना सामने आने के बाद संत समाज में रोष है। एक तरफ अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष महंत नरेंद्र गिरि ने राज्य सरकार के खिलाफ आंदोलन की धमकी दी है तो दूसरी ओर हनुमानगढ़ी के पुजारी राजू दास धरने पर बैठ गए। बताते चले कि विश्व हिन्दू परिषद (विहिप) के महामंत्री मिलिन्द परांडे दो संतों और उसके सहयोगी की हत्या पर रोष व्यक्त करते हुए कहा कि यह हमला घात लगाकर किया गया, जो किसी गहरे षड्यंत्र का हिस्सा लगता है। पहले भी इस क्षेत्र में अनेक बार वामपंथियों द्वारा प्रेरित क्रूर हिंसा की घटनाएं होती रही हैं। वही पंच दशनाम अखाड़े के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष महंत प्रेम गिरि ने गृहमंत्री अमित शाह, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे, यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और उत्तराखंड के मुख्यमंत्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत को लिखे पत्र में संतों की हत्या पर आक्रोश जताते हुए कहा कि ये संत (2 संत एवं ड्राइवर) अपने गुरु के अंतिम संस्कार में शामिल होने के लिए गुजरात के लिए निकले थे, लेकिन लॉकडाउन के बावजूद करीब 200 लोगों ने घेरकर उनकी हत्या कर दी। अत: उच्चस्तरीय जांच कराकर हत्यारों और उनके सहयोगियों को कठोरतम दंड शीघ्रातिशीघ्र दिया जाए।

विदित हो कि खबरों के महाराष्ट्र के पालघर के गड़चिनचले में यह घटना हुई। पिटाई का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था। दोनों साधु इंटिरियर रोड से होते हुए मुंबई से गुजरात जा रहे थे। चोर होने की अफवाह उड़ने के बाद लोगों की भीड़ उनके ऊपर टूट पड़ी। जब भीड़ साधुओं को पीट रही थी तो पुलिसकर्मी भी वहां मौजूद थे। आरोपियों ने साधुओं के साथ एक ड्राइवर और पुलिसकर्मियों पर भी हमला किया। हमले के बाद साधुओं को अस्पताल ले जाया गया, जहां उन्हें मृत घोषित कर दिया गया। दूसरी ओर इस निर्मम हत्या के मामले में केंद्रीय गृह मंत्रालय ने महाराष्ट्र सरकार से रिपोर्ट मांगी। जिसमें बताया गया कि महाराष्ट्र सरकार ने इस मामले में 110 लोगों को गिरफ्तार किया है। सूत्रों के मुताबिक पालघर घटना को लेकर गृहमंत्री अमित शाह ने महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे से बात की थी। वही राज्य सरकार ने इस मामले को लेकर उच्च स्तरीय जांच का आदेश दिया है। मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने कहा

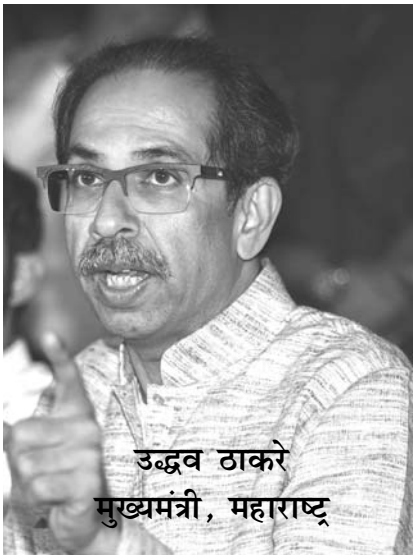
उद्धव ठाकरे
मुख्यमंत्री, महाराष्ट्र

साध्वी प्रज्ञा
सांसद

कि इस मामले में दोषियों को कड़ी से कड़ी सजा दिलाई जाएगी।

सनद् रहे कि राज्य के गृहमंत्री अनिल देशमुख ने जांच का आदेश दिए जाने की जानकारी देते हुए इस घटना को कोई सांप्रदायिक रंग नहीं देने की भी चेतावनी दी, क्योंकि 3 मृतकों में दो लोग साधु हैं। दूसरी तरफ महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री कार्यालय के ट्विटर हैंडल से ट्वीट कर मुख्यमंत्री ने कहा कि पालघर की घटना पर कार्रवाई हुई है। पुलिस ने दो साधुओं, एक ड्राइवर और घटना के वक्त ही पुलिसकर्मियों पर हमला करने के सभी आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। उन्होंने कहा है कि इस जघन्य अपराध और शर्मनाक घटना के किसी भी दोषी को बख्शा नहीं जाएगा और उन्हें जितनी कड़ी सजा संभव है, दिलाई जाएगी। हत्या के मामले में 110 लोगों को गिरफ्तार किया गया है। गिरफ्तार सभी लोगों के खिलाफ गंभीर धाराओं में केस दर्ज किया गया है। गिरफ्तार किए गए 110 लोगों में 9 नाबालिग हैं। सभी आरोपियों को 30 अप्रैल तक पुलिस कस्टडी में रखा गया है। नाबालिगों को शेल्टर होम भेजा गया है। मामले में लापरवाही बरतने के आरोप में कासा पुलिस स्टेशन के दो अधिकारियों को निलंबित कर दिया गया है। दिगर बात है कि कांग्रेस ने महाराष्ट्र के पालघर में साधुओं की पीट-पीटकर हत्या किए जाने की घटना की कड़ी निंदा करते हुए मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे से दोषियों को जल्द कटघरे में खड़ा करने का अनुरोध किया और घटना को राजनीतिक तथा सांप्रदायिक रूप नहीं देने का आग्रह किया है। कांग्रेस संचार विभाग के प्रमुख रणदीप सिंह सुरजेवाला ने कहा कि यह घटना दुर्भाग्यपूर्ण है और पार्टी इसकी कड़ी निंदा करती है। उन्होंने कहा कि इस तरह की घटनाओं के लिए सभ्य समाज में कोई जगह नहीं है और दोषियों को शीघ्र दंडित किया जाना चाहिए। राज्य की गठबंधन सरकार ने मामले में प्राथमिकी दर्ज कर घटना की सीआईडी से जांच कराने के आदेश दिए है। इस मामले में गिरफ्तार सभी लोग पालघर जिले के हैं। प्रवक्ता ने कहा कि यह हमला कहीं से भी हिन्दू मुस्लिम या सांप्रदायिक नहीं है, लेकिन अवसरवादी राजनीतिक दल इसे सांप्रदायिक रूप देने का प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने इस घटना को राजनीतिक या सांप्रदायिक रूप नहीं देने का आग्रह किया है। दूसरी तरफ पूर्व केंद्रीय मंत्री उमा भारती ने साधुओं की हत्या को लेकर महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे पर हमला बोलते हुए घटना को महापाप बताया है। उमा ने घटना को लेकर मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे को एक पत्र लिखते हुए कहा कि 'आप एक महान पिता की संतान है एवं आप स्वयं भी साधुओं का सम्मान करने वाले व्यक्ति हैं,पालघर

उमा भारती
पूर्व मंत्री सह वरिष्ठ भाजपा नेत्री

में जो महान साधुओं की भीड़ के द्वारा हत्या हुई है यह एक कानून की दृष्टि से जघन्य अपराध एंव धर्म की दृष्टि से महापाप है'। उमा भारती ने अपने पत्र में घटना के समय मौके पर मौजूद पुलिसकर्मियों पर हत्या का केस दर्ज करने की मांग की है। उमा ने मुख्यमंत्री उद्धव को लिखे पत्र में कहा कि आपको उन समस्त पुलिस सहित हत्यारों को कठोर दंड देना ही होगा अन्यथा आप स्वयं भी इस पाप के भागीदार होंगे, अब अपराधियों पर कठोरतम कार्रवाई ही आपका प्रायश्चित होगा। भगवा की फायर ब्रांड नेता उमा भारती पालघर में साधुओं की हत्या के विरोध में भोपाल स्थित अपने आवास पर एक दिन का उपवास किया। उन्होंने साधु समाज से भी आज अपने-अपने स्थान पर रहते हुए एक दिन का उपवास करने की अपील की है। वहीं उन्होंने लॉकडाउन खत्म होने के पालघर जाकर निर्दयता से मारे गए साधुओं के लिए प्रार्थना करने और उसने देश और समाज के लिए क्षमा मांगने की बात भी कही है।

बहरहाल, पालघर की घटना के पीछे क्या मकसद है और क्यों और कैसे यह घटना पुलिस की आंखों के सामने घट गई, यह जांच का विषय है, लेकिन किसी भी धर्म और संप्रदाय के व्यक्ति के जिंदा रहने और मरने का फैसला अगर भीड़ ही करने लगी तो संभल जाइए, ये आपके और हमारे धर्म के लिए ही नहीं पूरे देश के पंथों के लिए खतरे का निशान है! दोनों तरफ की यह चुप्पी एक खुंखार संस्कृति और समाज का जन्म दे रही है। चुप्पियां अक्सर हत्याओं का समर्थन करती हैं और हत्याओं का समर्थन किसी भी धर्म, पंथ और एजेंडे के लिए हितकर नहीं है। अगर ज्यादा कुछ नहीं लिख-कह सकते तो इतना ही कह दो कि ये हत्याएं जघन्य, शर्मनाक, भयावह और बर्बर हैं। ●

कृषि पदाधिकारी ने लूटी वृद्ध चौकीदार की आबरू

माफी मंगवाई, सरेआम पैर छुआया फिर सार्वजनिक रूप से करायी सड़क पर उठक-बैठक

● धर्मेन्द्र सिंह

कुछ महीनों पहले तक आवाम की जनता के बीच पुलिस द्वारा लिखा गया श्लोगन-'बिहार पुलिस आपकी सेवा में सदैव तत्पर' को देखकर इन बातों को झिटका देते थे, मानों वेफिजूल की झूठी बातों से जनता के बीच पुलिस सहानुभूति बंटोर रही हो, किन्तु फिलवक्त देश-विदेश सहित

सूबे में कोरोना महामारी के प्रकोप के बचाव में लॉक डाउन का पालन कराने हेतु यह पुलिस प्रशासन तत्परता से 24 घंटे जनता की सेवा में तैनात दिख रही है। वैसे में उनके द्वारा किये जा रहे कार्यों पर कोई वरीय पदाधिकारी अपने पद का रौब दिखाकर सरेआम उनका अपमान करे, यह नागुजार ही होगा। दिगर बात है कि कोरोना लॉकडाउन के समय विपदा की इस घड़ी में पुलिसकर्मी अपनी जान की परवाह किए बगैर लोगों की सुरक्षा में दिन-रात एक किए हुए हैं, दूसरी तरफ सरकारी मुलाजिम ही उन्हें अपनी हनक दिखाने के लिए सार्वजनिक रूप से प्रताड़ित कर रहे हैं। ऐसा ही एक वीडियो सोशल मीडिया पर खूब वायरल हो रहा है।

बताते चले कि बिहार के अररिया जिले के सुरजापुर पुल के पास ड्यूटी पर तैनात एक बुजुर्ग होमगार्ड के जवान द्वारा जिला कृषि पदाधिकारी मनोज कुमार की गाड़ी रोकने पर कान पकड़कर उठक-बैठक कराए जाने का वीडियो वायरल होने पर कई तरह के सवाल उठने लगे हैं। हालांकि वीडियो वायरल के बाद पुलिस की बदनामी होते देख अररिया एस.पी. धूरत सायली

धूरत सायली
एस.पी. अररिया

मनोज कुमार
कृषि पदाधिकारी, अररिया

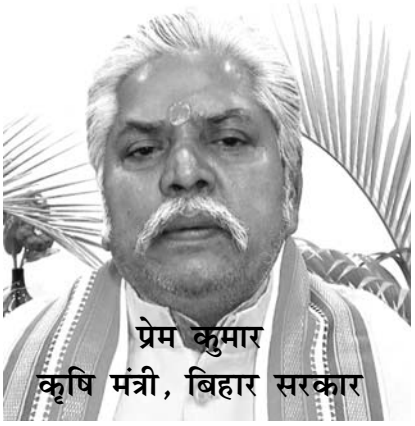
प्रेम कुमार
कृषि मंत्री, बिहार सरकार

ने पूरे मामले की जांच के आदेश दे दिए हैं। उन्होंने कहा कि वायरल वीडियो को लेकर अभी कुछ भी कहना जल्दबाजी होगी। एस.पी. ने कहा कि वायरल वीडियो की जांच का आदेश पुलिस अधिकारी को दिया गया है और जब रिपोर्ट आ जाएगी और इसके बाद आगे की कार्रवाई होगी। इसमें बैरगाछी ओपी के चौकीदार गणेश लाल ततमा, कई पुलिसकर्मियों और जिला कृषि पदाधिकारी मनोज कुमार के सामने कान पकड़कर उठक-बैठक करते नजर आ रहे हैं। यही नहीं, चौकीदार बार-बार हाथ जोड़कर माफी मांगता हुआ भी दिख रहा है। वीडियो में एक दारोगा चौकीदार को डांट-फटकार करते सुनाई देते हैं और कहते हैं कि गलती किये हो तो 50 बार उठ-बैठ करो। पदाधिकारी हैं जानते नहीं हो। बताया जाता है कि जिला कृषि पदाधिकारी मनोज कुमार की गाड़ी रोकने पर चौकीदार को इस तरह की सजा दी गई है। सूत्रों द्वारा मिली जानकारी के अनुसार इस संबंध में बैरगाछी ओपी अध्यक्ष हरेंद्र कुमार से पूछे जाने पर उन्होंने बताया गया कि, अपने को जिला कृषि पदाधिकारी कहने वाले एक शख्स ने चौकीदार पर पांच सौ रुपये लेकर गाड़ी छोड़ने का आरोप लगाया। इससे डरा-सहमा चौकीदार कान पकड़कर गलती मानते हुए उठक-बैठक करने लगा। उनका कहना है कि इस बीच वहां पहुंचे दारोगा गोविंद सिंह ने चौकीदार को ऐसा करने से मना भी किया और उन्हें डांट-फटकार भी की। हालांकि, कई लोगों का कहना है कि चौकीदार ने उनकी गाड़ी को रोककर पास दिखाने को कहा तो जिला कृषि पदाधिकारी आग-बबूला हो गए।

गौरतलब हो कि जिला कांग्रेस कमेटी के जिला महासचिव गौतम वर्मा ने एक बयान जारी करते हुए अररिया जिला के कृषि पदाधिकारी मनोज कुमार और बैरगाछी ओपी के प्रभारी को अमानवीय कार्य करने के लिए दोषी मानते हुए तत्काल प्रभाव से निलंबित करने के साथ विभागीय कार्रवाई करने की मांग माननीय मुख्यमंत्री जी से की है और कहा होमगार्ड गणेश लाल ततमा ने अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए उक्त पदाधिकारी को पास दिखाने को कहा था, जिसकी सजा उसे बीच चौराहे पर कान पकड़कर उठक-बैठक ही नहीं करवाया गया बल्कि पैर छू कर माफी भी मंगवाया गया और उसे जेल भेजने की धमकी भी दी गई। ऐसा स्पष्ट है कि उस गार्ड के मान सम्मान के साथ ना केवल खिलवाड़ किया गया बल्कि सरेआम उसे अपमानित करने का काम भी किया गया ऐसे कृषि पदाधिकारी और ओपी प्रभारी पर अभिलंब प्राथमिकी दर्ज कर कार्रवाई करनी चाहिए। अगर ऐसा नहीं होता है तो समझा यही जाएगा की सरकार ऐसे मनमानी प्रवृत्ति वाले पदाधिकारी व पुलिसकर्मी को संरक्षण देने का काम कर रही है और एक छोटे पद पर काम करने वाले व्यक्ति को चोट पहुंचा रही है। सरकार को यह करना चाहिए की उस गार्ड को अपने कर्तव्य को निभाने के लिए पुरस्कृत किया जाना चाहिए, जिन्होंने अपने कर्तव्यों से समझौता नहीं किया और सभी लोगों को एक नजर से देखने का काम किया। कृषि पदाधिकारी और पुलिस पदाधिकारी के इस व्यवहार से समाज में एक गलत संदेश गया है, जिसकी आज चारों ओर बदनामी हो रही है। वही दूसरी ओर बिहार सरकार के कृषि मंत्री डॉ० प्रेम कुमार ने कहा है कि अररिया में सड़क पर एक सिपाही को उठक-बैठक कराने के मामले में जिला कृषि पदाधिकारी मनोज कुमार के खिलाफ विभागीय जांच कराने का आदेश दे दिया गया है। उन्होंने कहा कि इस मामले में सोशल मीडिया पर एक वीडियो वायरल हो रहा है। वायरल वीडियो के आधार पर जिला कृषि पदाधिकारी से जवाब तलब किया गया है। मंत्री ने कहा है कि कोरोना महामारी के बीच राज्य में बिहार पुलिस के जवान लगातार सड़कों पर दिन-रात मेहनत कर रहे हैं, ऐसे में पुलिस के जवानों का सम्मान करना सरकार की प्राथमिकता है। इस परिस्थिति में अररिया के जिला कृषि पदाधिकारी के संबंध में जिस तरह की खबरें आई है, यदि सत्य है तो वह बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है। जांच रिपोर्ट आने के बाद संबंधित अधिकारी पर कड़ी कार्रवाई की जायेगी। इस संदर्भ में पूर्णिया के संयुक्त निदेशक को जाँच का आदेश दिया गया है। बताया जाता है कि जिला कृषि पदाधिकारी मनोज कुमार की गाड़ी रोकने पर चौकीदार को इस तरह की सजा दी गई। वही इस मामले में कार्रवाई करते हुए दोषी एएसआई गोविंद सिंह को सस्पेंड कर दिया गया है। कृषि पदाधिकारी के खिलाफ भी विभागीय जांच चल रही है और उन पर भी जल्द कारवाई होगी। इससे पहले बिहार के पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) गुप्तेश्वर पांडेय ने इस मामले में कड़ा एतराज जताया था और कहा था कि पुलिसकर्मी की बेइज्जती बर्दास्त नहीं होगी। उन्होंने मामले की जांच के आदेश दिए थे। उन्होंने कहा कि सोशल मीडिया पर वायरल इस वीडियो को मैंने देखा है और इस संबंध में मैने पुलिस अधीक्षक और पुलिस महानिरीक्षक से बात कर इसकी जानकारी सरकार को भेज दी है। उन्होंने बताया कि राज्य सरकार इसका संज्ञान ले रही है और जांच रिपोर्ट मिलने पर चौकीदार के साथ ऐसा व्यवहार करने के दोषियों के खिलाफ निश्चित तौर पर कार्रवाई की जाएगी। डीजीपी ने कहा कि चौकीदार हमारा और प्रशासन का अंग है और वह हमारी सबसे छोटी इकाई है। उन्होंने कहा कि चौकीदार को अपमानित करके जो अधिकारी अपना सम्मान बढ़ाना चाहते हैं, उनके प्रति मुझे बहुत अफसोस है और यह बेहद शर्म की बात है। ●

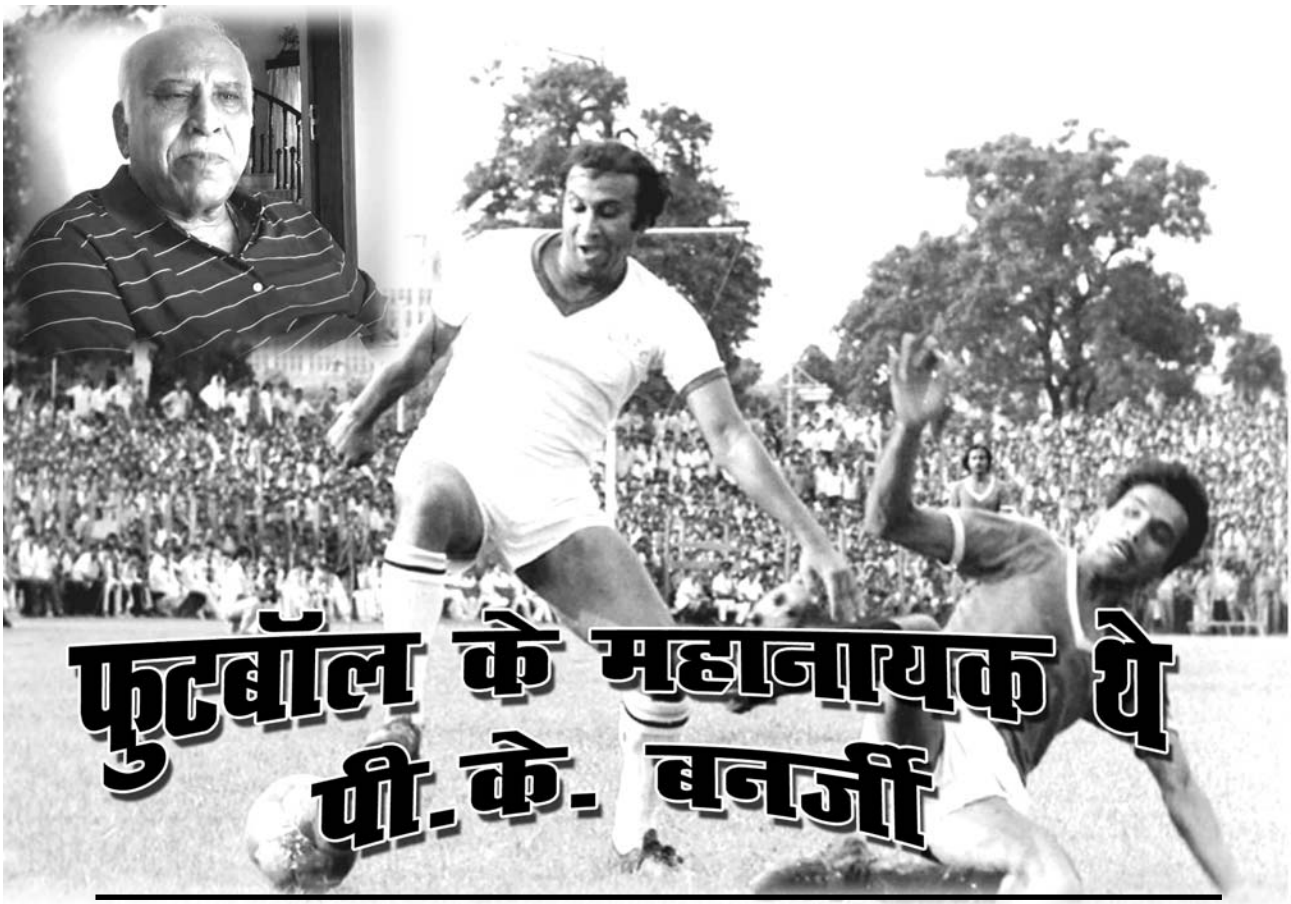

फुटबॉल के महानायक थे पी.के. बनर्जी

● ललन कुमार प्रसाद

पूपने जमाने के देश के मशहूर फुटबॉलर, फुटबॉल के अर्जन के नाम से विख्यात, जार्काता एशियाई खेल के स्वर्ण पदक विजेता और ओलंपियन प्रदीप कुमार बनर्जी (पी.के. बनर्जी या पीके या पीके दा) का निधन कोलकाता के सुपरस्पेशिलिटी हॉस्पीटल में 20 मार्च 2020 को दोपहर 12 बजकर 40 मिनट पर 83 वर्ष की उम्र में हो गया। उन्होंने करीब 51 वर्षों तक फुटबॉल के खिलाड़ी तथा कोच के रूप में देश की सेवा की है। बनर्जी परिवार में उनकी दो बेटियां हैं- पाउला और पूर्णा। दोनों नामचीन शिक्षाविद् हैं। उनका छोटा भाई प्रसून बनर्जी तृणमूल कांग्रेस से सांसद हैं। पीके बनर्जी के निधन पर ऑल इंडिया फुटबॉल फेडरेशन और बिहार फुटबॉल एसोसिएशन ने अपना अपना झंडा झुका दिया। पीके बनर्जी खिलाड़ी के रूप में भारतीय फुटबॉल की उस सर्वाधिक धुरंधर टुकड़ी के सदस्य थे, जिसमें चुन्नी गोस्वामी और तुलसीदास बलराम शामिल थे। चुन्नी गोस्वामी गजब के कलात्मक फुटबॉलर थे। चुन्नी गोस्वामी ऐसे खिलाड़ी थे जो छह-छह, सात-सात दिपस के खिलाड़ियों के बीच घिर जाने पर अपनी कलात्मक खेल की बदौलत बड़ी सफाई से गेंद निकाल लेना उनके बाएं हाथ का खेल था। उनकी कलात्मक व उत्कृष्ट खेल के चलते सामने वाले विरोधी टीम के खिलाड़ी भौचक्के रह जाते थे। वे समझ नहीं पाते थे कि इस खिलाड़ी से गेंद छीने तो कैसे छीने? चुन्नी गोस्वामी का खेल इतना कलात्मक और आकर्षक होता था कि उसे देखकर दर्शक दांतों तले अंगुली दबा लेते थे। चुन्नी गोस्वामी के बारे में कहा जाता था कि उनका मस्तिष्क उनके पैर में है। वर्ष 1967 में पीके बनर्जी ने बतौर खिलाड़ी के रूप में फुटबॉल से अलविदा करने के बाद बतौर कोच के रूप में अपने करियर की दूसरी पारी की शुरुआत की उस समय भारत के सर्वाधिक दिग्गज कोचों में अमल रजा, रहीम और मोहम्मद नईम से बेहतर कोच जाने जाते थे अर्थात् फुटबॉल के खिलाड़ी और कोच, दोनों में देश के सर्वोत्तम हस्ती थे।

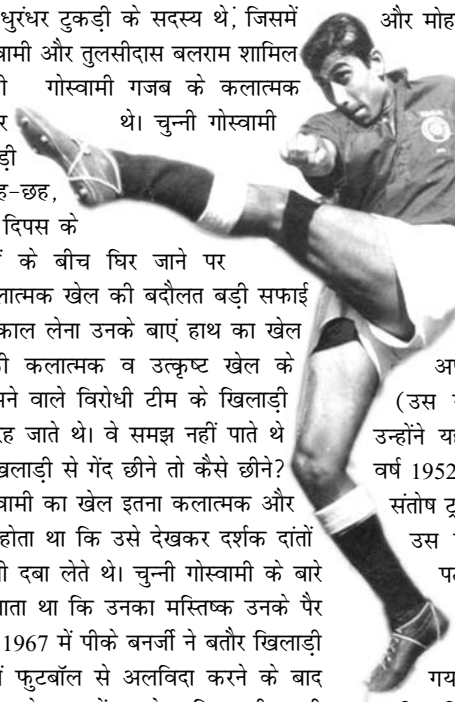

पीके बनर्जी का जन्म 23 जून 1936 को जलपाईगुड़ी के बाहरी इलाके में स्थित मोयनागुड़ी में हुआ था, लेकिन बंटवारे के बाद छोटी उम्र में ही वह अपने माता-पिता के साथ जमशेदपुर (उस समय बिहार में था) मे आ गए। उन्होंने यहीं से फुटबॉल खेलना शुरू किया। वर्ष 1952 में महज 16 वर्ष की उम्र में उन्होंने संतोष ट्रॉफी में बिहार का प्रतिनिधित्व किया। उस समय वह पटना विश्वविद्यालय के पटना कॉलेज के छात्र थे। कर्लक की गलती से उनका नाम प्रदीप्रो बनर्जी से प्रदीप कुमार बनर्जी कर दिया गया। उसी दौरान एक दिन पटना विश्वविद्यालय से पत्र आया कि संतोष ट्रॉफी

में खेलने के लिए उनका चयन बिहार की टीम में हो गया है। वह मानते थे कि बिहार के पटना कॉलेज से ही उन्हें नई पहचान मिली। वर्ष 1955 में महज 19 साल की उम्र में उन्होंने अपना पहला अंतर्राष्ट्रीय मैच पूर्वी पाकिस्तान (आज का बांग्लादेश) की राजधानी ढ़ाका में खेला था। पीके बनर्जी ने भारत के लिए 84 अंतर्राष्ट्रीय मुकाबले में 64 गोल दागे हैं। उन्होंने 1967 में एक फुटबॉल खिलाड़ी के रूप में फुटबॉल को अलविदा कर दिया और उन्होंने बतौर फुटबॉल के कोच के रूप में फुटबॉल की नई पारी शुरू की। उन्होंने बतौर कोच 54 ट्रॉफी जीती है। कोलकाता के सुप्रसिद्ध फुटबॉल क्लब मोहन बागान ने उन्हें कोच रहते आईएफए शिल्ड, रोवर्स कप और डूरांड कप जीता वर्ष 1977 में मोहन बागान और न्यूयॉर्क कॉस्मॉस के बीच का प्रदर्शनी मैच 2.2 से हो रहा था। उस मैच में न्यूयॉर्क कॉस्मॉस और ब्राजील ने विश्वविख्यात फुटबॉलर पेले भी उतरे थे। पीके बनर्जी उस दौरान मोहन बागान के कोच थे। कोलकाता की दूसरी सुप्रसिद्ध फुटबॉल क्लब, ईस्ट बंगाल ने उनके कोच रहते फेडरेशन कप 1977 में सेमीफाइनल में अपने चिर-परिचित प्रतिद्वंदी मोहन बागान को 4-1 से हराया था, परंतु पीके बनर्जी ने मोहन बागान और ईस्ट बंगाल की ओर से कभी नहीं खेलें। पीके बनर्जी अपने फुटबॉल करियर को विस्तार देने के लिए भारत में फुटबॉल का आका कहे जाने वाले शहर कोलकाता के किसी स्थानीय फुटबॉल क्लब से खेलना चाहते थे। इसलिए उन्होंने 1954 में कोलकाता के आर्यन फुटबॉल क्लब (आर्यन एकेडमी) से खेलना प्रारंभ किया, लेकिन आर्यन एकेडमी के कोच दासू मिश्रा ने कभी भी उनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया। ऐसे में वह कोलकाता छोड़कर वापस जमशेदपुर लौटने के लिए सोचने लगे। संयोग से उसी दौरान उन्हें भारतीय रेलवे से नौकरी की पेशकश की गई। उन्होंने उस पेशकश को स्वीकार कर कोलकाता के ही पूर्वी रेलवे फुटबॉल क्लब की ओर से खेलना शुरू कर दिया और 1967 में एक फुटबॉल खिलाड़ी के रूप से संन्यास लेने के बाद भी ताउम्र रेलवे के उसी क्लब से जुड़े रहे। पीके बनर्जी 10 साल तक भारतीय फुटबॉल टीम के नेशनल कोच रहे, उन्हें 1999 में भारतीय फुटबॉल टीम का टेक्निकल डायरेक्टर बना दिया गया। पीके बनर्जी ने ही जमशेदपुर में टाटा फुटबॉल एकेडमी की स्थापना में अहम भूमिका निभाया था, जिससे की अपने गृहनगर जमशेदपुर को भारतीय फुटबॉल के मानचित्र पर अहम स्थान दिला सके। फुटबॉल के खेल को जमशेदपुर में नई ऊंचाई पर पहुंचाने के लिए वह टाटा फुटबॉल एकेडमी के चीफ कोच कम डायरेक्टर के पद पर 2006 तक कार्यरत रहे। उनके प्रयास से टाटा फुटबॉल एकेडमी देश के नामचीन फुटबॉल क्लबों में शुमार हो गया।

☞ **खिलाड़ी के रूप में पीके बनर्जी के**

यादगार मुकाबले :- पीके बनर्जी 1956 के मेलबर्न ओलंपिक में अपने शानदार खेल की बदौलत दुनियां में भारत को चौथा स्थान दिलाने में अहम भूमिका निभाया था। क्वार्टर फाइनल मुकाबले

में भारत ने ऑस्ट्रेलिया से, ऑस्ट्रेलिया में ही 4-2 से मात दे दी। उस ऐतिहासिक मैच में बनर्जी ने कोई गोल नहीं कर सके, लेकिन उन्होंने गोल करने के कई शानदार मौके बनाएं। उस मैच में पीके बनर्जी ने दो गोल अशिष्ट किए थे, अर्थात् दो किए जाने के अचक मौके बना दिए थे। हालांकि सेमीफाइनल में यगोस्लावाकिया से हार कर भारत टूर्नामेंट से बाहर हो गया, लेकिन ओलंपिक में उसे भारत का अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन माना जाता है। पीके बनर्जी ने 1960 में रोम ओलंपिक में भारत की कप्तानी की। अब तक फ्रांस जैसी दुनियां की मजबूत फुटबॉल टीम

के खिलाफ 1.1 से ड्रा रहे इस मैच के 71वें मिनट में पहला गोल कर पीके बनर्जी ने भारत को बढ़त दिला दी थी, लेकिन 82वें मिनट में फ्रांस की ओर से गंरार्ड कोइनकोन ने गोल करके भारत को जीत से वंचित कर दिया। वर्ष 1960 में रोम में खेला गया मैच भारत का आखिरी ओलंपिक मैच था, क्योंकि उसके बाद से आज तक भारतीय फुटबॉल टीम ओलंपिक में खेलने के लिए क्वालीफाई नहीं कर सकी। इतना ही नहीं, अगस्त 2020 में टोक्यो ओलंपिक में खेले जाने वाले फुटबॉल मैच में भी भारतीय फुटबॉल टीम क्वालीफाई नहीं कर सकी है। फिलहाल फुटबॉल के खेल में दुनियांभर में भारतीय फुटबॉल का स्तर काफी नीचे है।

वर्ष 1962 में भारत ने पीके बनर्जी के शानदार खेल की बदौलत जकार्ता एशियाई फुटबॉल खेल का खिताब जीता था। उस समय भारत ने फाइनल में साउथ कोरिया की मजबूत फुटबॉल टीम को 2.1 से हराकर चौंपियन बना। पीके बनर्जी ने खेल के 17वें मिनट में पहला गोल कर भारत को अहम बढ़त दिलाई थी। 20 मिनट में जरनैल सिंह ढिल्लों ने गोल कर भारत की बढ़त को दोगुना कर दी थी। भारत पहली और आखरी बार एशियाई फुटबॉल का स्वर्ण जीता, उसके बाद भारत एशियाई फुटबॉल टूर्नामेंट का चौंपियन नहीं बन सका। वर्ष 1964 में एशियाई फुटबॉल खेल में पीके बनर्जी के शानदार खेल की बदौलत ही भारत रजत पदक जीता था, उसके बाद भारत एशियाई फुटबाल टूर्नामेंट में रजत पदक भी नहीं जीत सका।

☞ **पीके बनर्जी को मिले खेल सम्मान :-** पीके बनर्जी को 1961 में अर्जुन अवार्ड और 1980 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया। अंतर्राष्ट्रीय फुटबॉल संघ (फीफा) ने 2004 में उन्हें बीसवीं शताब्दी में भारत का सबसे महान फुटबॉल खिलाड़ी घोषित किया। फीफा ने उन्हें 'ऑर्डर ऑफ मेरिट' से नवाजा। पीके बनर्जी को 2011 में 'लाइफ टाइम अचीवमेंट' पुरस्कार से अलंकृत किया गया।

☞ **पीके बनर्जी की विशेषताएं :-** उनकी सबसे बड़ी खासियत थी कि वह खिलाड़ियों द्वारा पूछे गए प्रश्नों को बहुत ध्यान से सुनते थे और फिर पूरे तथ्यों के साथ विस्तार से उन प्रश्नों का जवाब देते थे, जिससे कि खिलाड़ियों को उनकी समस्याओं का निदान मिल जाए, समझ में आ जाए। खिलाड़ियों और उनके बीच सवाल-जवाब के दौरान उन्होंने कभी भी समय की कमी होने का बहाना नहीं बनाया। दरअसल, पीके बनर्जी को फुटबॉल खेल के विभिन्न पहलुओं के बारे में इतनी अच्छी समझ थी कि खिलाड़ियों द्वारा पूछे गए सभी समस्याओं के कारगर और व्यावहारिक समाधान देने में सक्षम हो जाते थे। पीके बनर्जी भले ही पारंपरिक बंगाली बाबू थे लेकिन उन्हें हिंदी में बातचीत करना बहुत पसंद था। हिंदी अखबार के एक पत्रकार से जब पहली बार बात हुई तो उन्होंने तपाक से कहा कि तुम हिंदी अखबार से हो तो मैं तुम्हारे साथ हिंदी में बात करूंगा। बात यह है कि वह फुटबॉल के टेक्निकल ज्ञान से इतने परिपूर्ण थे कि उन्हें बांग्ला, हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू आदि किसी भी भाषा में उनसे कोई बात करें उन्हें समझने और समझाने में कोई दिक्कत नहीं होती थी।

☞ **पीके बनर्जी के प्रति महान खिलाड़ियों के विचार :-** पीके बनर्जी के निधन के बाद

सुब्रत भट्टाचार्य

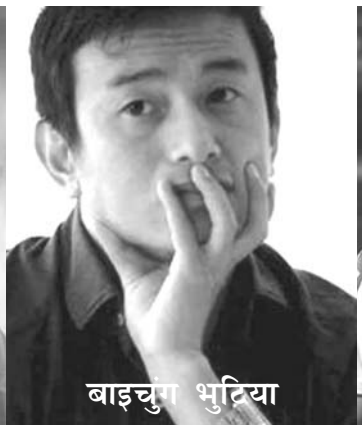
बाइचुंग भुटिया

सुनील छेत्री

चुन्नी गोस्वामी

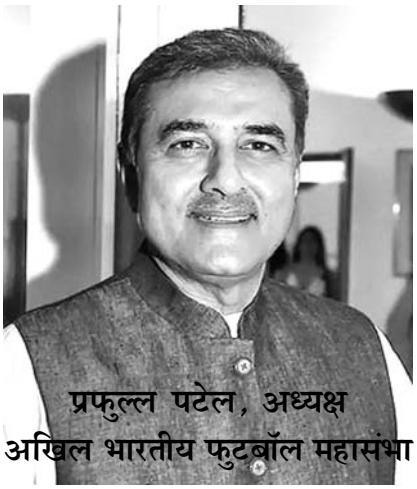
प्रफुल्ल पटेल, अध्यक्ष
अखिल भारतीय फुटबॉल महासंभा

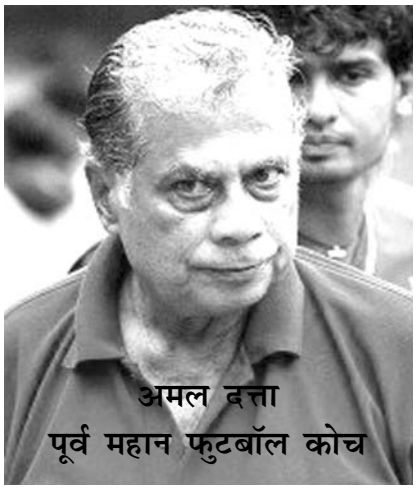
अमल दत्ता
पूर्व महान फुटबॉल कोच

कुशल दास, महासचिव
अखिल भारतीय फुटबॉल महासंभा

भारत के पूर्व स्ट्राइकर कप्तान बाईचुंग भूटिया ने कहा कि वह अपने आप को खुशकिस्मत मानते हैं कि उन्हें पीके बनर्जी के मार्गदर्शन में खेलने का मौका मिला, जिन्होंने उनसे सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कराने में अहम भूमिका निभाई। मैंने जिंदगी में सबसे अच्छी फुटबॉल बनर्जी सर के साथ ही खेली, वह भारत के महानत्तम फुटबॉलर थे। भूटिया ने 1987 में फेडरेशन कप सेमीफाइनल में मैच में ईस्ट बंगाल के लिए, मोहन बागान के खिलाफ हैट्रिक लगाई थी, जिसके दम पर उनकी टीम ने मोहन बागान पर 4-1 से जीत दर्ज की। उस मैच में देखने के लिए रिकॉर्ड तोड़ सवा लाख दर्शक जुटे थे। अपने समय के भारतीय टीम के पूर्व दिग्गज सुब्रत भट्टाचार्य ने कहा कि बनर्जी ने उन्हें दुनिया में सर्वाधिक मशहूर किया और ब्राजील के फुटबॉल खिलाड़ी पेले के खिलाफ कैसे खेलना है, सिखाया और ऐसा बनाया जो मैं बनना चाहता था। सुब्रत जी ने कहा कि बनर्जी सर ने हमें जो सिखाया और किसी ने नहीं सिखाया। एक खिलाड़ी और कोच के तौरपर प्रदीप दा का भारतीय फुटबॉल में योगदान अतुलनीय है। बनर्जी दा मोहन बागान की उस टीम के कोच थे, जिसमें की टीम न्यूयॉर्क कॉस्मॉस 2.
2 से ड्रा पर मजबूर

कर दिया था। सुब्रत उस मोहन बागान टीम के कप्तान थे। भारतीय फुटबॉल टीम में वर्तमान स्ट्राइकर कप्तान सुनील छेची ने कहा कि पीके बनर्जी फुटबॉल के पुरोधा थे, उनकी उपलब्धियां भारतीय फुटबॉल के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में दर्ज रहेगी।

बीसीसीआई के अध्यक्ष और भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान सौरव गांगुली ने कहा कि आज हमने बेहद प्रिय व्यक्ति को खो दिया है, जिन्हें मैं बहुत प्यार करता था और जिन का बेहद सम्मान करता था और मेरे करियर में जिन का बहुत प्रभाव था। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दे। भारतीय क्रिकेट के भगवान सचिन तेंदुलकर ने भी ट्वीट कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने पीके बनर्जी के निधन पर गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि दिवंगत आत्मा की शांति एवं उनके परिजनों व प्रशंसकों के लिए यह दुख की घड़ी में धैर्य और शक्ति प्रदान करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूं। बिहार फुटबॉल संघ के महासचिव सैयद इम्तियाज हुसैन, उपाध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद यादव और पटना फुटबॉल संघ के सचिव ज्वाला प्रसाद सिन्हा ने गहरा दुख व्यक्त करते हुए कहा कि पीके बनर्जी का निधन भारतीय फुटबॉल की अपूरणीय क्षति है। अखिल भारतीय फुटबॉल संघ के अध्यक्ष प्रफुल्ल पटेल ने पीके बनर्जी के निधन पर कहा कि भारतीय फुटबॉल के लिए उनके योगदान को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता है। पीके बनर्जी का नाम भारतीय फुटबॉल की सुनारी पीढ़ी का हमेशा पर्याय बना रहेगा। प्रदीप दा आप हमेशा हमारे दिलों में रहेंगे। अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ के महासचिव कुशल दास ने कहा कि, पीके बनर्जी अपनी उपलब्धियों के जरिए हमेशा जीवित रहेंगे। भारतीय सिनेमा जगत के दिग्गज अभिनेता अजय देवगन ने पीके बनर्जी के निधन पर कहा कि वह गोल्डन किक वाले शख्स थे। ●

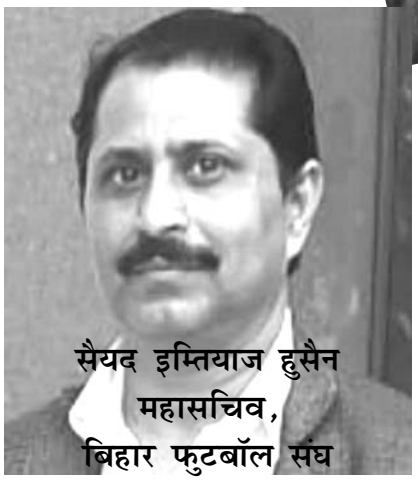
सैयद इम्तियाज हुसैन
महासचिव,
बिहार फुटबॉल संघ

(लेखक फायर एण्ड सेफ्टी विशेषज्ञ हैं।)
मो०:- 9334107607
वेबसाईट www.psfsm.in

घर-आंगन, खेत-खलियान और गौरैया

● ललन कुमार प्रसाद

देखने में छोटी सी गौरैया भूरे-भूरे रंगों वाली, छोटी पूंछ वाली, किंतु शक्तिशाली चोंच वाली, फसलों को हानिकारक कीटों को खाने वाली, खूबसूरत और प्यारी पंक्षी है। हमारे घरों की आंगन, बालकनी और छतों पर फुदक-फुदक कर चलने वाली इस गौरैया की संगीतभरी चहचहाहट मन को खुशी और सुकून, दोनों देती है। घर के आंगन में अनाज को फटकते तथा चुनते वक्त इनका फुदकना और बीच-बीच में सूप या दगड़ा पर बैठकर अनाज पर चोंच मारते देखना बड़ा मनमोहक लगता है। गौरैया से हमारा बचपन का रिश्ता है। अंग्रेजी में इसका नाम ही हाउस स्पैरो यानि घर में रहने वाली चिड़िया है। गौरैया को हमारे देश में अलग-अलग नामों से जाना जाता है- उर्दू में इसे चिरैया, पंजाबी में चिर, पश्चिम बंगाल में पासी, जम्मू कश्मीर में चेर, गुजराती में चकली, उड़िया में छाराछातिया और सिंधी में झिंकी कहते हैं।

मादा गौरैया हर साल 3 से 5 अंडे देती है। अंडे से चूजा पैदा होते हैं, जो 15 दिन बाद उड़ने में दक्ष हो जाते हैं। गौरैया मांसाहारी और शाकाहारी दोनों ही होती है। चूजा गौरैया को बढ़ने के लिए प्रोटीन की ज्यादा जरूरत होती है, इसलिए व्यस्क गौरैया अपने छोटे-छोटे बच्चों को कीट ज्यादा खिलाती है, लेकिन व्यस्क गौरैया अनाज के दाने अधिक खाती है। गौरैया जंगली पक्षी नहीं है, तो पूर्ण रूप से घरेलू भी नहीं है। घर की आंगन बालकनी और छत के अलावा खेत-खलिहान के आसपास के जालीदार पौधे तथा छोटे और मझोले आकार के वृक्षों पर बहुतायत पायी जाती है। इन स्थानों पर गौरैया के घोंसले भारी संख्या में पाये जाते हैं,

लेकिन शहरों में कंक्रीट की जंगलों और बहुमंजिला इमारतों में रहने वाले इंसानो ने इनके लिए आवासीय संकट पैदा कर दिया है। गांव में भी तेजी से बनते कंक्रीट के मकानों ने इनका बसेरा छीन लिया है, फिर खेत-खलियान के आसपास की झाड़ीदार पौधे तथा छोटे और मझोले आकार के वृक्षों के काटे जाने से वृक्षों की संख्या में आयी भारी कमी भी इनके आवास को नष्ट कर दिया है। वर्षों पहले खेतों के बीच में थोड़ी-थोड़ी दूरी पर घने पत्तों वाले वृक्ष हुआ करते थे, जो विशेषकर गर्मियों में थके-हारे हलवाहों के लिए आराम फरमाने की स्थली हुआ करती थी, अब बहुत ही कम हो गयी है। वे घने जंगलों वाले वृक्ष गौरैया सहित अन्य पक्षियों के लिए घोंसले की मुफीर जगह थी, लेकिन पैसे के लालच में खेतों के बीच में कुछ-कुछ दूरी पर खड़े इन छायादार वृक्षों की मौजूदगी की अहमियत को बगैर सोचे-समझे किसानों ने स्वयं ही काट दिये, जिससे गौरैया के घोंसले नष्ट हो गये। इससे पैदावार में भारी कमी हो गई, क्योंकि गौरैया फसलों को हानि पहुंचाने वाले कीटों को खा जाती थी।

दरअसल हमारा रहन-सहन बहुत बदल गया है। पक्षियों के प्रति हमारा भावनात्मक जुड़ाव पहले जैसा नहीं रहा। अपनी बदली जीवनशैली के चलते हम लगातार प्रकृति से दूर होते जा रहे हैं। कुदरत और इंसान के बीच की दूरी दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। हम इस तथ्य को भूल गये हैं कि गौरैया इंसान और कुदरत की दूरी को कम

करने में अहम भूमिका निभाती है। आंगन, बालकनी और छत पर चहचहाती और फुदक-फुदक कर चलती तथा घरों के आगे बाग-बगीचों में चहचहाती, इंसानों को कुदरत के प्रति आकर्षित कर जुड़ाव पैदा करती है। घर की आंगन और बालकनी में अपनी चहचहाहट से हमें मधुर प्राकृतिक संगीत सुनाती है। यह इंसानों की मित्र होती है, यह शुद्ध वातावरण की सूचक होती है, लेकिन आज हमारा अधिकाधिक समय टेलीविजन देखने और मोबाइल पर काम की कम तथा व्यर्थ की ज्यादा बातचीत करने में व्यतीत होने लगा है। पहले हर घर में आंगन हुआ करते थे, लेकिन लगातार बेतहाशा बढ़ती आबादी और बढ़ी हुई आबादी के लिए घटती आवासीय जगह के चलते घरों से आंगन गायब होते चले गये। नित्य नए-नए बनते बहुमंजिली मकानों की वजह से उनके छतों पर गौरैया को अपने घोंसले बनाने की जगह ही नहीं रही। ऐसा इसलिए कि छोटी-छोटी उड़ान भरने वाली तथा अधिकतर फुदक-फुदक कर चलने वाली गौरैया के लिए ऊंची-ऊंची गगनचुंबी इमारतों की छत, उनकी उड़ान क्षमता से परे हो गई है। इसलिए आधुनिकता की दौड़ में इन्हें अपने घोंसले बनाने हेतु उपयुक्त जगह की भारी कमी हो गई है, फिर आजकल के लोगों को स्वीकार नहीं है कि उनके घर की बालकनी में किसी पक्षी का घोंसला बने। डेढ-दो दशक पहले तक गेहूं को धोने के बाद आंगन या छत पर सुखाने के बाद आटा चक्की में पिसाने का चलन था, लेकिन अब लोग पैकेट बंद आटा खरीदने लगे हैं। जो बहुत गरीब हैं, अभी-अभी आटा चक्की की दुकान बगैर पैकेट बंद यानी खुला आटा खरीदते हैं। ऐसे में पक्षियों को दाना चुगने को नहीं मिल पा रहा है। फिर घर में फालतू बच गए अनाज तथा अन्य भोज्य पदार्थ, जो पहले कभी घर की छत पर छोड़ दिए जाते थे, वह स्वच्छता के नाम पर डस्टबिन में डाल दिए जाते हैं, इसलिए भोजन के अभाव में गौरैया ने घरों से मुंह मोड़ लिया।

इस तरह हम पाते हैं कि गौरैया को घोंसले बनाने के लिए मुफीर जगह की कमी के साथ भोज्य पदार्थों की भी कमी हो गयी, इसलिए पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में पायी जाने वाली हाउस स्पैरो, ट्री स्पैरो या यूरेशियन स्पैरो और रसेट या सिनेमन स्पैरो, सभी 6 प्रजातियों की गौरैया की संख्या में भारी कमी आयी है। गौरैया की यह सभी प्रजातियां उष्ण कटिबंधीय क्षेत्र (Torred Zone) और समशीपोष्ण क्षेत्र (Tropical Zone) यानी भूमध्य रेखा या विधुवत रेखा से सटे उत्तर और दक्षिण के क्षेत्र यानी पृथ्वी के गर्म क्षेत्रों में बहुतायत में पायी जाती है, लेकिन यह कैसी विडंबना है कि उपरोक्त क्षेत्रों में भारी संख्या में पायी जाने वाली गौरैया की संख्या में भारी कमी हो गई है।

खेतों में पाये जाने वाले छोटे-पतले कीट, जिन्हे हम आम भाषा में 'सुंडी' कहते हैं, यह कीट फसलों के लिए हानिकारक होते हैं। गौरैया अपने बच्चे को अल्फा और कटवर्म नामक कीड़े भी खिलाती है, जो फसलों के लिए हानिकारक होते हैं। गोबर में पैदा होने वाले यह कीट, जो फसलों के लिए हानिकारक होते हैं, इन कीटों को भी गौरैया अपने चूजों को खिलाती हैं। ऐसा इसलिए कि इन कीटों में प्रोटीन की मात्रा अधिक होती है, जो चूजों को बढ़ने के लिए अनिवार्य है। फिर गाय के गोबर से गौरैया अध पके अनाज के दाने भोजन के रूप में मिल जाते हैं। गोबर से तैयार कंपोस्ट खाद, जो फसलों के लिए अति उत्तम खाद होता है, वह गौरैया के चलते फसलों को नुकसान पहुंचाने वाले हानिकारक कीटों से मुक्त हो जाता है।

गौरैया पूर्ण रूप से घरेलू पक्षी नहीं है। खेतों के आसपास की झाड़ियों और पेड़ों तथा खेतों के मेढ़ों और बीच-बीच के वृक्षों पर घोंसले बनाकर रहना गौरैया को बहुत पसंद है, क्योंकि इन स्थानों पर गौरैया को निवास करने से उन्हें भरपूर मात्रा में कीटों के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के अनाज के दाने खाने को सुलभता से उपलब्ध हो जाते हैं, अर्थात् धान, गेहूं, बाजरा, जौ, चना, मसूर, मकई, तीसी, सरसों, आदि के दाने तथा मिट्टी में मौजूद फसलों को हानि

पहुंचाने वाले कीट भरपूर मात्रा में खाने को मिल जाता है। जिससे चूजा बच्चा और व्यस्क गोरैया को भोजन की कोई कमी नहीं होती है, साथ ही मुक्त आकाश में जीने का कुदरती माहौल मिल जाता है। इस तरह हम पाते हैं कि वातावरण को स्वच्छ व सुहावना रखने तथा पैदावार बढ़ाने में इनकी भूमिका बहुत ही मददगार साबित होती है, लेकिन नासमझी और आलस्य में पड़कर किसान कंपोस्ट खाद का कम और रासायनिक खाद का ज्यादा इस्तेमाल करने लगे हैं। प्रदूषण के कारण फसलों पर कीटनाशकों का छिड़काव भी भारी मात्रा में कर रहे हैं। जिससे हवा, पानी और मिट्टी, तीनों ही प्रदूषित हो रही है। कीटनाशकों के प्रयोग से गोरैया को खाने के लिए कीटों का मिलना काफी कम हो गया है, इसलिए भोजन के आभाव में गोरैया का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है। कीटनाशियो के छिड़काव के बाद मिट्टी में बचे-खुचे कीट को खाने से चूजा, बच्चे तथा व्यस्क तीनों ही प्रकार के गोरैय्या की सेहत के लिए खतरनाक साबित हो रहा है। इससे भी गोरेया का अस्तित्व संकट में पड़ गया है, लेकिन नासमझ और स्वार्थी इंसान गोरैया के अस्तित्व को समाप्त करने पर तुला हुआ है। इस कार्य में चीन की भूमिका हरगिज क्षमा योग्य नहीं है।

रूस के बाद रकबा में चीन दुनियां का सबसे बड़ा देश है। वर्ष 1957 तक चीन में गोरैया बहुत भारी संख्या में पायी जाती थी, परंतु 1958 में चीन के शासक माओसेतुंग ने एक ऐसा आत्मघाती अभियान बहुत ही बड़े तथा व्यापक पैमाने पर चलाया कि, वहां पर गोरैया का वजूद ही खत्म हो गया। उसने मच्छर, मक्खी, चूहा और गोरैया का वजूद मिटा देने के लिए बड़ा ही व्यापक अभियान चलाया। गोरैया का अनाज खाना उनको बिल्कुल नागवार लगता था, इसलिए उन्होंने गोरैया को मारने का अभियान बहुत ही बड़े और व्यापक पैमाने पर चला दिया। उन्होंने घोषणा करवा दिया कि जो जितना अधिक गोरैया मारेगा, उसको उतना ही बड़ा इनाम दिया जाएगा। इसलिए वहां के लोग चाहे वह किसान हो या स्कूल के छात्र, सभी में अधिक से अधिक गोरैया मारने की होड़ लग गई। स्कूली बच्चे भारी संख्या में गुलेल का इस्तेमाल कर गोरैया को मारने लगे और अधिक से अधिक संख्या में गोरैया को मारकर स्कूलों में जमा करने लगे, ताकि उनको अधिकाधिक इनामी राशि प्राप्त हो सके। इनाम के लालच में बंदूक का इस्तेमाल कर किसान भी अधिकाधिक गोरैया मारने लगे। नतीजा, पूरा चीन ही गोरैयाविहीन हो गया। लेकिन इसका परिणाम बड़ा ही भयानक हुआ, वहां पैदावार में भारी गिरावट आ गयी। क्योंकि फसलों को हानिकारक कीटों से बचाने वाली गोरैया का खात्मा हो गया था। माओसेतुंग को अपनी गलती का एहसास हुआ। उन्हें समझ आ गया कि उनसे बहुत बड़ी गलती हो गयी, इसलिए उन्होंने गोरैया के मारने पर प्रतिबंध लगा दिया, लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी थी। प्रतिबंध लगाने का कोई फायदा नहीं हुआ। पैदावार में हुई भारी कमी ने वहां की उन्नत संस्कृति को गर्त में पहुंचा दिया। लोग पेट की भूख मिटाने के लिए अनाज की जगह भांति-भांति के ढ़ेर सारे जानवरों के मांस खाने लगे। दरअसल, गोरैया जीवन के किसी

श्रृंखला की हिस्सा थी। वह कुछ काम कर रही थी, लेकिन उनके हटते ही जीवन की श्रृंखला में कुछ टूट आ गयी।

वास्तव में चीन बड़ा ही सिरफिरा देश है। आज दुनियां भर में भारी तबाही मचाने वाला कोरोना वायरस भी चीन की ही देन है। चीन की करतूत का ही परिणाम है कि आज पूरी दुनियां को लॉक डाउन का सामना करना पड़ रहा है। पूरी दुनियां का बेड़ा गर्क होने लगा है। दुनियांभर में वायरस के अनुसंधान का सबसे बड़ा अनुसंधान प्रयोगशाला ''इंस्टिच्यूट ऑफ वायरोलॉजी'' चीन के हुवेई प्रांत के वुहान शहर में स्थित है। फ्रांस के सहयोग से बने दुनियां के इस सबसे बड़े वायरस रिसर्च लेबोरेट्री को स्थापित करने में 15 वर्ष लगे हैं। इस रिसर्च लैबोरेट्री पर चीन हर साल भारी भरकम राशि खर्च करता है। दशकों से दुनियांभर में महामारी फैलाने वाले सर्वाधिक वायरस चीन के इसी अनुसंधान प्रयोगशाला में तैयार किए गये हैं। पूरी दुनिया को कोरोना संकट में डालने वाला चीन, इस प्रयोगशाला में कई तरह के एक से बढ़कर एक खतरनाक वायरस तैयार करके संरक्षित रखे हुए हैं, जिनका जैविक हथियार के रूप में इस्तेमाल कर पूरी दुनियां पर राज करना चाह रहा है।

हर साल 20 मार्च को 'विश्व गोरैया दिवस' मनाया जाता है। 'नेचर फॉरयेवर सोसायटी' के अध्यक्ष मोहम्मद दिलावर के विशेष प्रयासों से पहली बार 20 मार्च 2010 को विश्व गोरैया दिवस मनाया गया था। यह दिवस इसलिए मनाया जाता है, ताकि विलुप्त हो रही गोरैया पक्षी को बचाया जा सके। विगत 25-30 वर्षों में गोरैया की आबादी 60% घटी है, इसलिए आसपास दिखने वाली गोरैया को बचाना बहुत जरूरी हो गया है। हमारी छोटी सी कोशिश गोरैया को जीवनदान दे सकती है। अगर वह हमारे घर में घोंसला बनाने का प्रयास करें तो उसे बनाने दें। अपने घर के आंगन, खिड़की और बालकनी की दीवार पर उसके लिए एक चीनी मिट्टी या स्टील की तश्तरी में थोड़ा अनाज और चीनी मिट्टी या स्टील के कटोरे में स्वच्छ पानी रखें। अनाज के दाने के साथ पानी रखना इसलिए जरूरी है कि प्यास से उनकी मौत ना हो जाये। ख्याल रखें कि गोरैया प्रेम और दुलार की चाह रखती हैं। इन्हें बस हमारा थोड़ी सी फिक्र चाहिए, इनके रहने के लिए हमारे घर में थोड़ी सी जगह, थोड़ा सा भोजन, थोड़ा सा पानी और हमारे दिल में थोड़ा सा स्थान चाहिए। तभी हम उन्हें संरक्षित रख सकते हैं, विलुप्त होने से बचा सकते हैं। इनका संरक्षण जरूरी है, क्योंकि यह हमारी संस्कृति धरोहर है, देश के हर गांव में तीन-चार आदमी गोरैय्या के रखने का समुचित इंतजाम करें तो इनके संरक्षण के साथ-साथ बगैर कीटनाशक का इस्तेमाल किये ही पैदावार में उल्लेखनीय वृद्धि की जा सकती है। इस तरह कीटनाशक के प्रयोग में कमी लाकर मिट्टी पानी और हवा तीनों को ही प्रदूषित होने से बचा सकते हैं तथा घर के आंगन बालकनी और ओसारा में गोरैया की मौजूदगी के साथ प्राकृतिक जीवन जीने का लुफ्त उठा सकते हैं। यदि शहरों में भी गोरैया का पालन का समुचित विस्तार किया जाये तो तनावपूर्ण मशीनी जीवन जीने के दौरान कुछ समय के लिए तनाव मुक्त तथा प्राकृतिक जीवन जीने का आनंद उठा सकते हैं। यदि घर के आंगन, बालकनी और छत पर पक्षियों के लिए दाना-पानी रखेंगे तो इन जगहों पर कबूतर, गोरैया, कौआ आदि पक्षी दिखने लगेंगे। गोरैया की संगीत में चहचहाहट तथा कबूतर का मधुर और आनंदमय गुटर गू सुनने को मिलने लगेगा, फलस्वरुप मन सुकून महसूस करने लगेगा।

तेजी से विलुप्त होती गोरैया के संरक्षण हेतु जनता को जागरूक करने के लिए बिहार के पक्षी प्रेमी, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने 9 जनवरी 2003 को गोरैया को बिहार का राजकीय पक्षी घोषित कर दिया। तब से हर साल 20 मार्च को विश्व गोरैया दिवस के अवसर पर बिहार के वन विभाग की ओर से पूरे राज्य में छोटे-बड़े कार्यक्रम का आयोजन किया जाने लगा है, लेकिन इस साल कोरोना संकट के मद्देनजर किसी प्रकार का कोई कोई भी कार्यक्रम आयोजित नहीं किया गया। ●

(लेखक फायर एण्ड सेफ्टी विशेषज्ञ हैं।)
मो०:- 9334107607
वेबसाईट www.psfsm.in

कोरोना संक्रमण के रोकथाम को लेकर
सूचना जन-सम्पर्क सचिव ने दी आवश्यक जानकारी

● अमित कुमार/त्रिलोकी नाथ प्रसाद

बीते 19 अप्रैल को सूबे के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के निर्देश पर वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से सचिव सूचना एवं जन–सम्पर्क श्री अनुपम कुमार, अपर पुलिस महानिदेशक, पुलिस मुख्यालय श्री जितेन्द्र कुमार, सचिव स्वास्थ्य श्री लोकेश कुमार सिंह तथा आपदा प्रबंधन विभाग के अपर सचिव श्री एम0 रामचन्द्र डू ने कोरोना संक्रमण की रोकथाम को लेकर किये जा रहे कार्यों के साथ–साथ अद्यतन स्थिति पर मीडियाकर्मियों के साथ संवाद कर जानकारी दी। सूचना एवं जन–सम्पर्क विभाग के सचिव श्री अनुपम कुमार ने बताया कि कोरोना वायरस से संक्रमण के कारण उत्पन्न स्थिति पर मुख्यमंत्री लगातार समीक्षा कर रहे हैं। आज भी मुख्य सचिव के स्तर पर क्राइसिस मैनेजमेंट ग्रुप की बैठक हुयी है। सरकार के स्तर पर लिये गये निर्णयों को क्रियान्वित कराये जाने के लिये कदम उठाये जा रहे हैं। सूचना एवं जन–सम्पर्क विभाग के सचिव श्री अनुपम कुमार ने बताया कि गाइडलाइन के अनुरूप 20 अप्रैल के बाद जिन कार्यों को शुरू किया जाना है, उसके संबंध में सरकार के स्तर पर पहले ही कई निर्णय लिये गये हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन के लिये कई कदम उठाये जा रहे हैं। जल–जीवन–हरियाली एवं मनरेगा के अन्तर्गत तालाबों/पोखरों का जीर्णोद्धार कार्य कराया जाना है। 7 निश्चय के कार्यक्रम अन्तर्गत हर घर नल का जल, हर घर तक पक्की गली–नालियों के कार्य कराये जाने के साथ–साथ शौचालय के निर्माण का कार्य भी तेजी से कराया जाना है। ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन के लिये जो कार्य किये जा रहे हैं, उन कार्यों में उस क्षेत्र के आसपास के लोगों को ही लगाया जायेगा ताकि वहॉ के मजदूरों को काम मिल सके। अनुपम कुमार द्वारा आगे बताया गया कि बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में कटाव निरोधक एवं बाढ़ सुरक्षात्मक कार्यों को ससमय पूर्ण कराने के लिये तेजी से कार्य किया जायेगा। ग्रामीण क्षेत्र के सड़कों का निर्माण कार्य भी ग्रामीण कार्य विभाग के अन्तर्गत तेजी से किया जायेगा। उन्होंने कहा कि जिन–जिन कार्यों को करने का निर्णय लिया गया है, उसके संबंध में एक विज्ञापन के माध्यम से लोगों को अवगत कराया जायेगा।

वही लोगों को हर स्तर पर राहत देने के लिये कई कदम उठाये जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि आपदा राहत केन्द्रों की संख्या बढ़ायी गयी है और अब इनकी संख्या 196 हो गयी है। पहले से अधिक संख्या में लोग आपदा राहत केन्द्र पर लाभान्वित हो रहे हैं और उनकी संख्या लगभग 60 हजार हो गयी है। क्वारंटाइन केन्द्रों की संख्या अब कम हो रही है क्योंकि जिनका क्वारंटाइन समय पूर्ण हो रहा है, वे लोग जा रहे हैं। अब स्कूल (पंचायत) स्तर पर 1,040 क्वारंटाइन केन्द्र कार्यरत हैं, जिसमें 8,468 लोग रह रहे हैं। इन सभी लोगों को गुणवत्तापूर्ण भोजन, आवासन एवं चिकित्सकीय सुविधा उपलब्ध करायी जा रही है। साथ ही साथ बिहार के लोग जो बाहर फॅसे हुये हैं, वे लोग मुख्यमंत्री सचिवालय, आपदा प्रबंधन विभाग एवं बिहार भवन के स्थानिक आयुक्त के कार्यालय में फोन कर अपनी समस्यायें बता रहे हैं। प्राप्त फोन पर अधिकारी रोजाना लोगों से फीडबैक प्राप्त कर रहे हैं और उसके आधार पर लोगों की समस्याओं का समाधान किया जा रहा है। अब तक 79,285 कॉल/मैसेज प्राप्त हुये हैं। उनसे फीडबैक लेकर उनकी परेशानियों को दूर करने का प्रयास किया जा रहा है। लॉकडाउन के कारण बिहार के जो लोग बिहार के बाहर अन्य राज्यों में फॅसे हुये हैं, उन्हें प्रति व्यक्ति 1,000 रूपये की राशि मुख्यमंत्री विशेष सहायता के रूप में मुख्यमंत्री राहत कोष से आपदा प्रबंधन विभाग के माध्यम से दी जा रही है। राज्य के बाहर लॉकडाउन में फॅसे बिहार के मजदूरों एवं जरूरतमंद व्यक्तियों के लिये सहायता राशि के रूप में मुख्यमंत्री राहत कोष से मुख्यमंत्री विशेष सहायता अन्तर्गत 1,000 रूपये की दर से अब तक 11 लाख 2 हजार राज्य के बाहर रह रहे बिहार के लोगों के खाते में राशि अंतरण की स्वीकृति दी गयी है। अब तक 16 लाख 81 हजार से अधिक आवेदन प्राप्त हुये हैं, जरूरतमंदों के और आवेदन अभी प्राप्त हो रहे हैं। प्राप्त आवेदनों का शीघ्र निष्पादन कर राशि अंतरित करने की कार्रवाई की जा रही है। वही खाद्य आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण विभाग द्वारा दी गयी जानकारी के अनुसार अनाज वितरण में गड़बड़ी के कारण 151 पी0डी0एस0 डीलरों पर कार्रवाई की गयी है, जिसमें 79 पर एफ0आई0आर0 दर्ज की गयी है और 102 डीलरों के लाइसेंस निलंबित किये गये हैं। अनुपम कुमार ने आगे बताया कि बिहार फाउण्डेशन के माध्यम से देश के 9 राज्यों के 12 शहरों में 55 राहत केन्द्र भी चलाये जा रहे हैं, जहॉ पर लोगों को भोजन तथा राशन सामग्री भी दी जा रही है। अब तक 8 लाख 50 हजार लोग इसका लाभ उठा चुके हैं। उन्होंने बताया कि सरकार लोगों की हरसंभव मदद कर रही है। लोग लॉकडाउन में अनुशासन रखें और सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करें।

गौरतलब हो कि इस बैठक के दौरान स्वास्थ्य विभाग के सचिव श्री लोकेश कुमार सिंह ने बताया कि पिछले 24 घंटे में कोरोना के 7 पॉजिटिव मामले आये हैं और अब कोरोना पॉजिटिव मरीजों की संख्या 92 हो गयी है। कोरोना संक्रमण से अब तक दो लोगों की मौत हो चुकी है। अब तक 42 लोग स्वस्थ हुये हैं। कोरोना संक्रमण से प्रभावित 13 जिलों में सीवान के 29, बेगूसराय के 9, मुँगेर के 17, पटना के 7, गया के 5, गोपालगंज के 3, नवादा के 3, नालंदा के 11, सारण के 1, लखीसराय के 1, भागलपुर के 1, वैशाली के 1 एवं बक्सर के 4 मामले हैं। अब तक कुल 10,745 सैंपल्स की जॉच दी जा चुकी है। कोरोना की जॉच के लिये छह लैब काम कर रही है और इससे जॉच में तेजी आयी है। अब तक सबसे अधिक जिन पॉच जिलों में जॉच हुयी है, उसमें पटना में 1,290 जॉच, गोपालगंज में 900, सीवान में 877, बेगूसराय में 688, नालंदा में 533 है। वही राज्य के तीन अस्पतालों– एन0एम0सी0एच0 पटना, ए0एन0एम0सी0एच0 गया, भागलपुर के जवाहर लाल नेहरू चिकित्सा महाविद्यालय को कोविड अस्पताल के रूप में चिन्हित किया

गया है। राज्य के विभिन्न जिलों में 302 क्वारंटाइन सेंटर के रूप में चिन्हित किये गये हैं, जिसमें होटल सहित अन्य स्थल भी शामिल हैं। क्वारंटाइन केन्द्रों में 6,682 कमरे चिन्हित किये गये हैं। अब तक क्वारंटाइन केन्द्रों में आवासित लोगों की संख्या 700 है। पंचायत स्तर पर विद्यालयों में बनाये गये क्वारंटाइन सेंटर में चिकित्सकीय दल नियुक्त हैं और उनकी जॉच की जा रही है। आइसोलेशन सेंटर में मरीजों की संख्या 48 है। कोरोना प्रभावित जिलों की डोर टू डोर स्क्रीनिंग करायी जा रही है। प्रभावित जिले से जुड़े सीमावर्ती प्रखण्ड/जिलों में भी प्रमण्डलीय आयुक्त एवं जिलाधिकारी के स्तर पर समीक्षा कर सर्वे कराया जा रहा है। विदेश से बिहार में कोई भी व्यक्ति आया है, उस गॉव का भी पूरा सर्वेक्षण कराया जा रहा है। अब तक कुल 23 लाख 56 हजार घरों में 1 करोड़ 28 लाख लोगों का सर्वेक्षण कराया गया है, जिसमें से 980 लोगों में सामान्य सर्दी, खांसी और बुखार के लक्षण पाये गये हैं लेकिन यह आवश्यक नहीं कि वे कोरोना संक्रमित हों। इनमें 578 लोगों का सैंपल लिया जा चुका है।

सनद् रहे कि लॉकडाउन का सख्ती से अनुपालन कराया जा रहा है। यह बातें अपर पुलिस महानिदेशक, पुलिस मुख्यालय श्री जितेन्द्र कुमार ने बताया। अब तक 1,261 एफ0आई0आर0 दर्ज की गयी है और 1,100 लोगों की गिरफ्तारियॉ हुयी है। 30,185 वाहन जब्त किये गये हैं। अब तक इससे कुल 7 करोड़ 87 हजार 506 रूपये की राशि जुर्माने के रूप में वसूल की गयी है। पिछले 24 घंटे में अवरोध पैदा करने के कारण 36 एफ0आई0आर0 दर्ज की गयी हैं और 60 लोगों की गिरफ्तारियॉ हुयी हैं। 1,631 वाहन जब्त किये गये हैं और 36 लाख 1 हजार 378 रूपये जुर्माना वसूला गया है। कोविड–19 से निपटने के लिये उठाये जा रहे कदम और लॉकडाउन का पालन करने में अवरोध पैदा करने वालों के खिलाफ सख्ती से कदम उठाये जा रहे हैं। जहानाबाद के टेंहटा थानान्तर्गत 15 अप्रैल को लॉकडाउन का उल्लंघन कर कुछ लोग पार्टी कर रहे थे। डिजास्टर मैनेजमेंट एक्ट के तहत उनके खिलाफ एफ0आई0आर0 दर्ज की गयी है, जिसमें एस0डी0पी0ओ0 सदर जहानाबाद, डी0एस0पी0 टाउन जहानाबाद, सी0ओ0 मखदुमपुर, बी0डी0ओ0 मखदुमपुर समेत कई अधिकारियों पर भी एफ0आई0आर0 दर्ज की गयी है। उन्होंने कहा कि कानून का उल्लंघन करने वालों को किसी भी हालत में बख्शा नहीं जायेगा। ●

आदिम जनजाति परिवार आज भी मूलभूत सुविधाओं से दूर

● **हरिओम प्र० भाटिया/अजय कु० यादव**

झारखंड सरकार जंगलो में निवास करनें वाले लोंगों कों मूलभूत सुविधाएं पहुंचाने कें लिए बड़ी बड़ी दावे और योजनाएं संचालित कर रहीं है किंतु लातेहार एक नमूना ही माना जाएगा क्यूँकि आला अधिकारी सरकारी भवन एवं सरकार कें वेतन कें अलावे योजना धरातल में उतरे ना उतरे उन्हें कमीशन चाहिए ही कुछ ऐसा ही मामला जिले कें सदर प्रखंड बेंदी पंचायत अंतर्गत सुकलकट्ठा गांव के आदिम जनजाति के परिवारों के समक्ष कई मूलभूत आवश्यकताएं हैं जिनमें रहने के लिए घर खाने के लिए भोजन और गुजर-बसर के लिए रोजगार के साधन आदि चीजों की व्यवस्था के लिए सरकार की कई महत्वाकांक्षी योजनाएं चल रही है जिनसे इनकी स्थिति बेहतर हो सकें किंतु यहां पर निवास करने वाले आदिम जनजाति के परिवारों में कई लोगों का आज तक राशन कार्ड नहीं बन पाया है और प्रधानमंत्री आवास योजना या बिरसा आवास योजना के तहत इन्हें घर भी नहीं मिल पाया है जिस कारण यह कच्चे एवं जर्जर मकानों में रहने के लिए मजबूर हैं वही वैश्विक कोरोना महामारी को लेकर लॉकडाउन के कारण उत्पन्न खाद समस्या को देखते हुए झारखंड सरकार वैसे सभी जरूरतमंद लोंगों कों जो राशन कार्ड से वंचित है उन्हें 10 किलो अनाज देने का प्रावधान किया गया है किंतु स्थानीय जनप्रतिनिधियों की उदासीनता कें कारण लॉक-डाउन के महीने दिन गुजर जाने के बाद भी (1) पतरमनी देवी पति रामु परहिया (2)जीरा देवी पति रिनू परहीया (3)मुनिया देवी पति गोला परहिया (4)मनीता देवी पति अर्जुन परहिया (5)सुनीता देवी पति सीताराम परहिया (6) फुलचिया देवी पति संतोष परहिया (7) अनिता देवी पति मुकेश परहिया (8)मुनिका देवी पति प्रदीप परहिया

(9)टोपो परहिया (10)रीता देवी पति सकेंद्र परहिया (11)पुनीता देवी पति दशरथ परहिया (12) सरिता मसोमात पति स्व० भिखारी परहिया (13) पिंटू परहिया पिता छठू परहिया (14) महरंगियाया देवी पति इंद्रदेव परहिया (15)ि पंटू परहिया पिता स्व० राजेंद्र परहिया आदि लोंगों कों अनाज का दर्शन भी नहीं हो पाया है। साथ ही पका पकाया भोजन दाल भात योजना और किचन दीदी कें तहत भी यहाँ तक भोजन नहीं पहुँच पा रहा हैं। बताते चलें कि जिन आदिम जनजाति परिवारों का राशन कार्ड है उन्हें भी राशन में कटौती कर दिया जाता है नियमानुसार इन्हें पीटीजी के तहत होम डिलीवरी राशन देना है किंतु डीलर इन्हें नियमित होम डिलीवरी राशन नहीं देते हैं जिस कारण इन्हें सुकलकट्ठा से दुर्गम रास्ते से होकर नदी और रेल की पटरियों जंगलों आदि को पार कर तरवाड़ीह गांव जाना पड़ता है जिन से इन्हें दिन भर का समय लग जाता है इस संबंध में पूछे जाने पर बेंदी पंचायत की मुखिया श्रीमती बैजंती खलखो ने बताया की राशन कार्ड से वंचित जरूरतमंदों कों राशन दिया जा रहा है और इन्हें भी जल्द ही राशन उपलब्ध करा दिया जाएगा। पीटीजी के तहत आदिम जनजाति परिवारों को घर पर चावल पहुंचाना है किंतु डीलर आरिफ अंसारी एवं सुरेंद्र प्रसाद का राशन बाँटने, कटौती,आदि संबन्धित मनमानी का शिकायत हमें भी प्राप्त हुआ है किंतु उन्हें फोन से संपर्क करने पर मेरा कॉल नहीं उठा रहे हैं और कोई जवाब भी नहीं दें रहें हैं मामले की त्वरित जांच पड़ताल कर विभाग कों वास्तु स्थिति से अवगत किया जाएगा। रही बात आवास की तो पंचायत के माध्यम से कल्याण विभाग को बिरसा आवास की सूची बनाकर भेज दिया गया है फंडिंग आ जानें पर इन्हें आवास निर्माण की प्रक्रिया प्रारंभ कर दिया जायगा। ऐसा आश्वासन देकर पदाधिकारी और जनप्रतिनिधि अपना बचाव तो कर लेते हैं मगर आम आदमी कें साथ अति गरीब और बेबस परिवार यूं ही कार्यालय का चक्कर काटकर और थक हारकर पुनः अपनी जिंदगी में मस्त हो जाते हैं। ●

क्या खत्म होने जा रही दुनियां!

धार्मिक ग्रंथों के दावों के अनुसार हजारों वर्षों पूर्व धरती पर एक बार श्जल प्रलयश हुई थी। हिन्दू मत्स्य पुराण में श्जल प्रलयश और श्नौकाबंधश नाम से इस घटना का वर्णन मिलता है। द्रविड़ देश के राजर्षि सत्यव्रत (वैवस्वत मनु) के समक्ष भगवान विष्णु ने मत्स्य रूप में प्रकट होकर कहा कि आज से सातवें दिन भूमि जल प्रलय के समुद्र में डूब जाएगी। तब तक एक नौका बनवा लो। ऐसी ही कथा तौरात, इंजिल, बाइबिल और कुरआन में भी मिलती है। यहूदी, ईसाई और इस्लाम में इस घटना का जिक्र श्हजरत नूह की नौकाश नाम से वर्णित है। कहते हैं कि इस जल प्रलय में सिर्फ नूह या राजा वैवस्वत मनु की नाव में सवार लोग ही बचे थे बाकि सभी डूब गए थे। धर्म, ज्योतिष, माया सभ्यता या नास्त्रेदमस की भविष्यवाणी का हवाला देकर कुछ लोगों द्वारा पिछले कई वर्षों से दुनिया के खत्म होने का दावा किया जाता रहा है। कुछ लोग इस दावे के चलते निश्चित ही दहशत में रहते हैं तो कुछ इसे अंधविश्वास मानते हैं। दुनिया के खत्म होने के मंजर को लेकर हॉलीवुड में कई फिल्में बन चुकी है। लेकिन हम यहां कहने जा रहे हैं कि अभी दुनिया में ऐसा कुछ भी नहीं होने जा रहा है। आओ जानते हैं कि इस संदर्भ में वेद, पुराण बाइबल, कुरआन आदि ग्रंथों में क्या लिखा है?

☞ **हिन्दू धर्म :-** प्रलय के संबंध में हिंदू धर्म की धारणा मूल रूप से वेद और पुराणों से प्रेरित है। प्रलय का अर्थ होता है संसार का अपने मूल कारण प्रकृति में सर्वथा लीन हो जाना। प्रलय चार प्रकार की होती है- नित्य, नैमित्तिक, द्विपार्थ और प्राकृत। प्राकृत ही महाप्रलय है, जो कल्प के अंत में होगी। एक कल्प में कई युग होते हैं। यह युग के अंत में प्राकृत प्रलय को छोड़कर कोई सी भी प्रलय होती है। हिन्दू धर्म मानता है कि जो जन्मा है वह मरेगा। सभी की उम्र निश्चित है फिर चाहे वह सूर्य हो या अन्य ग्रह। प्रलय काल पुराणों में सृष्टि उत्पत्ति, जीव उद्भव, उत्थान और प्रलय की बातों को सर्गों में विभाजित किया गया है। जैसे वर्तमान में धरती का प्रौढ़ावस्था का काल चल रहा है, जो लगभग विक्रम संवत 2042 पूर्व शुरू हुआ माना जाता है। इस काल में अतिविलासी, क्रूर, चरित्रहीन, लोलुप, यंत्राधीन प्राणी धरती का नाश करने में लगे हैं। इससे पहले गर्भकाल, शैशवकाल, कुमार काल, किशोर काल और युवा काल बित चुका है। इसके बाद वृद्धकाल, जीर्ण काल और अंत में उपराम काल होगा। वृद्ध काल में साधन भ्रष्ट, त्रस्त, निराश, निरूजमी, दुखी जीव रहेंगे। जीर्ण काल में अन्न, जल, वायु, ताप सबका अभाव क्षीण होगा और धरती पर जीवों के विनाश की लीला होगी। उपराम काल अर्थात करोड़ों वर्षों आगे तक ऋतु अनियमित, सूर्य, चन्द्र, मेघ सभी विलुप्त हो जाएंगे। भूमि ज्वालामयी हो जाएगी। अकाल, प्रकृति प्रकोप के बाद ब्रह्मांड में आत्यंतिक प्रलय होगा। हिंदू पुराणों अनुसार कलिकाल के अंत में भगवान विष्णु अंतिम बार वापस आएंगे, जिसको हिंदू धर्म में कल्कि कहा गया है। महाभारत में कलियुग के अंत में प्रलय होने का जिक्र है, लेकिन यह किसी जल प्रलय से नहीं बल्कि धरती पर लगातार बढ़ रही गर्मी से होगा। महाभारत उल्लेख मिलता है कि सूर्य का तेज इतना बढ़ जाएगा कि सातों समुद्र और नदियां सूख जाएंगी। संवर्तक नाम की अग्नि धरती को पाताल तक भस्म कर देगी। वर्षा पूरी तरह बंद हो जाएगी। सबकुछ जल जाएगा, इसके बाद फिर बारह वर्षों तक लगातार बारिश होगी। जिससे सारी धरती जलमग्न हो जाएगी।

☞ **ईसाई धर्म :-** बाइबल में दुनिया के अंत के बारे में स्पष्ट नहीं है। कुछ लोग इस पवित्र ग्रंथ में दुनिया के अंत का अर्थ बुरे लोगों का अंत, व्यवस्था का अंत से लगाते हैं। कुछ लोग मानते हैं कि तब प्रभु यीशु पुनः अवतरित होंगे। कहते हैं कि आखिरी दिन सभी मृत और जीवित लोगों को आकाश में ले जाया जाएगा, जहां वो सभी यीशु से मिलेंगे। इस मान्यता को श्रैपचरश का नाम दिया गया है। यीशु ने कहा, "उस दिन और उस वक्ष्त के बारे में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत, न बेटा, लेकिन सिर्फ पिता जानता है।" उसने यह भी बताया कि अंत अचानक होगा, उस घड़ी जब किसी ने सोचा भी न होगा।श्श (मत्ती 24:36, 42 और मत्ती 24:44 बाइबल) बाइबल में इन घटनाओं के होने के समय को श्अन्त समय,श श्आखिरी दिनोंश और श्अन्तिम दिनोंश कहा गया है। बाइबल अनुसार युद्ध, भुखमरी, बीमारियां और भूकंप से दुनिया में अंत होगा। तब बस कुछ लोग ही बच जाएंगे। इस दिन प्रभु न्याय करेगा। मत्ती 24:7 और लूका 21:11 में इसका उल्लेख मिलता है।

☞ **इस्लाम :** इस्लाम में भी प्रलय का दिन माना जाता है, जिसे कियामत कहा गया है। कुरआन मजीद में कियामत के दिन को यौमुद्दीन (बदले का दिन) और थयौगुल फसल (फैसले का दिन) और यौमुल हिसाब (हिसाब का दिन) कहा गया है। इस्लाम के अनुसार कियामत कब आएगी इसे केवल अल्लाह तआला ही जानता है। हालांकि इस्लाम में कियामत की कुछ निशानियां बताई गई हैं। हदीस में जिक्र है कि जब कयामत आएगी तो सूर्य पूर्व की बजाय पश्चिम से निकलेगा और आधा निकलने के बाद वह फिर पूर्व से निकलेगा। सफ्फारीनी रहिमहुल्लाह ने अपने अकीदा की किताब में इन निशानियों को क्रमबद्ध किया है। मज्मूउल फतावा (2/प्रश्न संख्या : 137)

☞ **बौद्ध धर्म में प्रलय :-** बौद्ध धर्म की तिब्बत परंपरा के मुताबिक जब दुनिया से सभी धर्म और सभी जाति के लोग खत्म हो जाएंगे तो उसके करीबन 4600 वर्षों बाद प्रलय आएगी. क्षितिज में एक-एक कर लगभग 6 और सूर्य आएंगे जिसके बाद एक आग के गोले की तरह दुनिया का विनाश होगा। हालांकि त्रिपिटक आदि बौद्ध धर्मग्रंथों में इसका जिक्र नहीं मिलता है।

☞ **पारसी धर्म में प्रलय :-** पारसी धर्म के अनुसार प्रलय आने से पहले दुनिया बिल्कुल पवित्र हो जाएगी। साथ ही प्रलय आने से पहले आखिरी बार ईश्वर और शैतान का आमना सामना होगा, जिसमें ईश्वर विजयी होंगे। इसके बाद ईश्वर दुनिया का एक बार फिर से उसी तरह निर्माण करेगें जैसे दुनिया बनाई गई थी।-जेंद अवेस्ता

☞ **यहूदी धर्म में प्रलय :-** यहूदी धर्म में माना जाता है कि मौत के बाद मरने वाले व्यक्ति की आत्मा ईश्वर के पास चली जाती है। कयामत यानी प्रलय के दिन ईश्वर सभी मृत लोगों के शरीर को नए सिरे से बनाएंगे, जिनको ईश्वर के सामने खड़े होकर अपने-अपने कर्मों की सजा दी जाएगी। यहूदी मान्यता के अनुसार भी अंत के समय मसीहा (मूसा) लौटेगा।-तनख। ●

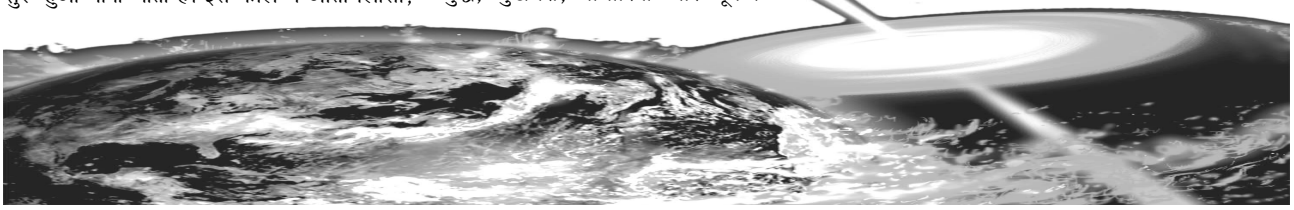

जगन्नाथ धाम यहाँ नहीं, वहाँ क्यों?

● प्रो० रामजीवन साहू

महाभारत युद्ध में पांडवों की 7 अक्षौहिणी और कौरव की 11 अक्षौहिणी सेना ने 18 दिनों तक भयंकर रक्तपात किया। एक अक्षौहिणी में 21,870 रथ, 21,870हाथी, 65,610घुड़सवार एवं 1,09,350 पैदल सैनिक होते थे। 18 अक्षौहिणी में से मात्र 18 योद्धा ही महाभारत युद्ध के पश्चात बचे। पांडव पक्ष के श्रीकृष्ण, युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, सहदेव, नकुल, युयुत्सु, उत्तर, शंख, श्वेत, विराट, इरावन, द्रुपद, दृष्टिद्युम और शिखंडी एवं कौरव पक्ष के अश्वत्थामा, कृपाचार्य और कृतवर्मा जैसे योद्धा ही बच गए थे। गंधारी 99 पुत्रों की वीरगति पाने की ज्वाला को बर्दाश्त न कर पाने के कारण वह बहुत क्रोधित हुई और उसने कृष्ण को देखते ही श्राप दी कि जिस प्रकार कुरुवंश का नाश हो गया एवं मैं पुत्र वियोग से तड़प रही हूँ। उसी प्रकार तुम्हारे यदुवंश का भी 36 वर्षों के बाद नाश हो जाएगा और तुम्हारी मृत्यु भी 36 वर्षों के बाद एक शिकारी के वाण से होगी। 36 वर्ष आते–आते कृष्ण को गांधारी के श्राप का आभास दिखाई पड़ने लगा। फलतः वे सोमनाथ मंदिर से मात्र 7 किलोमीटर की दूरी पर भालका नामक स्थान पर एक पीपल वृक्ष के नीचे तपस्या करने लगे। वे जब तपस्या में लीन थे, तभी जरा नामक एक शिकारी ने श्रीकृष्ण के पैर को हिरण की आंख समझकर बाण चला दिया। जब वह करीब आया तो देखा कि बाण हिरण को नहीं बल्कि श्रीकृष्ण की बांये पैर में लगी है। यह देखकर शिकारी बहुत विचलित हुआ और विलाप करने लगा, तभी श्रीकृष्ण ने जरा से कहा कि हे वत्स ! यह परमात्मा की लीला है। त्रेता युग में तुम बाली था और मैं श्रीराम। उस युग में मैंने तुम्हें छिपकर बाण से मारा था। इस द्वापर युग में तुम बाली हो और मैं श्रीकृष्ण। इसलिए तुमने मुझे मारा है। मामला बराबर हो गया। अब चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है आज से 5241 वर्ष पूर्व मात्र 119 वर्ष की आयु में श्रीकृष्ण परलोक सिधार गए और द्वापर युग का अंत हो गया। श्रीकृष्ण की मृत्यु के पश्चात पांडवों ने उनका दाह संस्कार त्रिवेणी घाट यानी (हिरना, कपिला और सरस्वती) के तट पर किया। बहुत प्रयास करने के बाद भी श्रीकृष्ण का नाभि कमल नहीं जल सका। अर्जुन लाचार होकर उस अर्धदग्ध शरीर को नदी में विसर्जित कर दिया।

धीरे–धीरे वह अर्धदग्ध शरीर जल प्रवाह के साथ पुरी के समुद्र में आ गया। शबर राजा विश्वावसु एक दिन समुद्र के पास से गुजर रहा था। तभी उसने समुद्र में एक विराट ज्योति पिण्ड को देखा। इसे देखकर वह बहुत आश्चर्यचकित हुआ और उसने निकट से देखने के ख्याल से उन्होंने भगवान की स्तुति करने लगा। सच्चे मन की प्रार्थना भगवान तुरंत सुन लेते हैं, इसलिए वह ज्योतिपुंज धीरे–धीरे समुद्र के किनारे आ गया। उसने उस विग्रह (ज्योति पिण्ड) को पहले प्रणाम किया। फिर उसे चुपचाप उठाकर नीलकंदर पहाड़ के गुफा में स्थापित कर दिया। वह अब प्रतिदिन उसकी पूजा करने लगा। पुरी के पास ही मालवा नाम का एक देश था। इंद्रद्युमन वहाँ का राजा था। एक दिन उसके मन में भगवान विष्णु की पूजा करने की इच्छा जागश्त हुई। अतः उसने विष्णु की प्रतिमा प्राप्ति के लिए चारों दिशाओं में चार दूत भेजें। कुछ दिनों के बाद तीन दूत खाली हाथ वापस आ गया लेकिन चौथा दूत विद्यापति नामक ब्राह्मण पूर्व की ओर गया। चलते–चलते वह उसी शबर राजा विश्वावसु के राज दरबार में पहुंच गया। जिसने उस ज्योतिपुंज को नीलकंदर के गुफा में स्थापित किया था। जिस समय विद्यापति वहाँ पहुंचा उसमें राजा वहाँ नहीं थे। वहाँ उनकी इकलौती पुत्री ललिता थी उसने पिताजी के बारे में सारी घटना बता दी वह बोली पिताजी प्रातः जंगल जाते हैं और शाम को घर लौटते हैं। वे कहाँ जाते हैं और क्या करते हैं वे किसी को नहीं बताते हैं।

विद्यापति को यह आभास हो गया कि राजा हमको भगवान का दर्शन नहीं कराएंगे इसलिए उसने एक उपाय सोचा। उसने ललिता से विवाह करने का प्रस्ताव रखा। ललिता ने अपने पिता की सहमति से विद्यापति के साथ विवाह के बंधन में बंध गई। कुछ दिनों के बाद उसने नीलमाधव जी के दर्शन का प्रस्ताव ललिता के सामने रखा। ललिता ने इस प्रस्ताव को अपने पिताजी के सामने रखी। पिताजी पहले तो तैयार नहीं हुए लेकिन दामाद समझकर वे तैयार हो गए लेकिन उसमें एक शर्त थी कि उसको नीलमाधव जी का दर्शन कराएंगे लेकिन रास्ता नहीं बताएंगे जब विद्यापति जाने लगा तो उसकी आंखों में पट्टी बांध दिया फिर ललिता ने उसके हाथ में सरसों की एक पोटली दी और बोली कि जाते समय मार्ग के दोनों तरफ थोड़ा–थोड़ा सरसों गिराते जाना इससे कुछ दिनों के बाद दोनों तरफ पौधे उग आएंगे और तुम्हें वहाँ की रास्ता की जानकारी हो जाएगी। शबर राजा विश्वावसु नीलमाधव का दर्शन कराकर संध्या समय घर वापस आ गए। विद्यापति वहाँ कुछ दिन तक रहा। उसके बाद अपना देश शबर आ गया। शबर आने के बाद वह सबसे पहले मालवा के लिए प्रस्थान किया और वहाँ के राजा इंद्रद्युमन को इन सारी घटनाओं की जानकारी दी। राजा बहुत प्रसन्न हुए और दूसरे ही दिन एक सेना लेकर उस गुफा तक पहुंच गए। राजा के घमंड के कारण नीलमाधवजी वहाँ से अंतर्ध्यान हो गए। ये लोग जब गुफा में प्रवेश किए तो वहाँ कुछ दिखाई नहीं पड़ी। राजा फिर बहुत चिंतित हो गए इसी बीच एक आकाशवाणी हुई कि राजन चिंता मत करो वहाँ एक मंदिर बनवाओ जब मंदिर बनकर तैयार हो जाएगा तब तुम जब चाहोगे मुझे पाओगे। मंदिर बनने लगा और बनकर तैयार हो गया तभी राजा को स्वप्नादेश आया कि बाँकीमोहान के पास सागर में जो दारूब्रह्म तैर रहा

है, उसे जल्दी से उठा कर लाओ। उससे विग्रह (मूर्ति) बनाने का काम करो। राजा इंद्रद्युमन और विश्वासवसु दोनों ने मिलकर दारूब्रह्म गुंडीचा मंदिर में रखा। उसके बाद कोयल बैंकुंठ में दारूब्रह्म को विग्रह बनाने के लिए लाया गया। विग्रह (मूर्ति) बनाने के लिए कारीगर लगाया गया। परंतु वह लकड़ी किसी कारीगर से कटता ही नहीं था। एक दिन बढ़ई के वेश में भगवान विश्वकर्मा वहाँ आए उन्होंने कहा मैं मूर्ति बना दूँगा। लेकिन एक शर्त है जिस कक्ष में मैं काम करूँगा वह कक्ष 21 दिनों तक कोई नहीं खोलेगा। राजा इस शर्त को स्वीकार कर लिये। मूर्ति बनना प्रारंभ हो गया। प्रतिदिन काटने और सिलने की आवाज रानी को सुनाई पड़ती थी। 14 में दिन आवाज नहीं आ रही थी। रानी राजा को बताएं कि आज किसी तरह की आवाज नहीं आ रही है लगता है वह कारीगर मर गया है। यह सोचकर राजा ने दरवाजा खोल दिया खोलने के बाद वहाँ से बढ़ई अंतर्ध्यान हो गया था और मूर्तियाँ अधूरी रह गईं। राजा फिर अब बहुत चिंतित रहने लगा। तभी राजा को स्वप्न आया कि अब इसी अर्द्धनिर्मित विग्रहों को स्थापित कर पूजा–अर्चना प्रारंभ करो। आषाढ़ शुक्ल पक्ष द्वितीया को विधिवत् भगवान जगन्नाथ, बहन सुभद्रा और अग्रज बलभद्र के विग्रहों की पूजा अर्चना शुरू हो गई। आज लाखों लोग समस्त भारत से आकर पूजा अर्चना करते हैं। संपूर्ण भारत में आषाढ़ शुक्ल पक्ष द्वितीय को रथ यात्रा निकाली जाती है इस रथयात्रा में शामिल होकर लोग अपने आप को धन्य मानते हैं। आज भी उस मूर्ति में हाथ पैर नहीं है। विग्रह नीम की लकड़ियों से बनाई जाती है इसलिए प्रति 12 वर्ष या 19 वर्ष अर्थात जिस मलमास वर्ष में आषाढ़ दो बार आता है उसी वर्ष नए विग्रह स्थापित किए जाते हैं और पुराने को विसर्जित किया जाता है। इसे नवकलेवर कहते हैं।

जगन्नाथ धाम भारत के उड़ीसा प्रांत के अंतर्गत हिंद महासागर से मात्र 2 किलोमीटर की दूरी पर पुरी में है। भगवान विष्णु के चार धाम है भगवान द्वारका में शयन करते हैं, रामेश्वरम में स्नान करते हैं, जगन्नाथ धाम में प्रसाद ग्रहण करते हैं और बद्रीनारायण में तपस्या करते हैं। वर्तमान मंदिर का निर्माण का प्रारंभ तत्कालीन राजा अनंतवर्मन विक्रम संवत 1235 में प्रारंभ किए थे और विक्रम संवत 1257 में उनका पुत्र नरपति आनंद भीमदेव ने मंदिर को पूर्ण किया यह मंदिर 170 फीट ऊंचा है इस मंदिर के अंदर मोबाइल और सामान ले जाना वर्जित है। मंदिर की ओर से मोबाइल और सामान रखने की अलग–अलग व्यवस्था है। साथ ही यह प्रशंसनीय व्यवस्था निःशुल्क है। विग्रह का अर्थ होता है मूर्ति के देवता की पूजा करना। यह सभी जानकारी भगवान जगन्नाथ के दर्शन से प्राप्त हुई है और कुछ लोगों द्वारा बताए जाने पर ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त हुई है। ●

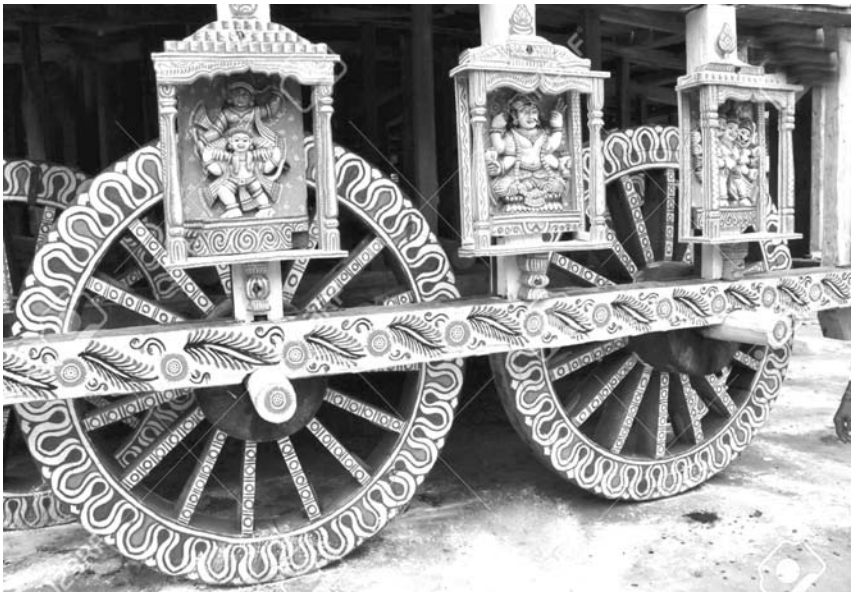

कानूनी सलाह
शिवानंद गिरि
(अधिवक्ता)
Ph.- 9308454485
7004408851
E-mail :-
shivanandgiri5@gmail.com

✯ कोई भी सिविल मुकदमा किस न्यायालय में दायर कर सकते हैं?

किसी भी न्यायालय में मुकदमे की भीड़ ना बढ़े इसलिए न्यायालयों को कई भागों में बांटा गया है तथा उन सब का क्षेत्राधिकार निश्चित किया गया है। कोई भी न्यायालय ना तो अपने क्षेत्राधिकार के बाहर कार्य कर सकता है और ना ही एक दूसरे के क्षेत्राधिकार में हस्तक्षेप कर सकता है। इसी बात को सुनिश्चित करने के लिए सीपीसी की धारा 15 से 20 तक में वाद दायर किए जाने के स्थान के बारे में प्रावधान किया गया है। सीपीसी की धारा 15 से 20 में न्यायालयों का उल्लेख किया गया है जिनमें कोई सिविल वाद लाया जा सकता है सीपीसी की धारा 15 के अनुसार प्रत्येक वाद इसके विचारण के लिए सक्षम सबसे निम्न श्रेणी के न्यायालय में दायर किया जाना चाहिए इसी प्रकार इस धारा के प्रावधान के अनुसार 25000 तक के सभी सिविल वाद मुंसिफ के न्यायालय में फाइल किया जाना चाहिए सीपीसी की धारा 16 के अनुसार वाह-वाह अलावा जाना चाहिए जहां वार्ड की विषय वस्तु अवस्थित हो इस धारा के अंतर्गत अचल संपत्ति संबंधी विभिन्न प्रकार के मांगों में वाद दायर किए जाने के लिए दो प्रकार के स्थान निश्चित किए गए हैं प्रथम जहां संपत्ति अवस्थित हो तथा दूसरा हो जहां प्रतिवादी निवास कारोबार या लाभ के लिए स्वयं कार्यकर्ता हो न्यायालय ऐसे किसी संपत्ति के संबंध में कोई अनुतोष प्रदान नहीं कर सकता है जिसके स्थानीय क्षेत्राधिकार में अचल संपत्ति अवस्थित ना हो सीपीसी की धारा 17 के अनुसार जब संपत्ति एक से अधिक न्यायालय के क्षेत्राधिकार में पढ़ती हो तो वैसी अवस्था में वाद उनमें से किसी एक न्यायालय में जिस के क्षेत्राधिकार के अंतर्गत उस संपत्ति का कोई भाग अवस्थित हो दायर किया जा सकता है परंतु इसके लिए शर्त यह होता है कि संपूर्ण दावा ऐसे न्यायालय के द्वारा प्रसंगेय हो। सीपीसी की धारा अट्ठारह क्षेत्राधिकार संबंधी अनिश्चितता को दूर करती है इस धारा के अनुसार जहां किसी संपत्ति के संबंध में यह बात निश्चित नहीं होता है कि वह किस न्यायालय के क्षेत्राधिकार में है तो वैसी अवस्था में वाद उन न्यायालयों में से किसी भी न्यायालय में लाया जा सकता है सीपीसी की धारा 19 के अनुसार किसी व्यक्ति के प्रति या चल संपत्ति के प्रति किए अपकार के लिए वाद यदि दोस्त एक न्यायालय के क्षेत्राधिकार के अंतर्गत किया गया हो और प्रतिवादी दूसरे न्यायालय के क्षेत्राधिकार के अंतर्गत निवास करता हो कारोबार करता हो या लाभ के लिए स्वयं कार्यकर्ता हो या वादी अपनी इच्छा अनुसार उपर्युक्त दोनों न्यायालयों में से किसी भी न्यायालय में वाद दायर कर सकता है सीपीसी की धारा 20 के अनुसार कोई वाद ऐसे किसी न्यायालय में लाया जा सकता है जिसके क्षेत्राधिकार की स्थानीय सीमाओं में प्रतिवादी निवास करता हो या जहा वाद का कारण पूर्णतया अंश से उत्पन्न हुआ हो।

✯ मेरी पत्नी मेरे बेटा और बेटी के साथ पिछले 1 साल से अपने मायके में रह रही है और जब मैं अपनी पत्नी को विदा कराने ससुराल जाता हूं तो मेरी पत्नी को सास, ससुर, साला साली एवं ससुराल के कुछ अन्य व्यक्ति उल्टा-सीधा समझा कर भड़का देते हैं इसलिए मेरी पत्नी मेरे साथ मेरे घर नहीं आना चाहती है। वह मायके में ही रहना चाहती है तथा सारा खर्च मुझसे वही मंगवाती है मुझे 1 वर्ष से पत्नी का कोई भी सुख नहीं मिला है जिसकी वजह से मेरी शादीशुदा जिंदगी बर्बादी की ओर जा रही है। कुछ लोग मुझे सलाह दिए हैं कि तुम तलाक का मुकदमा फाइल करो परंतु मैं तलाक नहीं चाहता हूं। कृपया करके इसका कोई समाधान बताएं।

आप हिंदू विवाह अधिनियम 1955 की धारा 9 के तहत प्रधान परिवार न्यायालय में दांपत्य जीवन की पुनर्स्थापना का वाद लाएं इस वाद को करने पर न्यायालय स्वयं आपकी पत्नी को नोटिस भेजकर उसे बुलाकर पूछताछ करेगी कि आप क्यों अपने पति के घर नहीं जाना चाहते हैं तथा आपके एवं आपकी पत्नी के साथ-साथ रहने के लिए समझ आएगी तथा सुलह समझौता करेगी।

✯ संगेज्ञ एवं असंज्ञेय अपराध किस प्रकार के अपराध होते हैं एवं उनमे मूलभूत रूप से क्या अंतर होता है ?

अपराधों की प्रकृति के अनुसार उन को दो भागों में बांटा गया है प्रथम संज्ञेय अपराध एवं द्वितीय असंज्ञेय अपराध। अपराधों का यह वर्गीकरण उनकी गंभीरता एवं सामान्य प्रकृति के आधार पर किया गया है ऐसे अपराध जो संगीन एवं गंभीर प्रकृति के होते हैं संगेय अपराध कहे जाते हैं एवं जो सामान्य प्रकृति के होते हैं वे असंगेय अपराध समझे जाते हैं। दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 2(ग) के अनुसार संगेय अपराध के मामलों से अभिप्राय ऐसे अपराध एवं मामलों से होता है जिसमें पुलिस अधिकारी प्रथम अनुसूची के अनुसार या उस समय लागू किसी विधि के अनुसार वारंट के बिना गिरफ्तार कर सकता है। अपराध संज्ञेय है या असंज्ञेय यह दंड प्रक्रिया संहिता की प्रथम अनुसूची के स्तंभ 4 में दिया गया है। दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 154 के अंतर्गत पुलिस अधिकारी मामले की सूचना मिलने पर तुरंत उसका अन्वेषण शुरू कर सकता है जब की धारा 155 के अंतर्गत अपराध के बारे में सूचना मिलने पर पुलिस अधिकारी उस का अन्वेषण मजिस्ट्रेट द्वारा आदेश मिलने पर ही कर सकता है दंड प्रक्रिया संहिता की प्रथम अनुसूची दो में अन्य विधियों के विरुद्ध अपराधियों का वर्गीकरण है जिसके अनुसार पुलिस अधिकारी वारंट के बिना केवल उन अपराधों में गिरफ्तारी कर सकता है जिनमें अपराध 3 वर्ष और उससे अधिक कारावास से दडनीय है यदि किसी मामले में एक या अधिक अपराध संज्ञेय हो तो वह संज्ञेय अपराध माना जाता है कोई केस असंज्ञेय केवल तभी हो सकता है जब उस केस में का प्रत्येक अपराध असंज्ञेय अपराध हो। संज्ञेय और असंज्ञेय अपराधों में मूल अंतर निम्नलिखित प्रकार से है संज्ञेय अपराध गंभीर एवं संगीन प्रकृति के होते हैं जबकि अ संज्ञेय अपराध सामान्य प्रकृति के होते हैं संगेय अपराधों में पुलिस बिना वारंट के गिरफ्तार कर सकती है जबकि अंसज्ञेय मामलों में पुलिस बिना वारंट के मुदालय को गिरफ्तार नहीं कर सकती है। संगेय मामलों में पुलिस अधिकारी बिना किसी आदेश के अन्वेषण शुरू कर सकता है जबकि असगेय मामलों में बिना आदेश के अन्वेषण नहीं किया जा सकता है संगेय मामलों में कार्यवाही करने के लिए परिवाद की आवश्यकता नहीं होती है जबकि असंज्ञेय मामले में कार्यवाही का प्रारंभ परिवाद से होता है।

रामायण बनाम महाभारत, दो ग्रंथों की भिन्नता और समानताएं

● डॉ० छाया मंगल मिश्र
(स्वतंत्र पत्रकार)

'जा की रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखि तिन तैसी' जिसने भी जिस भावना धार्मिक ग्रंथों को पढ़ा वैसा ही उसे नजर आया। क्या कारण है कि रामायण को लोग पूजते हैं और कुछ लोग महाभारत को घरों में रखना भी वर्जित मानते हैं। रामायण प्रेम, त्याग, कर्तव्य, समभाव और आज्ञापालन जैसे कई आदर्श मूल्यों के साथ-साथ जोड़ने की प्रवृति सिखाती है। जबकि महाभारत इससे बिल्कुल उलट है। राग, द्वेष, छल-कपट, राजनीति नैतिकता के ह्रास व बड़ों की अवहेलना के साथ उद्दंडता परिवार तोड़ने और अति महत्वाकांक्षा, अहंकार का चरमोत्कर्ष दिखाती है, लेकिन अंत में महाभारत में भी न्याय व सत्य की ही विजय दिखाती है। जबकि दोनों में विष्णु अवतार मौजूद हैं और अधर्म पर धर्म की विजय गाथा है।

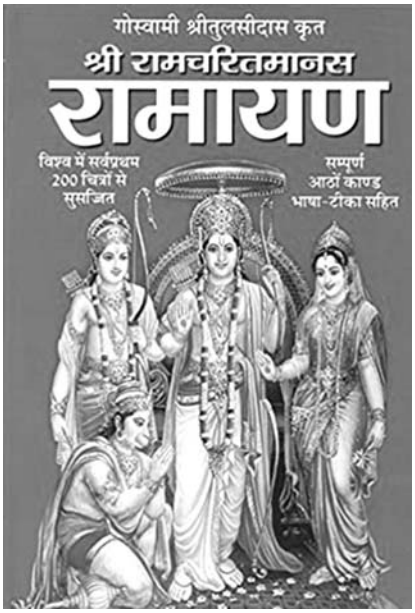

रामायण व महाभारत दोनों ही भारतीयों के जीवन, नैतिक विचारों और धार्मिक मान्यताओं को प्रभावित करते हैं। अंतर यह है कि रामायण प्रधानरूप से अलंकृत काव्य के रूप में प्रस्तुत इतिहास है जबकि महाभारत एक शुद्ध इतिहास ग्रंथ है। कहा जाता है भगवान शंकर ने सर्वप्रथम सौ करोड़ श्लोकों में राम भगवान के चरित्र का वर्णन किया था-"चरितं रघुनाथस्य शतकोटि प्रविस्तरं", जबकि महा भारत मूल रूप से "जय संहिता थी"। महाभारत के पहले ही श्लोक में "ततो जयमुदीरयेत" का उल्लेख होता है। जब तुलसीदास जी ने रामचरित मानस लिखी तो उन्होंने इसके संदर्भों का उल्लेख करते हुए "नाना पुराण निगमागम सम्मतं यत रामायणे निगदितं क्वचितअन्यतोपि" अर्थात इस ग्रंथ में अनेक प्रकार के पुराणों, रामायण आदि का संदर्भ लिया गया है ऐसा उल्लेख किया है। महाभारत में इस प्रकार के संदर्भ घटनाओं के रूप में बीच-बीच में मिलते हैं पुस्तकों के रूप में नहीं। दोनों का प्रारंभ राज्यसभा के दृश्य से होता है दोनों में ही सत्य की असत्य पर विजय दिखाई गई है। कुछ समय तक चाहे असत्य का उत्कर्ष दिखाई पड़े परंतु अन्ततोगत्वा सत्य की ही विजय होती है। दोनों ही काव्य अपने-अपने रचयिताओं के शिष्यों द्वारा यज्ञ के शुभ अवसर पर सुनाए गए हैं। दोनों काव्यों में चिरकाल तक आदान-प्रदान होता रहा है और समय के साथ-साथ इन दोनों काव्यों में परिवर्धन एवं परिशोधन होता रहा है। वेदों की भांति प्राकृतिक शक्तियों की उपासना समाप्त हो गई थी। वरुण अश्विन्, आदित्य, उषस आदि वैदिक देवताओं का अस्तित्व समाप्त हो गया था। ब्रह्मा, विष्णु, शिव, दुर्गा, गणेश आदि की उपासना की जाती थी। मंदिरों का निर्माण किया जाता था। दोनों ग्रंथों में सीता और द्रौपदी नामक नायिकाओं का जन्म भी अलौकिक प्रकार से हुआ है, सीता का पृथ्वी से और द्रौपदी का अग्निकुण्ड से। दोनों ग्रंथों में अयोध्या राजकुमारों का जन्म व कौरव-पांडवों का जन्म भी सामान्य नहीं है। द्रोपदी व सीता के पास क्षुधा-तृप्ति की दिव्य शक्ति थी, द्रोपदी के पास अक्षय पात्र और सीता का इंद्र द्वारा दी हुई खीर का अशोकवाटिका में सेवन। दोनों का प्रारंभ राज्यसभा के दृश्य से होता है। सीतास्वयंवर एवं द्रौपदी स्वयंवर में राम व अर्जन द्वारा धनुर्विद्या का

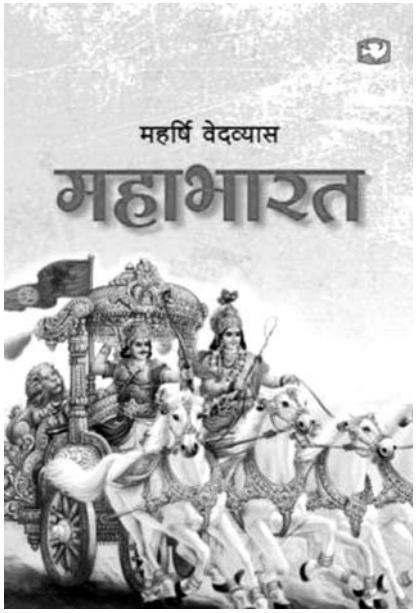

प्रदर्शन करने में, रावण द्वारा सीताहरण व द्रौपदी का जयद्रथ द्वारा हरण होने में, राम तथा पाण्डवों के वनवास में सीता व द्रौपदी के कारण महायुद्ध होने में, देवताओं द्वारा प्रदत्त दिव्यास्त्र प्राप्त करने में राम को सुग्रीव से तथा पाण्डवों की मत्स्यनरेश विराट से मित्रता होने जैसी बातों की समानता मिलती है। रामायण में एक ही नायक है और वह है राम, लेकिन महाभारत में मुख्य पात्रों के बीच में किसी एक का नायक के रूप में चयन करना कठिन है। रामायण में धर्म की प्रधानता है जबकि महाभारत में शौर्य और कर्म प्रधान हैं। रामायण में राम का रावण के साथ युद्ध करना एक नियति थी जबकि महाभारत में कौरवों व पाण्डवों का युद्ध पारस्परिक द्वेष और ईर्ष्या के कारण ही हुआ। रामायण में सदाचार और नैतिकता का प्राधान्य है, जबकि महाभारत में राजनीति और कूटनीति का प्रधान है। रामायण में वर्ण व्यवस्था कठोर थी जबकि महाभारत के समय तक इसमें शिथिलता आ गई थी। रामायण में जब हनुमान सीता को अपनी पीठ पर बिठाकर उसे राम के पास ले जाने का प्रस्ताव रखते हैं, तो सीता परपुरुष-स्पर्श के भय से उसे अस्वीकार कर देती है। सीता को अपनी चारित्रिक शुद्धि प्रमाणित करने के लिए अग्नि-परीक्षा देनी पड़ती है। किंतु महाभारत में जयद्रथ द्वारा द्रौपदी के अपहरण के पश्चात् उसे कोई अग्नि परीक्षा नहीं देनी पड़ती। द्रौपदी पांच पतियों वाली है। अग्नि परीक्षा का चलन महाभारत में नहीं था। रामायण महाभारत से पहले की रचना है। कारण यह है कि रामायण, महाभारत के पात्रों से अनभिज्ञ थे लेकिन महाभारत के रामोपाख्यान में रामकथा का वर्णन है। रामायण महाभारत की अपेक्षा बहुत ही लघु है भाषा और शैली की दृष्टि से भी दोनों में साम्य है। कुछ उपमाओं, लोकोक्तियों व श्लोकों के अर्थ भी एक समान हैं। दोनों काव्यों में शब्दावली एक जैसी है, उदाहरणार्थ श नोत्कंठा कर्तुमर्हस ' दोनों काव्यों में पाया जाता है। रामायण की कथा सुश्लिष्ट एवं सुसंबद्ध है। किंतु महाभारत की कथा इतनी सुश्लिष्ट एवं सुसंबद्ध नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि महाभारत में विभिन्न विषय एक साथ रख दिए गए हों। रामायण एक ही कवि की रचना है, जबकि महाभारत पर अनेक कवियों की छाप है। व्यास, वैशम्पायन व सौति उग्रश्रवा यह तीन तो मुख्य रूप से वक्ता हैं ही। इसीलिए रामायण की शैली में एकरूपता है और महाभारत की शैली में भिन्नता. रामायण की भाषा कलात्मक, परिष्कृत, अलंकृत है, जबकि महाभारत की भाषा प्रभावशाली एवं ओजयुक्त है। रामायण में आर्यसभ्यता अपने

विशुद्ध रूप में मिलती है, जबकि महाभारत के समय में म्लेच्छों का आगमन प्रारंभ हो गया था। लाक्षागृह बनाने वाला पुरोचन म्लेच्छ था। धृतराष्ट्र, पाण्डु और विदुर की उत्पत्ति नियोगविधि द्वारा हुई थी। दुर्योधन भरी सभा में द्रौपदी का अपमान करता है और गुरुजन उसे रोक नहीं पाते। दोनों ग्रंथों को नैतिकता और वैवाहिक विचारों में काफी मतभेद है। धार्मिक विश्वास और नैतिक नियमों में भी दोनों ग्रंथों में पर्याप्त अंतर है। युद्ध कला रामायण के समय में इतनी विकसित

नहीं थी, जितनी महाभारत के समय में हो चुकी थी।क्रौंचव्यूह, पद्मव्यूह, चक्रव्यूह, मकरव्यूह आदि सैन्य संरचनाओं से रामायण परिचित नहीं थी। भौगोलिक दृष्टि से भी रामायण और महाभारत में पर्याप्त अंतर है।रामायण में दक्षिण भारत को एक विशाल अरण्यानी की तरह चित्रित किया गया है, जहां वानर, भालू और रीछ जैसे हिंसक पशु तथा विराध व कबंध जैसे राक्षस रहते थे। युद्ध के विषय में भी महाभारत के समय में नैतिक आदर्शों का ह्रास हो रहा था. रामायण में राम घायल रावण पर प्रहार नहीं करते, किंतु महाभारत में युद्ध के समस्त नियमों का उल्लंघन करते हुए सात महारथी, जिनमें स्वयं युद्ध की शिक्षा देने वाले द्रोण भी शामिल हैं, निःशस्त्र अभिमन्यु पर एक साथ प्रहार करते हैं। इसी प्रकार द्रोण और कर्ण की हत्या कर दी जाती है। अश्वत्थामा सोते हुए पांच पाण्डवों के पांचों पुत्रों की हत्या कर देता है। दोनों ही ग्रंथ दुःखान्त हैं रामायण में लक्ष्मण मरणासन्न रावण से तथा महाभारत में युधिष्ठिर शरशय्या पर लेटे हुए भीष्म से नीति विषयक उपदेश प्राप्त करते हैं। राम व युधिष्ठिर दोनों का ही युद्ध के उपरांत राज्याभिषेक होता है। दोनों ही अश्वमेध यज्ञ भी करते हैं। इस प्रकार रामायण की सभ्यता अपेक्षाकृत अधिक शिष्ट सुसंस्कृत एवं आदर्शपूर्ण है। उत्तरोत्तर ह्रास होना स्वाभाविक भी है क्योंकि रामायण त्रेतायुग की सभ्यता को प्रस्तुत करती है तथा महाभारत द्वापर युग का प्रतिनिधित्व करती है। आज जब देश भर में कोरोना लॉक डाउन जीवन गुजरना भले ही आपकी मजबूरी हो पर रामायण-महाभारत का प्रसारण आपको एक बार फिर इन सभी बातों से आपका आध्यात्म विकसित करेगा। दोनों ग्रंथों के प्रति एक नया नजरिया प्रस्तुत करेगा। उपरोक्त के आलावा कई बातें हैं जो नए रूप में सामने आएंगी...बार ...बार...कई बार. क्योंकि इन्हीं ग्रंथों में हमारी जड़ें हैं. यही ग्रंथ हमारे जीवन का आधार भी हैं और हमारी पहचान भी.....आइए, सीख हम बीते युगों से नए युग का करें स्वागत। ●

सामाजिक एवं बौद्धिक क्षेत्र में रोजगार का सुनहरा अवसर

केवल सच सामाजिक संस्थान और श्रुति कम्युनिकेशन ट्रस्ट अपने भविष्य के आगामी योजनाओं में सामाजिक एवं बौद्धिक सुधार के क्षेत्र में पुर्नजागरण के शंखनाद हेतु बिहार और झारखण्ड राज्य के मेधावी/सक्षम/योग्य/दक्ष एवं कर्मठ नवयुवकों को अपने टीम में वैतनिक/अवैतनिक रूप से जुड़ने के लिए अवसर प्रदान करना चाहती है। उक्त स्वयंसेवी संस्थान मुख्य रूप से 'अपना घर' (वृद्धाश्रम आवास योजना), परिवार परामर्श केन्द्र, शिक्षा का संक्षिप्त पाठ्यक्रम (मूल रूप से निर्धन/बेसहारा लड़कियों हेतु) और विभिन्न मुद्दों पर जागरूकता कार्यक्रम पर ध्यान केन्द्रीत करना चाहती है। इन कार्यक्रमों से जुड़कर नवयुवक सामाजिक क्षेत्र में अपनी हिस्सेदारी सुनिश्चित कर सकते हैं। उक्त संगठन इसके लिए टीम वर्क के तहत कार्य करना चाहती है, जिसके अंतर्गत राष्ट्रीय समन्वयक के अधीन वार्ड/ पंचायत/ प्रखण्ड/ अनुमण्डल/जिला समन्वयकों की नियुक्ति भी करना चाहती है। इस संस्थान से जुड़कर इच्छुक नवयुवक उक्त पदों पर अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर सकते हैं।

संस्थान

shruti कम्युनिकेशन ट्रस्ट

श्रुति कम्युनिकेशन ट्रस्ट

भारतीय ट्रस्ट अधिनियम 1882 के तहत संचालित

निबंधन संख्या : 22333/2008, आयकर निबंधित : 12 ए ए/2012-13/2549-52 | 80 जी (5)/तक०/2013-14/1073

केवल सच सामाजिक संस्थान

भारतीय सोसायटी एक्ट 21, 1860 के तहत निबंधित

निबंधन संख्या : 1141 (2009-10), आयकर निबंधित : 12 ए ए/2012-13/2505-8 | 80 जी (5)/तक०/2013-14/1060-63

KEWAL SACH SAMAJIK SANSTHAN

www.shruticommunicationtrust.org

www.ks3.org.in

Regd. Office:- East Ashok Nagar, House No.-28/14, Road No.-14, kankarbagh, Patna- 8000 20 (Bihar)
Jharkhand State Office:- **Riya Plaza, Flat No.-303, Kokar Chowk, Ranchi**
Mob.- 9431073769

केवल सच सामाजिक संस्थान

भारतीय सोसायटी एक्ट 21, 1860 के तहत निबंधित

पूर्वी अशोक नगर, रोड नं.-14, कंकड़बाग,

पटना-800020,

सम्पर्क संख्या :- 09431073769, 9955077308, 9308727077

ई-मेल :-kewalsachsamajiksansthan33@gmail.com

निबंधन संख्या : 1141 (2009-10), आयकर निबंधित : 12 ए ए/2012-13/2505-8 | 80 जी (5)/तक०/2013-14/1060-63

शीघ्र अपने प्रदेश में

अपना घर

बेसहारों का बने सहारा। इसके लिए आपका अनुदान आवश्यक है।
आपका सहयोग कई जीवन को दिशा दे सकता है।
निश्चित सहयोग करें :-

केवल सच सामाजिक संस्थान

खाता संख्या (A/C No.)	-	0600010202404
बैंक (Bank Name)	-	युनाईटेड बैंक ऑफ इंडिया
आईएफएससी कोड (IFSC Code)	-	UTBIOKKB463
पैन नं. (Pan No.)	-	AAAAK9339D